डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव की रचनाएँ 4



डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव

जन्मतिथि: 15 सितंबर 1946

जन्म स्थान: विदिशा (म.प्र.)

प्रकाशित कृतियाँ

1. ट्यूबेक्टोमी एण्ड कास्टम (अंग्रेजी, 1980)
2. है प्यास अभी (गजल संग्रह)
3.सन्नाटा गहरा है, (गजल संग्रह)
4.आए न बालम (व्यंग्य संग्रह)
5.बाइज्जत बरी (व्यंग्य संग्रह)
6.हड़कंप (व्यंग्य संग्रह)
7.अखिलम, मधुरम (काव्य संग्रह)
8. प्रतिरोधक क्षमता (मेडिकल साइंस)
9. प्रति उत्तर(काव्य संग्रह)
10 मेरे सांई
11 गीता के औपनिषधिक आधार
12 देशी-विदेशी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेख प्रकाशित

सम्मान- पुरस्कारः विभिन्न शीर्ष स्तरीय संस्थाओं से पुरस्कृत एंव सम्मानित

सम्प्रति: 1.भूतपूर्व सदस्य: मानव अधिकार आयोग

2.सदस्य: किशोर न्यायपीठ,छिन्दवाडा

3. शल्य चिकित्सक,

4. सेवानिवृत्ति सीएमओ (मुख्य स्वास्थ्य एंव चिकित्सा अधिकारी)

1 संरक्षक - पत्रकारिता कोश मंच छिंदवाड़ा

2. उपाध्यक्ष - जिला रेडकास समिति सोसाइटी छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

3. आजीवन सदस्य इंडियन मेडिकल एसोसिएशन

4. मानव तंत्र मानव अधिकार आयोग
अन्य - स्वतंत्र लेखन राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में,
संपर्क - 171 नोनिया करबल, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
पिन 480001

मधुराधिप ते रखिलम् मधुरम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तू सुन्दरतम से सुन्दर है रविरन्शु दीप्त सम मुख मण्डल।
स्मित झिलमिल झिल तारे है, दन्त रवि में शशि मण्डल।।

उड़ती अलकें मुख मण्डल पर अठखेलीं करतीं हैं ऐसे।
घन मेघों के संग पूर्ण चन्द करता हो लुका छिपी जैसे।।

हैं निविड़ धनी तेवी अलकें, तेरा मुख कमल खिला दिनकर।
तू एक साथ दिन रात सुमुखि, तेरे स्वर गीतों के निर्झर।।

हो अन्धकार में दिव्य किरण, वीराने में एक जीवन हो
दिग्भ्रमित रात्रि को दिवा ज्ञान, निर्धन को आकस्मिक धन हो।।

तुम अचल, मुझे चंचल करती, तुम उदासीन एक दृष्टा हो।
मैं जगत गति हूँ क्रियाशील, स्पन्द रहित तुम सृष्टा हो।।

मैं कितना भी आगे दोड़ूं, तुम मेरे आगे चलती हो,
कि लक्ष्य भेदने से पहले, तुम मुझे लक्ष्य पर मिलती हो।।

है दन्त पंक्ति तो धवल कमल, हैं लाल कमल चेहरा सुन्दर।
है नील कमल सुन्दर आंखे, तू सरसिज का उपवन सुन्दर।।

ज्यों लाल कमल में नील कमल, यूं संयोजित छवि आंखो की।
तू अन्तरिक्ष में रांगोली, सुन्दर पुष्पों के पाखों की।।

तू अमृत निर्झर की उदगम, तू चलती है गिरि राज लिये।
तू मेघ सरित हिम पर्वत है, तू जल कि रूप अनेक प्रिये।।

इच्छा कर सृष्टि रचती हो, और अनुप्रविष्टि हो जाती हो।
विस्मृत कर खुद को सृष्टि पर तुम स्वयं मुग्ध हो जाती हो।।

तू चलती मन्द पवन सी है, द्युति तेरी है तपता कन्चन।
तेरा विस्तार प्रकृति सुन्दर, तू उस कृति का है संकोचन।।

तू है खग वृन्दों का कलख, तेरी विरूदावलि मन्द पवन।
घन गर्जन है ध्वनि शंखो की, रिम झिम वर्षा तेरा वन्दन।।

तू एक अनेक मुझे करती, खण्डित खण्डित हो जाता हूँ।
तू जब चिन्तन में आती है, अस्तित्व रहित हो जाता हूँ।।

तू क्षितिज और तू दृष्टि है, तू ही अनादि का उद्गम है।
तुझमें कई समय विचरते है, तीनों कालों का संगम है।।

तुम वायवीय संरचना हो, या हो संरचना मूर्तिमंत्रत।
तुम छाया, मिथक कल्पना हो, या विस्तारित सच दिगन्त।।

पत्तों से झिलमिल चन्द्रकिरण, मेघों से निःसृत किरण जाल।
तू है वसन्त की सुखद धूप, तू प्रखर धूप और ग्रीष्म काल।।

तुम जब नफरत पर आती हो तो शहर उजड़ने लगते है।
तेरे आवेगा लिंगन से हिम खण्ड पिघलने लगते है।।

तुम त्रिगुणमयी और गुणातीत, आकार सहित ओंकारा हो,।
हो मृग मरीचिका मरूथल में, मरूथल में जल की धारा हो।।

जन चित्रलिखित रह जाते है, जब पड़ती है तेरी दृष्टि।
तू उनमें सपने रचती है, ब्रहना से छिनती है सृष्टि।।

आभूषण तुझ से भूषित हैं, आलंकृत होते अलंकार।
झंकारित होते वाद्यवृन्द, साकारित होते निरंकार।।

तेरा स्मरण मधुर क्षण है, तू ईश्वर की कृति सुन्दरतम,।
मधु स्वर मधु यष्टि मधु निसर्ग, मधुराधिप ते रखिलम् मधुरम।।

फटे कपड़ों का युवराज

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

घने सन्नाटे में एक आवाज हँू मैं।
जिसे कोई नहीं सुनता है ऐसा साज हँू मैं,।।

रहा मैं खेलता, कन्चों से, गुल्ली डन्डियों से
फटे कपडे हैं मेरे, मगर एक युवराज हँू मैं

जहाँ बसते हों पत्थर बाज ऐसा स्वर्ग हँू मैं।
जहाँ घुसपेठिसे बसते हों ऐसा राज हँू मैं।।

जहाँ बस दूर तक खाली पड़ा आकाश फैला।
वहाॅ बस एक ही आवाज से नाराज हँू मैं।।

यहाँ बाहर से हैं, अंदर से भी बस दस्तकें हैं
मैं धक्के खा रहा हँू दौड़ता परवाज हँू मैं।।

तुझको दूर सितारों पर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बिगड़े चमन बहारों पर।
झपटीं खिजा नजारों पर।।
बहुत दूर तक जाना है।
तुझको दूर सितारों पर।।
बार बार अब मत फंसना।
अच्छे दिन के नारों पर।।
डोली की मंजिल निर्भर ।
चलते हुये कहारों पर ।।
संभल संभल कर चलना है ।
दो सांसों के तारों पर ।।
अगर समन्दर जाना हैं,।
वह न दिया के धारों पर।।
मेरी गजलें फैलीं है ।
बादल झील बहारों पर ।।
चमक दमक लाशों की है
दुनिया के बाजारों पर।।

बादल, झील, बहारों पर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

साहिल धोखा न दे दे, फिसलन बहुत किनारों पर।
चमक दमक लाशों की है, दुनिया के बाजारों पर।।

महलों की चैकीदारी, पत्थर झुका कर करते हैं।
तने हुये है महल सभी, मजलूमों, लाचारों पर।।

थक कर कैसे बैठ गया तुझे नजीरें बनना है।
वह दूर तक जाना है, तुझको दूर सितारों पर।।

अच्छे दिन के नारों पर तूने खुद को बेच दिया।
बार बार अब मत फंसना, अच्छे दिन के नारों पर।।

तू कहार है डोली का, डोली तेरी किस्मत है।
डोली की किस्मत निर्भर, चलते हुए कहारों पर।।

दो सांसो की गाड़ी पर, बैठी हुई जिन्दगी है।
संभल संभल कर चलना है, दो सांसो के तारों पर।।

नदियों की धारा बन तू और बाढ़ की धारा बन।
साहिल को मोहताज बना, अपनी बहती धारों पर।।

मेरी गजलें दिखती हैं, आसमान पर धरती पर।
फैली हैं तुमसे लेकर, बादल झील बहारों पर।।

हर राज

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मों कों ने दी दस्तकें
नाराज हो गये।
जिन्दगी भर के लिये
मोहताज हो गये।।
ताज अगर सिर पर रखा है
तो झुके के थोड़ा तो चलो।
अच्छे अच्छे अकड कर
वे ताज हो गये।।
कोई भूखा दर पे हो
इज्जत से खाना दीजिये।
जिनने बेइज्जत किया
बर्बाद हो गये।।
अभी तक तो कांपते थे
सामने मेरे सुनो !
कौन है अब पीठ पर
जांबाज हो गये।।
क्या इशारा कर दिया,
जो राज अपना खुल गया।
हमारे अब बहुत से
हम राज हो गये।।

सच्ची सोहबत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अमीरों को एक जन्नत जिंदगी।
गरीबो को एक जिल्लत जिन्दगी।।

शुरू से ईमान को चस्पा किया।
ले के आई कैसी किस्मत जिन्दगी।।

हर कदम पर कचहरी जाना पड़ा।
लगाती है कितने तोहमत जिन्दगी।।

एक दिन दो वक्त का खाना दिया।
उठायी क्यों इतनी जहमत जिन्दगी।।

कई चेहरे एक चेहरे पर लगे।
नहीं मिलती सच्ची सोहबत जिन्दगी।

उसकी रहमत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

किसी की थोड़ी सी हरकत जिन्दगी।
नहीं करती फिर मुरोव्वत जिन्दगी।।

अभी भी कुछ मुल्क में सुधरा नहीं।
बेईमानों को है जन्नत जिन्दगी।।

निकले घर से सड़क पर तो आ गये।
सड़क पर है एक दहशत जिन्दगी।।

नीव हिलती दरकती दीवार है।
रहने जिन्दा मांग मन्नत जिन्दगी।।

बच्चियाँ भी है हिफाजत से नहीं।
सब तरफ हैवानी हरकत जिन्दगी।।

बच गये जो आज से हालात से।
मान इसको उसकी रहमत जिन्दगी।।

बरकत जिन्दगी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

किसी की थोड़ी सी गफलत जिंदगी।
हमको कैदे-बा-मशक्कत जिंदगी।।

जिन्दगी एक कैद में एक कैद है।
कैद से ज्यादा है दहशत जिंदगी।।

डर से नफरत से, जमीं पर छाई है।
हर तरफ नफरत ही नफरत जिन्दगी।।

बना के फिर तोड़ता है रब अगर।
दुनिया तो, है कैसी हरकत जिंदगी।।

एक अन्जाना सफर अन्दर से हो।
जो बची वह लगे बरकत जिन्दगी।।

जन्नत या स्वर्ग की अवधारणा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कुरान शरीफ के अनुसार जो मात्र अल्लाह पर विश्वास करते है एवं जो सलल्लाहु अलैह व सल्लम मोहम्मद पैगम्बर साहब को उनका रसूल मानते है, जो जकात देते है, पांचो वक्त की नमाज पड़ते है, हज करते है, सच्ची, गवाही देते है,-अल्लाह की राह में उन्हें अल्लाह हमेशा के लिये जन्न्त अता फरमाता है। जन्नत में हूरें है, शहद की नदियाँ बहती रहती हैं एवं सुन्दर बगीचे हैं। इसी तरह हिन्दुओं में यज्ञ, दान एवं तप स्वर्ग दिलवाते है। जहाँ अप्सरायें है चिर यौवन है, एवं अन्य तमाम सुख है।

सुख तो आदमी को धरती पर भी मिलता है पर उसके बाद दुख आ जाता है, पर आदमी अनन्त सुख चाहता है। हिन्दुओं में जब अच्छे कर्मो का स्वर्ग में परिणाम भोग लिया जाता है तो उसे फिर जन्म लेना पड़ता है। यदि औरते सदकर्म करती है तो उन्हें सुन्दर आदमी स्वर्ग में भोग करने को मिलते है ऐसा किसी धर्म में नहीं है। ऐसा इसलिए है कि अधिकतर साहित्य आदमियों ने लिखा है। वे तो अप्सरायें चाहते हैं पर उनकी पत्नियाँ यहाँ या स्वर्ग लोक में किसी अन्य पुरूष के साथ रमण करें यह उनको सहन नहीं होता।

जन्नत या स्वर्ग में हर उस वस्तु की कल्पना की गई है जो उन्हें यहां प्राप्त नहीं हो पाती मगर जिसकी वे इच्छा रखते हैं। स्त्रियों की इच्छा व उपलब्धि हर जन्नत एवं स्वर्ग में कल्पित है। जैसे अरेबियन देशों में पानी एवं बगीचे दुर्लभ थे इसलिये उनकी कल्पना की गई है। आदमी की कल्पना की गई है। आदमी की अतृप्त वासना पूर्ति के लिये हूरे या अप्सरायें दोनो स्थानों पर उपलब्ध करवाई गई है।

स्वर्ग या जन्नत की उपलब्धि के लिये अच्छे कार्यो का निर्देश एवं इबादत या भक्ति का दोनो धर्मो में निर्देश है। यह इसलिये कि आदमी एक अदृश्य शक्ति से डर कर अच्छे कार्य करता रहे। सच बोलना, चोरी न करना, जकात या दान, दया करूणा इत्यादि कर्मो से समाज-व्यवस्था बनी रहती है, अन्यथा अराजकता फैल जाये एवं मनुष्य जाति आपस में लड़ कर नष्ट हो जाये। इसी तरह जहन्नुम या नरक में उन आदमियों को भेजा जाता है जो समाज की व्यवस्था तोड़ने वाले बुरे कार्य करते है, जैसे चोरी, डकैती, हत्या, बलात्कार असत्य भाषण या सर्वशक्तिमान पर अविश्वास क्रूरता दया न करना इत्यादि। वहां कुरान शरीफ के अनुसार निरन्तर जलने वाली आग है, हिन्दु धर्म के अनुसार जितनी क्रूर कल्पनायें आदमी कर सकता है वे सब यथा खौलते कढ़ाये में डालना, बरिछियों से छेदना पीब में रहना, जलती आग में डालना इत्यादि।

यह सही है कि व्यक्ति को समाज कल्याण के कार्य करना चाहिये जिससे समाज व्यवस्था बनी हरे। पर अच्छे कार्य लालच या भय पर आधारित हो तो यह विवेक पर आधारित नहीं होगा। फिर स्वर्ग या जन्नत मरने के बाद ही क्यों प्राप्त होते है यह एक शोचनीय विषय है। जब व्यक्ति यहां अच्छे कार्य करता है तो यहीं स्वर्ग या नरक मिल जाना चाहिये। दरअसल स्वर्ग या नरक सम्भावनाओं या विज्ञान है। कई बार अच्छे कार्यो का परिणाम धरती पर नहीं मिल पाता तो स्वर्ग या जन्नत सांन्तवना देने के लिये है कि चलो, यहां नहीं मिला तो वहां तो जरूर मिलेगा।

अर्द्धनारीश्वर कल्पना नहीं है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उन दिनों मैं जिला चिकित्सालय छिन्दवाड़ा मध्यप्रदेश में पदस्थ था। सन 2005 में मेरे पास एक युवक दाहिनी तरफ के “इन्ग्वाइनल हर्निया” की शल्यक्रिया के लिये आया। उस समय डा.गगन कोल्हे एनेस्थिस्ट थे और डा.सुभाष भगत मेरे सहायक थे। उस युवक को हमने आप्रेशन थियेटर में आप्रेशन के लिये भेजा। डा.गगन कोल्हे ने मरीज को “स्नाइनल एनेस्थीसिया” दिया। नाभि के नीचे के आप्रेशन के लिये एनेस्थेटिस्ट अमूमन रीढ़ की हड्डियों के मनकों के बीच निश्चेतना की दवा डालते है। यह उनके हिसाब से बेहोश करने से अधिक सुरक्षित एवं कम झंझट वाला काम है। इस एनेस्थीसिया में मरीज बेहोश भी नहीं होता। अतः “एपेन्डिक्स” “गर्भाशय” , “प्रोस्टेट” “ब्लेडर” , “स्टोन” “हर्निया” एवं जांघो एवं टांगो के आप्रेशन इसी एनीस्थिसीया में किये जाते है।

मरीज को पीठ के बल एक दम लिटा दिया गया। उसे इन्ट्रावीनस ड्रिप पहले से चल रही थी। आप्रेशन का भाग “स्प्रिट” एवं “प्राविडोन आयोडीन” से साफ किया गया फिर आप्रेशन की जगह को छोड़ कर शेष शरीर स्टराइल (निर्जीवीकृत) वस्त्रों से ढक दिया गया। यहां आप्रेशन का विस्तार
नहीं दिया जा रहा है। मैं आप्रेशन करने के लिए एवं डा. सुभाष भगत मेरी सहायता के लिये तैय्यार हो गये।

जब हमने हार्निया की थैली (सेक) खोली तो हम एक असंभव घटना के लिये तैय्यार नहीं थे। थैली खोलने पर अन्दर एक पूर्ण विकसित गर्भाशय, दोनो डिम्बाशय एवं योनि मार्ग था। अब हालात ये थे कि उस पुरूष में दोनो-पुरूष शुक्राणु थैलियां शुक्रवाहिनी एवं शिशन नीचे लटक रहे थे तथा गर्भाशय डिम्बाशय तथा योनिमार्ग अन्दर थे (कृपया चित्रे देखे) इस समय उसे पूर्ण महिला एवं पूर्ण पुरूष मे से कोई एक बनाया जा सकता था। पर उसकी दाढ़ी एवं मूछे देखकर हमने डिम्ब कोश एवं गर्भाशय निकालना उचित समझा।

मेरी सेवा निवृति के पश्चात एक और प्रकरण इसी तरह का डा. विष्णुघर द्विवेदी द्वारा आपरेट किया गया। यह प्रकरण भी दैनिक भास्कर के स्थानीय संस्करण में प्रकाशित किया गया। अभी तक लगभग 3500 इस तरह के प्रकरण विश्व में पाये गये है। अतः यह कहना कि अर्द्धनारीश्वर नहीं थे एक असत्य कथन है।

विशाल नेता जी द्वारा विशाल रावण का दहन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हमारे विशाल मोहल्ले के विशाल नेताजी की हर घोषणा विशाल होती है। उस दिन वे उनके विशाल माइक से विशाल रिक्शे पर बैठ कर विशाल घोषणा कर रहे थे। “हमारे विशाल मोहल्ले के विशाल नागरिकों, आज के विशाल दशहरे के विशाल दिवश यानि विशाल 19.10.2018 के दिन विशाल मैं के द्वारा दूसरे छोटे व्यक्ति के विशाल व्यक्तिगत भूखण्ड पर विशाल रावण का दहन विशाल रात्रि को विशाल 8 बजे किया जायेगा। आप सब से विशाल संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को विशाल रूप से सफल बनायें।

उनकी सभा में यदि पांच व्यक्ति भी उपस्थित हो जाये तो वह विशाल सभा हो जाती है। यदि किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में पांच बच्चे भी उपस्थित हो जायें तो वह विशाल सांस्कृति कार्यक्रम हो जाता है। तो उस दिन पन्द्रह व्यकित उस रात को उन्हीं के द्वारा निर्मित तीन फीट के विशाल रावण का दहन देखने के लिए एकत्रित हो गये। वह उनके लिये विशाल अवसर था। उन्होने उनका “हेण्ड माइक” लिया और बुराई पर अच्छाई की जीत करवाने लगे। वह रावण उनके चरणों में गिर कर बोला “हे विशाल नेता जी, आपका विशाल भाषण समाप्त कर मुझ छोटे से रावण को जल्दी जला दीजिये रात के ग्यारह बज रहे है और मुझे नींद आ रही है।

नेताजी ने उसे उठा कर गले से लगाया और बोले “तुम छोटे से कैसे हो सकते हो। आखिर तुम्हे विशाल नेता जलाने वाले हैं। “वह पुतला बोला “नहीं” बड़े तो आप ही

है। मैनें तो केवल एक सीता माता को ही चुराया था पर आप तो मोहल्ले की दस बारह लड़कियों का चैराहे पर चीर हरण कर चुके है। फिर भगवान राम ने तो लंका जाकर मुझे मारा था, आप लोग क्यों मोहल्ले-मोहल्ले मुझे जलाते है आप लोग एक ही दिन एक पुतला जला कर बुराई पर अच्छाई की जीत बताते है यानि साल के बाकी समय अच्छाई को बुराई से दबाते रहते हैं मुझे हंसी आती है जब आपके देश में हर मोहल्ले में एक जीवित रावण एक मृत रावण को आग लगाता है। यही नाटक दिल्ली के राम लीला मैदान से लेकर हर गांव के रामलीला मैदानों में होता है। आपके देश में हर रावण एक राम को जला देता है। अब तो रावण बनाने भी नहीं पड़ते। बने बनाये रावण के पुतले मिलते है। आप मुझे जल्दी जलाइये। क्यों मेरा समय नष्ट कर रहे है ? मुझे एक ही समय में कई जगह जलने जाना है। आप जल्दी से अच्छाई की बुराई पर जीत करवाइये। क्या नहीं होता भारत में ? विशाल भ्रष्टाचार, विशाल लूटपाट, विशाल शीलहरण, विशाल झूठ और हर छोटी जगह और छोटे से छोटे मौके पर बड़ी से बड़ी गंदगी। आप लोग सड़क साफ करने से पहले आपे दिलों की गंदगी को हटाइये।

किसी शरारती तत्व को लगा कि यह छोटा रावण भारत को विशाल गालियां दे रहा है। हम भ्रष्ट तो है पर भ्रष्टाचार का आरोप विरोधी दल पर लगाते है। भ्रष्ट कर्मचारी रिश्वत लेते हुये पकड़े जाने पर कहते है कि उन्हें फंसाया गया है। और इसके पहले कि वह विशाल रावण को जलाता उस शरारती व्यक्ति ने चुपके से रावण के पीछे जाकर आग लगा दी। नेताजी को विशाल बुरा लगा कि तब किसी शरारती तत्व ने उनकी विशाल मेहनत में मुफ्त में ही पलीता लगा दिया। मगर वह पुतला नहीं जला और उड़ या उड़ते उड़ते वह रावण का पुतला बोला मूर्खो, विशाल बनने के लिये विशाल ह्नदय बनाना आवश्यक है। तुम जैसे हर पाजी आदमी को मुझे जलाने का अधिकार नहीं है। मुझे जलाने का अधिकार केवल मर्यादा पुरूषोत्तम को है।

राफेल के राग के साथ गरीबों का भी गाना गाओ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

राहुल गांधी भारतीय जनता पार्टी से पुश्तैनी दुश्मनी निभा रहे हैं। उनके पिता स्वर्गीय राजीव गांधी पर बोफोर्स घोटाले का आरोप लगा था। इसी आरोप के चलते

स्वर्गीय राजीव गांधी से प्रधानमंत्री का पद छिन गया था। मगर ये आरोप विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लगाये थे, भारतीय जनता पार्टी ने नहीं। बहुत पहले अमिताभ बच्चन की एक फिल्म देखी थी दीवार। उसमें बचपन में उसके बाहों पर कोई और ही लिखता हैं मेरा बाप चोर हैं पर वह बड़ा होकर बदला किन्ही और लोगो से निकालता है।

इस समय आम आदमी यानि मध्यम वर्ग एवं उच्च निम्न वर्ग पेट्रोल के अनाप शनाप बढ़ते दामों से त्रस्त है, मगर सबसे बड़ा विरोधी दल आम आदमियों की बात न उठा कर मात्र राफेल डील का राग अलाप रहा है। इस समय कांग्रेस को आम आदमी की आवाज उठाने का स्वर्ण अवसर है मगर राहुल गांधी केवल पुश्तैनी दुश्मनी के चलते राफेल डील का स्वर ही अलाप रहें है। इस समय मंहगाई के मुद्दे पर जोर न देकर एक ऐसे मुद्दे को उछाल रहे हैं जिसमें आम आदमी का कोई लेना देना नहीं है।

दूसरा मुख्य मुद्दा जो वे उछाल रहे हैं वह भारत का पाकिस्तान के प्रति ढुलमुल नीति का है। यह भारत की अस्मिता का प्रश्न है। काशमीर में भारत का खुले आम अपमान हो रहा है और भारतीय जनता पार्टी कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है। इससे शेष भारत में बहुत आक्रोश से इन दोनों मुद्दों को लेकर कांग्रेस जनता के बीच ले जाकर भुना सकती है। पर राहुल गांधी वही बचकानी बातें कर रहें है कि नरेन्द्र मोदी उनमें आंखे नहीं मिला रहे हैं या उनको प्यार की झप्पी (भगवान जाने क्या होती है) नहीं दे रहे है। अब क्या प्रधानमंत्री उनसे आंखे मिलाने के लिये अलग से समय निकालेंगे ? यह सही है कि राजनीति में एक छवि बनाना जनता के सामने आदर्श प्रस्तुत करती है पर आंखे मिलाने से छवि बनती है क्या ?

जनता नोट बंदी से परेशान हुई थी। उस समय आम आदमियों के साथ खड़े होकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया था। मुददे वे उठाना चाहिये जो आम आदमी से संबंधित हो व्यक्तिगत दुश्मनी से नहीं या आंख मिलाने जैसी बचकानी बातों से नहीं। एक आम आदमी चाहता है कि नेता उसकी बात को उठाये व्यक्तिगत दुश्मनी के लिये आम आदमी को मोहरा नहीं बनाये। आज तो नेतृत्व के ऐसे हाल है कि

चाहतें है ऐसे वे मुद्दे उछलना चाहिये
भुखमरी का दुश्मनी में रूख बदलना चाहिये।
नूरा कुश्मी कर रहें है नुमाइन्दे सोच कर
गालियों से अधमरों का दिल बहलाना चाहिये।

उधर पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री बयान दे रहे है कि राहुल गांधी भारत के अगले प्रधानमंत्री होंगे। राहुल गांधी को उनके ट्वीट का खंडन करना चाहिये कि वह बयान उनका व्यक्तिगत बयान है उससे कांग्रेस पार्टी का कोई लेना देना नहीं है। यह कह कर

उन्हें अपना पल्ला झाड़ लेना चाहिये। उन्हें मालूम होना चाहिये कि भारतीय (मुसलमानों सहित) पाकिस्तान से नफरत करते है।
आजकल राहुल गांधी ने नरेन्द्र मोदी को चोर कहना चालू कर दिया है। इससे राहुल गांधी के स्वयं की छवि खराब होती है। यह सही है कि भारतीय जनता पार्टी राहुल गांधी को पप्पू इत्यादि नामों से संबोधित करती रही है। इससे भारतीय जनता पार्टी की छवि ही खराब हुई है, राहुल गांधी की नही।

भारतीय जनता पार्टी को व्यापारियों एवं नौजवानों ने दिल खोल कर मत दिये थे। आज यह वर्ग भारतीय जनता पार्टी से सबसे अधिक त्रस्त है। व्यापारी वर्ग जी.एस.टी.के कारण एवं नौजवान पेट्रोल की हर दम बढ़ती कीमतों के कारण। इसका लाभ बढ़ती कांग्रेस मुद्दा बना कर इनकी सहानुभूति उठा सकती है। भावी प्रधानमंत्री के लिये स्वयं को घोषित करना (चुनाव के पूर्व) ऐसा ही है कि बस्ती तो बसी नहीं लुटेरे पहले आ गये। इस समय राहुल गांधी को सभी क्षेत्रीय दलो के मुखिया को भावी प्रधानमंत्री के रूप में सम्भावना व्यक्त करनी चाहिये जिससे वे अधिक से अधिक भारतीय जनता पार्टी को हराने का प्रयत्न करे। प्रधानमंत्री का पद तो बाद में तय किया जाता।

राजनीति एवं प्रेम में सब जायज है। राहुल गाधी को वरूण गांधी की तरह भाईचारा स्थापित करना चाहिये। यदि वे मेनका गांधी के चरण छू लेते हैं तो उनका ही बडप्पन सिद्ध होगा। उन्हें याद रखना चाहिये कि मेनका गांधी को अपमानित करके घर से बाहर निकाला गया था। हालांकि वरूण गांधी के पिताजी उनके पिताजी की बहुत इज्जत करते थे। यदि वे मेनका गांधी को भारतीय जनता पार्टी से फोड़ने में कामयाब हो जाते है तो यह भारतीय जनता पार्टी को बड़ा झटका होगा और उनकी सबसे बड़ी जीत।

राहुल गांधी को इस समय समाचार माध्यमों का अच्छा सहयोग मिल रहा है और माध्यम दबी जबान में मोदी का विरोध करने लगे है। अभी लोहा गरम है और उस पर चोट मारी जा सकती है।

अन्त में

वजन जूतों का मुसलसल बड़ रहा है रात दिन
सब की हद हो चुकी चीखें निकलना चाहिये।।
खुद खुशी और भूखमरी के आंकड़ो के देख कर
वजीरे आजम को मन को बात कहना चाहिये।
अंकशो की धार को कुछ तेज भी करते रहो।

बौखलाये हाथियों की मद उतरना चाहिये।।

बी.जे.पी. जो उत्पादक श्रेणी की पसीने की कमाई को सस्ती लोकप्रियता के लिये अनुत्पादक मदों में खर्च कर रही है उसके विरूद्‌ध कोई भी राजनैतिक दल उद्‌घोष करने की हिम्मत नहीं कर सकता। पर इससे बी.जे.पी. को ही हानि हो रही है। अभी तक सभी दल यही करते आयें है। प्रजातंत्र ने मतदाताओं को श्रमजीवी बनाने के बजाय भिखारी बना दिया है पर इससे करदाता अत्यधिक असंतुष्ट है। यह तथ्य करदाताओं को आक्रामक मतदाता बना दिया है। धारा 370 हटाने एवं राममंदिर के मुद्‌दे को सड़ाने के कारण बी.जे.पी की छवि खराब ही हुई है। इस असफलता को कांग्रेस को भुनाना चाहिये। स्वतंत्र निकायों को पैरों तले रौंदने के मुद्‌दे को एन.डी.टी.व्ही के प्राइम टाइम को जोर जोर से उठा रहे हैं। कांग्रेस को उनके स्वर में स्वर मिला कर स्वयं की स्थिति दृढ़ करना चाहिये।

ठंडी ताप रही दोपहरी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ठंडी ताप रही दोपहरी
रात कटी मुश्किल कुत्तों पर,
पिल्ले चिपके सोये
बिल्ली ढूंडे घर में गद्‌दी
रातों कुत्ता रोये
ठंडी ओस गिरे उन सब पर
वह भी निष्ठुर ठहरी।
ठंडी ताप रही दोपहरी।।

आवारा गायें रातों को
बेबश ठंडी सहती।
कहीं देखती चार दीवारी
ओढ़ आड़ को रहतीं।।
मैदानों में ठंड बरसती।
गहरे से भी गहरी।
ठंडी ताप रही दोपहरी।।
पूरब से दिन बरसा क्रमशः
हल चल जागी धीरे।
ढूंड रहे सब धूप सुबह रे।।
हिलने लगे सभी रे।।
दाना पानी लेने नीचे,
डरती आई गिलहरी।
ठंडी ताप रही दोपहरी।।
रातों को जो चुप थे पक्षी
लगे चहकने दिन में।
पशु पक्षी आहार ढूंढने
फुदक रहे छिन छिन में।।
हुई शाम फिर आ जायेगी।
रात हठी जो ठहरी।
ठंडी ताप रही दोपहरी।।
धरती है बर्फीला गद्दा
नीला गगन रजाई।
मरा भिखारी उस रजाई में
सुबह भीड़ घिर आई।।
कागज कलम लिये हाथों में
लाश देखता प्रहरी।
ठंडी ताप रही दोपहरी।।

आंगन और सड़क के बीच की झाड़ू

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दो अक्टूबर 1914 को प्रधानमंत्री मोदी जी ने भारत को साफ करने की मुहिम छेड़ी। उन्होने स्वयं झाड़ू लगाई। वह झाड़ू और वह कचरा धन्य हो गये कि उनके पूर्व जन्म का प्रताप था कि प्रधानमंत्री ने उन्हें छुआ। वह कचरा जहां फेंका गया वह जगह भी धन्य हो गई। प्रधानमंत्री ने झाड़ू क्या पकड़ी कि सारे अधिकारी स्वयं का कार्य छोड़ कर झाड़ू लगाने लगे वैसे भी वह उनका कर्तव्य पालन करते भी कहां थे ? झाड़ू लगाने वाले उनका कार्य छोड़ कर सिगरेट धोंकने लगे। हाल यह था कि अधिकारी कैमरे वालो का इंतजार कर रहे थे। जब चेनल वाले आये तो उन्होने झाड़ू उठाई और इस तरह से झाड़ू लगाने लगे जिससे कि धरती माता को तकलीफ न हो उनका ध्यान झाड़ू पर कम और फोटोग्राफर पर अधिक था। टाइ लगा कर झाड़ू लगाते हुये वे अमेरिका के सफाई कर्मचारी लग रहे थे। जब पर्याप्त चित्राय गये तो कैमरा बंद कर दिया। अधिकारी फिर उनकी कुर्सी पर बैठ गये। उन्होने कैमरा मेन के साथ बैठ कर चाय नाश्ता किया वह झाड़ू समारोह देश को बहुत मंहगा पड़ा।

मैं जब घर गया तो नई झाड़ू मेरा स्वागत कर रही थी। पत्नि ने आदेश दिया कि पहले झाड़ू लगाओ फिर खाना मिलेगा। मैनें कहा ”यह मेरा काम नहीं है। घर की झाड़ू तुम लगाओ दफ्तर की मैं लगाऊंगा।” पत्नि ने हाथ नचाते हुये कहा ”अहा, सड़क पर सबके सामने झाड़ू लगाते हुए शर्म नहीं लगती और घर का काम करने में शर्म नहीं आती है।

मैनें कहा “वह मेरे कर्तव्य में था। उससे मुझे वेतन मिलता है। भले ही मैं संयुक्त संचालक हॅू पर यदि सरकार कहेगी कि तुम्हे झाड़ू लगाने पर वेतन मिलेगा तो मैं अपना काम छोड़ कर झाड़ू लगाऊंगा। पत्नि ने जवाब दिया “तुम्हे तो वह हेड कान्सटेबल अच्छा है जिसने वर्दी में झाड़ू लगाने से मना कर दिया। उसने जिस काम के लिये वर्दी पहनी है वह काम करे या सड़क पर झाड़ू लगाये। उसने बतला दिया कि वह एक जगह ही झाड़ू लगा सकता है घर में। थाने में वह अपना कर्तव्य करेगा। तुम्हारे अधिकारी भी नहीं पूछते कि तुम अपना काम छोड़ का झाड़ू क्यों लगा रहे हो ? मैनें कहा “वह खुद झाड़ू लगा रहे थे। बल्कि उनका आदेश ही था कि दफ्तर का काम छोड़ कर झाड़ू लगाओ।”

पत्नि ने पूछा “तुमने वह कचरा कहां फेंक दिया” मैनें पान थूकते हुये जवाब दिया ”
सड़क पर” पत्नि मेरे पान थूकने पर नाराज हो गई बोली गुटक क्यों नहीं लेते दीवालें गंदी करते हो। “मैनें कहा इसके लिये प्रधानमंत्री ने कोई निर्देश नहीं दिये। पत्नि बोली “पहले के प्रधानमंत्री बोलते नहीं थे और ये चुप नहीं। प्रधानमंत्री ने इसके भी निर्देश नहीं दिये कि अब सड़क का कचरा कहां जायेग ? हिमालय से हिन्द महासागर तक

पोलीथीन के पहाड़ लगे है उनका क्या होगा। यहां वहां पानी की खाली बोतले, पाउच, पोलीथीन के झोले पड़े रहते है उनका क्या प्रबंध किया जायेगा क्या केवल झाड़ू लगाना ही भारत को साफ रखना है। घर संस्थायें अपना कचरा सड़क पर फेंक देते है। क्या सरकार के पास अपशिष्ट प्रबंधन की कोई कार्य योजना नहीं है ?

मैनें एक आम भारतीय की तरह कहा "सरकार कुछ न कुछ तो सोच रही होगी। अभी तो सारा कचरा शहर में मेट वे आफ शहर में डाल दिया जाता है जैसे दिल्ली में या भोपाल में घुसने से पहले। "पत्नि बोली" और जैसे तुम मर्द लोग दीवाल गंदी करते रहते हो वैसे ही कारखाने उनका गंदा पानी गंगा में डाल देते है।"

यह घर का झगड़ा अब वर्ग संघर्ष का रूप लेने लगा। मैनें कहा "मर्दो पर मत जाओ। तुम लोग तो अधिकांश समय घर में बीताती हो पर मर्दो का अधिकांश समय सड़क पर ही बीतता है। अब सड़क छाप आदमी दीवाल गंदी न करे तो क्या करे। मीलों तक शौचालय नहीं रहते। मिलते हैं तो इतने गंदे कि उनमें जाने से उनकी दीवार गंदी करना अधिक स्वास्थ्यप्रद लगता हैं।" अब हाल यह है कि सोने के दाम कम हो रहे है और डिजाइनर झाड़ूओं के दाम बढ़ रहे है। मैं घर में झाड़ू लगाने के लिये जब झुकने ही लगा तो बुद्धि ने कहा "रे मर्द तू औरत के आगे झुक रहा है। तू झुल रहा है कि मर्द ज्यादा चालाक होते है और औरत ज्यादा भावुक। प्रधानमंत्री ने झाड़ू क्या लगा दी कि तुम्हारी नारी भावुक बन गई। याद रख कि वह मेरी नारी है, नरेन्द्र मोदी की नहीं। नरेन्द्र मोदी तो खुद की छोड़ बैठे हंै। न छोड़ते तो कहीं क्लर्क होकर घर की झाड़ू लगा रहे होते। यदि रख महान लोग जैसे जवाहरलाल नेहरू अकेले थे इंदिरा गांधी अकेली थी अटल बिहारी बाजपेयी अकेले थे एपीजे अब्दुल कलाम भी और अब नरेन्द्र मोदी भी अकेले है। इसीलिये प्रधानमंत्री बन पाये। तू छोड़ देता तो अमेरिका का प्रेसीडेन्ट बन सकता था। अमेरिका का प्रेसीडेन्ट न सही, विभाग का डायरेक्टर तो बन ही सकता था। अब मक्कारी दिखा, हे मर्द मक्कारी दिखा, मैनें मक्कारी से जवाब दिया "तुम झाड़ू तो बहुत अच्छी लाई हो बिल्कुल संयुक्त संचालक की गरिमा की। मगर दूरदर्शन ने चैनल वाला कहाँ है ? उस बुला लाओ तो मैं पूरे घर की झाड़ू लगाने के लिये तैय्यार हँू। दफ्तर में तो मैनें तभी झाड़ू लगाई थी जब दूरदर्शन के चेनल वाले आ गये थे। दूरदर्शन के फोटोग्राफर के अभाव में तुम्ही झाड़ू लगा सकती हो। इसीलिये घर का आंगन साफ करके सड़क गंदा करने का पवित्र काम करती रहो।

तुम से दूर

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तुम से दूर आकर फंस गया हूँ जाल में
नहीं तुम अब पूछते हो, हूँ यहाँ किस हाल में
        तुम्ही ने दूर करने बनाया था जाल ये
        तुम से दूर रहकर हो गया कंगाल मैं
तुम्ही ने कहा था कि खुश रहूँ मैं जाल मैं
तुम्हारी खुशी में खुश रहूंगा हर हाल में
        तुम्हारे पास कोई भूख तो लगती न थी
        तुमसे दूर उलझा हूँ मैं आटे दाल में
तुम्हारे नूर से मैं था फरिश्ता चमकता
तुम से दूर लगता जिन्न और बेताल मैं

जैसे !

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अश्क हो आंख के अंदर जैसे
सीप में एक समन्दर जैसे
        शख्श वह दिल में लिये चलता है
        कैद में एक बवंडर जैसे
शांत बाहर हँू दिल में लहरें हैं
उल्टा सागर हो एक अंदर जैसे
        हमने तो एक सी किस्मत पाई
        उफक तक जमीं हो वन्जर जैसे
आपकी हँसी सामने, पीछे
घुसाती पीठ में खंजर जैसे

टूटती आशा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं हो गया निराश टूटती आशा से
पक्की यारी मेरी हुई हताशा से
        सोना जब मिलता ही नहीं जरा सा भी
        क्या करना है मुझको तोला माशा से
करते करते इंतजार परवाने का
शमा दोस्ती करने लगी निराशा से
        बच्चे की है लाश कांपते हाथो में
        पेट नहीं भरना है किसी दिलासा से
किया नहीं कुछ भी गत पांच बरस बीते
लुभा रहें है नेता हमें तमाशा से

मुक्ति सापेक्ष है

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुक्ति बंधन की सापेक्ष है। यदि बंधन है तो मुक्ति है। बंधन में रहने वाला ही मुक्ति को चाहता है। जो मुक्त है वह मुक्ति क्यों चाहेगा ? मुक्ति के लिये बंधन अपेक्षित है। बंधन किसका? चेतना की दृष्टि से बंधन माया का या प्रकृति का यानि वह कृति जो पहले से हो। तो पुरूष प्रकृति में ही जन्म लेता है। उससे छूटने की छटपटाहट ही मुक्ति के लिये प्रयत्न करना है।

प्रकृति से छूटने की छटपटाहट क्यों हो ? क्योंकि पुरूष उसमें स्वयं को बंधा अनुभव करता है, उसमें दासता अनुभव करता है। प्रकृति से मुक्त कैसे हो ? पुरूष उसमें स्वाभाविक राग के कारण बंधा रहता है। तो इस रांग से मुक्त होना ही मुक्ति है। इस राग के कारण ही द्वैत है। अन्यथा तो पुरूष मुक्त है ही। पुरूष को भूख लगती है यह एक राग है। वह देखता है यह दृष्टि से बंधन हुआ, वह सुनता है यह ध्वनि से बंधन हुआ, उसे क्रोध आता है यह क्रोध से राग हुआ उसे लोभ होता है" यह लोभ से बंधन हुआ, उसे द्वेष होता है यह द्वैष से राग हुआ। अतः राग एवं द्वेष एक ही हैं। इत्यादि इत्यादि ये सब काम के ही विभिन्न रूप हैं।

पुरूष को इन सब में एक गुलामी अनुभव होती है। यह अनुभव ही दासता हैं। इन सब का अनुभव के अतिरिक्त कोई अस्तित्व नहीं है। लेकिन वह इन सब के लिये विवश है। अतः यह विवश ही दासता है। इस दासता से छूटना ही मुक्ति है। इनसे छूटना दुबकर है। क्योंकि यह बंधन पुरूष के स्वभाव में है। इनसे मुक्त होकर व्यक्ति स्वयं के अस्तित्व से मुक्त होना चाहता है। स्वयं से मोह अभिनिवेष है। यह एक भय है कि यदि अस्त्वि से मुक्त हो गये तो मर गये। मुक्ति के लिये भय एक अवरोध है। यह अभिनिवेष ही भय है, यही निकेत है, अनिकेत होना ही मुक्ति है। वासनायें, इच्छायें, द्वेष, सुख दुख इत्यादि आवेग जीव के है, यही निकेत है इन्हीं में चेतना एक से दूसरे में भटकती रहती है। एक गोंद की तरह इनसे चिपकी रहती है।

स्वयं के अस्तित्व का अनुभव एवं आग्रह अहं है। इनको साथ लेकर जो समाधि होती है वह सविकल्प समाधि होती है। यानि यदि समाधि प्राप्त नहीं हुई, तो ये तो है।

एक विकल्प तो मुक्ति का है। जिस समाधि में चेतना, चेतना रहित हो जाये तो वह निर्विकल्प समाधि है। यह निरपेक्ष मुक्ति है यहां पर लौटना नहीं है।

बंधन किसका होता है एवं किससे होता है ? बंधन चेतना का होता है और अतीत से होता है। भविष्य से तो बंधन हो ही नहीं सकता। केवल काल्पिनिक भविष्य से अतीत बंध सकता हैं। यह भी चेतना में ही घटित होती है। अतीत चेतना में कचरा है। इस कचरे से विरक्त होना है हमेशा के लिये, एवं उसे बांधना है विशुद्व चेतना में स्वयं के लिये। चेतना स्थायी है एवं अमर है। वह तो रहेगी ही, चाहे बंध कर रहे या स्वतंत्र। जब वह स्वतंत्र रहती है स्वप्न में नहीं रहती है और समय का गणन घटित नहीं होता।

" तत् "

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जो न मैं (अहं) ही है, न तू (त्वं) है, न तू (त्वं) ही है, न वह (सः) ही है, वह कोई अन्य तत ही है। जो न ते (वे दो) ही है, न तानि (तीन या अनेक) ही है, अकेला ही है। इसीलिये उसे तत्र शब्द से सम्बोधित किया गया है। "वह" न ह्नदय ही है,न दृष्टा ही है। वह पकड़ में नहीं आता है। वाणि जहां तक पहुंच कर वापिस आ जाती है, वह वह है। तात्पर्य यह है कि वह अद्ववय है, अनिवर्चनीय है, अल्पकालीन है, क्षणिक नहीं है, बस वह है। मैं,तू और वह माया है। मा यानि नहीं है पर होती होती हुई प्रतीत हो। अहं से लेकर सः (मुझ से लेकर वह तक) माया है। वह सत है यानि भूत, वर्तमान एवं भविष्य में अपरिर्वतनीय है जो सतासत् (सत् एवं असत्) से भी परे है, वह-वह है।

जिसका आगय पाकर वक्ता बोलता है श्रोता सुनता है दृष्टा देखता है, स्पर्श करने वाला स्पर्श करता है, चखने वाला चखता है संूघने वाला संूघता है, मनन करने वाला मनन करता है पर जो वाणि त्वचा कर्ण दृष्टि जिह्ना, घाण का विषय नहीं है वह-वह है। तत्

से ही तत्व की व्युतपत्ति हुई है। तत्व ही ज्ञातव्य है। भगवान कृष्ण ने श्रीमद्‌भगवत गीता में कहा है।

तदविद्‌धि प्राणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्व दर्शिनः।

अर्थात जो तत्वदर्शी एवं ज्ञानी है उनके पास समर्पित होकर उनकी परिप्रश्नों के द्‌वारा सेवा करके उसे जानों (तब) वे तुम्हे (उसका) ज्ञान देंगे। वह हर स्थान पर एक सा है मन के लक्ष्य भेदने के पूर्व ही वह वहां पहंुच जाता है। उसमें ग्रंथियाँ नहीं है वह सम है। वह सम में तिला है पर ग्रंथियों का आधार है। दौड़ में वह सब के आगे निकल जाता है पर स्थिर एवं अचल है। वह सबसे छोटा सब के बराबर से सब से बड़ा है वह कोई कार्य नहीं करता पर सारे कार्य उसके कारण होते है। कर्मो के फलों का आस्वादन तो करता है पर कर्मो से निर्लिप्त रहता हैं। अतः कर्मो से वह पृथक है जैसे रस निकलने के बाद गन्ने के छिलके किसी फेंक दिये जाते है, इसी तरह कर्म उसमें नहीं रहते पर वह कर्म फल चखता हैं। वह सर्वेन्द्रिय गुणाभाषं सर्वेन्द्रिय विवर्जिम्" है।

ओम्

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

"अ" ब्रह्नना है" जो स्थूल जगत है वह "अ" है उसे वैश्नावर भी कहते है। उसके इक्कीस मंुह है वे है मन सहित ग्यारह इन्द्रियाँ, पाँच इन्द्रियों के विषय एवं पाँच प्राण। वह इनके द्‌वारा स्वयं को चखता है। "उ" अ के ऊपर रहता है। वह विष्णु है। उसे तेजस कहते है। उसके भी इक्कीस मंुह है। वह स्थूल से सूक्ष्म है। वह स्वपनिल

स्थिति है। वे विचार भी हो सकते है। वह स्थूल से सूक्ष्म है, निदगा एवं जागृति के मध्य है वह तेजष है।

अर्धचन्द महेश है। वह प्राज्ञ है। वह "अ" एवं "उ" के ऊपर। वह सुपुप्ति है जागृति एवं स्वप्न है जागृति एवं स्वप्न उसमें समाये हुये है। वह दोनो के ऊपर है। वह दोनो का कर्ता स्थिति है एवं सहांरक है। उसे प्राज्ञ कहते है। वही सर्वज्ञ है।

ओम् भी म् अर्द्ध मात्रा है। यह हरीय है। तुरीय अर्थात् वैश्वानर से चैथा। वह न जागृत है न स्वप्न है न सुशुप्ति है वह न वैश्वानर है न तैजष है, न प्राज्ञ है वह मुक्ति है। इस तरह ओम जागृत, स्वप्न, सुशद्धि तुरीय है वैश्नावर तैजष एवं प्राज्ञ है, ब्रह्नना विष्णु मेहरा है वह सत्व, राज एवं तग है वह ऋक साम और युजर है वह भूः भुवः एवं स्वः है वह स्थूल सूक्ष्म एवं कारण शरीर है।

अ दृष्य है "3" दृष्टि है और चन्द्र दृष्टा है अनुस्वार तुरीय है। अ बैखरी है "3" मध्यमा है अर्द्ध चन्द्र पश्यन्ति है और अनुस्वार परा है। अ माया है 3 जीव है म आत्मा है और अनुस्वार परमात्मा है। अ अतीत या 3 वर्तमान है म भविष्य है अनुस्वार कालातीत है। इस तरह ओम के शताधिक का मतलब है यह जो कुछ है वह ओम् का ही प्रत्याख्यान है।

संतो की विशिष्ट अभिनय शैलियाँ

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

"मेनेरिज्म" एक अंग्रेजी का शब्द है सामान्य जनों की भाषा में भीड़ के सामने एक विशिष्ट प्रकार से स्वयं को प्रस्तुत करना मेनेरिज्म कहलाएगा। यह विशिष्ट प्रतिक्रिया पद्धति नेताओं और अभिनेताओं के बारे में वर्णित की गई है। इसमें उनकी एक विशिष्ट पहचान बन जाती है। वे उस शैली के पिंजरे से बाहर नहीं निकल पाते यह अभिनय शैली दिलीप कुमार, राजकुमार, राजेन्द्र कुमार, मनोज कुमार, जानी वाकर, महमूद राजेश खन्ना आदि अभिनेताओं में चिह्नित की गई है। इसी तरह की शैली या प्रतिक्रिया महात्मा गाँधी जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गाँधी, अटल बिहारी बाजपेयी नरेन्द्र मोदी एवं अमित शाह में भी देखी गई है।

आधुनिक संतो में भी यह शैली पाई गई है। श्री श्री नामक संत एक विशेष प्रकार से देखते एवं मुस्कुराते है। उनके परिधान भी श्वेत रहते है। वे उनके देखने की शैली मुस्कुराहट एवं परिधान के पिंजरे में कैद हो गये है। एक दाढ़ी वाले भगवा वस्त्र धारी बाबा बन्दरों की तरह उछल कूद करते थे आपको याद होगा कि उनके शिविर में कुछ कैंसर के लोग खड़े होकर बतलाये थे कि उनका कैंसर ठीक हो गया है, कुछ बूढ़े लोग खड़े होकर कहते थे कि उनके दाँत दुबारा आ गये है कुछ लोग बाल सफेद करने के लिये उनके दोनो हाथों के नाखून आपस में घिसा करते है। मैनें राजपत्रित अधिकारियों को भी उनके नाखून घिसते देखा है। मुझे ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया है और एक दूर के भाई ने मुझे सलाह दी है कि मैं उनकी शरण में चला जाऊँ। मैनें सोचो कि जो व्यक्ति सत्याग्रह पर बैठने के बाद पिटने के डर से औरतो के कपड़े पहन कर भाग गया वह क्या रोगी होगा। खैर मैनें जवाब दिया कि देखना योग गुरू कुछ दिनों में चूरन चूहन बेचने लगेंगे। मैं गलत था। वे तो सौंदर्य प्रसाधनों से लेकर जीन्स तक बेचने लगे है। अभी वे उलट कुछ विशेष प्रकार की हंसी भगवा वस्त्र दाढ़ी इत्यादि के कैदी है। ये पहले दाढ़ी वाले बाबा है जो प्रसाधन सामग्री बेचने के लिये भी माडल का काम करते है।

एक गुजरात के बापू है जो अर्द्धनिमीलित नेत्रो से राम कथा कहते है। भगवान को धन्यवाद है कि उपरोक्त तीनों बाबा अभी तक किसी स्केण्डल में नहीं फंसे। केवल पैसा कमाने में लगे है। एक दिव्योग बाबा श्रीमदभागवत की कथा करते है पर आधी कथा उनके पद्म विभूषण ठुकराने पर रहती है जो उन्हें स्वर्गीय श्रीमती गांधी देने वाली है। एक अन्य बाबा हरेक भक्त के अनुरोध पर कहते है कि उन्हें कचैड़ी क्यों दिख रही है। वे उन कचैड़ियों को दूसरो को खिलाने को कहते है। इन कर्मचारियों को खिलाने पर भक्तो की समस्या हल हो जायेगीं। एक देवी जी है जिन्होने राधा जी को बदनाम कर दिया। उनकी हरकते तो कंस को भी शर्मिन्दा कर दें वे उनकी ही पिंजरे में कहीं किसी मर्द की गोद में बैठ जाती है तो कभी फिल्मी गानों पर नाचने लगती है।

कुछ अन्य प्रसिद्ध बाबा लोग है जो बलात्कार के प्रकरणों में जेल में है इन बलात्कारियों के चरणों में केन्द्रीय मंत्रियों तक ने मत्था टेका है। इन्होने तो खुद ही सेनाये, गुफायें एवं बंकर तक बना रखे थे। पर वे खुद के मेनेरिज्म के शिकार भी थे। इसी मेनेरिज्म से प्रभावित होकर मंत्री सेठ, व्यापारी, आईएएस अधिकारी तक इनके आगे दण्डवत होते थे। अब शायद उन्हें पश्चाताप होता होगा।

एक बाबा काले कपड़े पहने रहते है और न्यायप्रिय देवता शनि देव को बदनाम करते फिर रहे है। इन सब बाबाओं का ध्येय तो निश्चित रहता है एक एक्की शैली के कैदी हो जायें जिससे ये अकूत धन रख सके जो स्वयं अपनी धारक का कैदी है वह मुक्त कैसे हो सकता है। ये कैदी भक्तो को मुक्ति प्रदान करते है। किसी ने कहा भी है कि जब तक सौ मूर्ख जिंदा है तब तक एक चालाक भूखों नहीं मर सकता और वे मूर्ख भी कैसे ? जो इस देश को चला रहे है।

दृष्टा, दृष्टि और ह्नदय

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दृष्टा, दृष्टि और ह्नदय मिल कर एक इकाई हुये। यह एक त्रिपुही हुई। इनमें दृष्टा और दृष्टि एक भाग हुआ और दृष्ट अलग। इसी प्रकार अन्य ज्ञानेन्द्रियाँ एवं उनके विषयों के बारे में हुआ यथा श्रवण सुनने की शक्ति एवं शब्द त्वचा स्पर्शन एवं उसका स्पर्श घ्राणा उसकी शक्ति एवं गंध, जिह्ना स्वाद एवं रस इत्यादि।

हमारा मन में कई त्रिपुटियाँ है” यदि हम उनके विषयों से निर्लिप्त रहते है तो अंदर के रस भी क्षीण हो जाते है। इसके लिए हमें दृष्टा से भी ऊपर उठना पड़ता है। जब दृष्टा ही दृष्य बन जाये तो यह त्रिपुटी टूट जाती है। जब श्रोता ही शब्द बन जाये तब त्रिपुरी टूट जाती है। तब स्पर्श रस रहित हो जाये तब त्रिपुटी टूट जाती है। तब घ्राण का गंध से नाता टूट जाये तब त्रिपुटी टूट जाती है।

जब मन, मनन कर दे त्रिपुटी टूट जाती है। लेकिन दृष्टा की दृष्टि का लोच नहीं होता है। तब क्या किया जाये। दृष्टि तो रहेगी ही ध्वनि तो रहेगी, स्पर्श तो रहेगी ही रस तो रहेगी ही तब क्या किया जाये, स्वयं स्वाद हो जाये यानि की कुछ खायें तो वस्तु हट जाये एवं स्वाद स्थिर हो जाये, स्वयं घ्राण बन जाये प्राण एवं आपन या प्राणायाम के अतिरिक्त हमारा अस्तित्व ही न रहे।

इन सबके लिये अन्तर्मुखी होना पड़ेगा। हमारी इन्द्रियाँ मुख है जो विषयों का रसास्वादन करती है। रूप के लिये नेत्र मुख है, ध्वनि के लिये श्रवण मुख है, रस के लिये जिह्ना मुख है, स्पर्श के लिये त्वचा मुख है, स्वाभवतः इन्द्रियाँ वहिर्मुखी है, उन्हें अन्तर्मुखी बनाना पड़ेगा।

गीताजी में लिखा है

अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्नान्ति जन्तवः

यानि ज्ञान को अज्ञान ने अच्छादित किया है हुआ है इससे प्राणी मोहित होते है। यहाँ प्रश्न उठता है कि ज्ञान को अज्ञान कैसे ढंक सकता है ? इसका उत्तर है कि उध्र्वमूलं अद्यः शाखं अश्वत्थः प्राईअव्यम् छन्दासि यस्य पर्णासि यस्तं वेद स वेदवित।

यानि इस अव्यय संसार रूपी पीपल के वृक्ष की जड़ ऊपर है, शाखा नीचे है और पत्ते दृष्टव्य है जो इसको जानता है ! वही वेदज्ञ है। अर्थात जड़ आत्मा है उससे महतत्व प्रकट होता है। उस महतत्व से अहंकार नीन, गुण, स्थूल, तत्व, विषय, मन, इन्द्रियाँ, प्राण इत्यादि प्रगट होते है। चंूकि इन्द्रियाँ वर्हिमुखी है अतः वह परमात्मा रूपी मूल देखती नहीं है। लेकिन अन्य तत्वों को देखती रहती है जो पत्तो के रूप में है।

कुत्ते और हम उर्फ माव लिचिंग

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नगर निगम के अच्छे प्रबंधन के कारण हमारा मोहल्ला कुत्ता नगर बन गया है गोया सभी माननीय पार्षदों एवं सम्माननीय अध्यक्ष के मोहल्लों के कुत्तो को झाडू लगाकर हमारे मोहल्ले में झाड़ दिया गया। जिस तरह कचरा घर में कचरा फेंक दिया जाता है उसी तरह माननीयों ने हमारे मोहल्ले को कुत्ता घर बना दिया है। ये कुत्ते दिन रात कंू-कंू से भों-भों और रात को रोने के साथ-साथ तरह-तरह की अब तक हमारे द्वारा न सुनी गई आवाजें निकालते है। वे सभी तरह के स्वर आरोह अवरोह में मंद,

तार एवं अनेक सप्तक की आवाजें निकालते है लगता है कि संगीत के सभी स्वर कुत्तों की आवाजों में भी है।

कुत्ते हमारे मोहल्ले में घरों एवं आसमान के नीचे के घर भी रहते है मगर वे आवाजें एक सी निकालते है। वे एक कार्य और मिल जुल कर करते है वह है घरों के किनारों को गंदा करना। कमीश्नर साहब रोज हमारे ही मोहल्ले का निरीक्षण करते है और देखते है कि हमनें कुत्तोे द्वारा
निःस्त्रत गंदगी साफ की या नहीं अन्यत्र वे हम पर जुर्माना लगा देते है यानि कि सड़क साफ करने का दायित्व मात्र हम नीचे की मंजिल में रहने वालो का ही है, कुत्तो और हमसे ऊपर रहने वाले और उनके कुत्तो का नहीं।

जब भी हम नगर निगम सरकार से कुत्तो के उत्पाद की शिकायत करते हैं तब हमारे मोहल्ले में दो कुत्ते और बढ़ जाते है अतः हमने निगम सरकार से कुत्तो की प्रशंसा करना प्रारंभ कर दिया है। हमारी ऐसा लाक्षणिक प्रशंसा से निगम के पार्षद एवं अध्यक्ष इस तरह प्रसन्न होते है मानों हम उनकी ही प्रशंसा करते है। हमारे मोहल्ले के कुत्तों में अनेकता में एकता है। कूबली समय में वे आपस में लड़ते रहते है पर जब कोई बाहर का कुत्ता हमारे मोहल्ले में आ जाता है तो वे सब एक होकर उसे मोहल्ले से बाहर खदेड़ने लगते है। ऐसी साम्प्रदायिक एकता तो मनुष्यों में देखने को नहीं मिलती। वह आगन्तुक कुत्ता पूछ सीधी कर भागते भागते भोंकता जाता है। मुझे यह देख कर पहली बार लगा कि पूछ की भी एक भाषा होती है। कभी कभी वे आगन्तुक को काटने भी लगते है, यही “माब लिचिंग” में डाग लिचिंग होती है। अन्यथा वे उस अकेले कुत्ते को अकेले मोहल्ले के कुत्ते को उसी तरह सौंप कर वापिस आ जाते है। जैसे एक जिले के कर्मचारी उच्चाध्धििकारियों या मंत्रियों को दूसरे जिले के कर्मचारियों को सौंप कर वापिस आ जाते है।

हमारे देश में जंगल के कानून चलते है। यदि सांप आदमी को काट ले तो उस पर कोई कानून नहीं लगता। वह आदमी को काट कर भाग भी सकत है और खड़ा रह सकता है पर यदि आद्रर्य ने आत्म रक्षा के लिये सांप को मार डाला तो पूरा जंगल मय अहलों अमान के उसके पक्ष में खड़ा हो जायेगा। जंगल के वे सारे कानून जो आपको नहीं मालूम आप पर लागू हो जायेंगे। कुत्ता अगरचे जंगली जानवर नहीं है पर यदि आपने उसको मार दिया तो जानवरों पर अत्याचार करने की धारायें आप पर लग जायंगी पर आपने कुत्ते को काट खाया तो आपको पागल खाने भिजवा दिया जायेगा। आपको बचाने के लिये तब आदमी भी एकता नहीं दिखायेंगे। कई कुत्ते माक लिचिंग में कुछ नवजात शत्रुओं को भी चीर डालते है, पर ऐसे में मां की गालियां दी जाती है।

मेरे घर के गेट पर कुत्तो के स्वचलित पट्टे लिखे हुये है। जब मैं घर में घुसता हँू तो या तो उन्हें लांघ कर जाना पड़ता है या एक कुत्ता थोड़ा सा सरक कर मुझे मेरे ही घर में घुसने की अनुमति दे देता है। अच्छा है कि सरकार कुत्तो को लिखित पट्टा नहीं देती अन्यथा उनको भी मकान बनवाने के लिये राशि दे देती।

एक साहब का पशु प्रेम जागा तो उन्होने कुत्तो को डनलप के गद्दे बिछवा दिये और कुत्तो को डबल रोटी खिलाने लगे और वे चूहे शेर हो गये है और उन साहब को पदम्श्री मिलने वाली है। भले ही आदमी भूखे मरे पर कुत्ते भूखे नहीं मरे पर कुत्ते भूखों नहीं मरना चाहिये सुना है नगर निगम सरकार कुत्तो की नसबंदी करवाने वाली है। मगर जैसा कि होता है आदमियों की नसबंदी भी फेल हो जाती है कुत्तो की भी होने लगी तो उन्हें कितना मुआवजा दिया जायेगा। इसी बात पर पार्षदो में मतक्य नहीं हो पा रहा। क्योंकि नसबंदी फेल कुत्ते की होगी और मुआवजा पार्षदों की जेब में जायेगा।

निशानी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

खिजां की चमन में कोई मनमानी न रहे
नाव पानी पे रहे नाव में पानी न रहे
अभी वालिद जो सुनाते है सुनते जी भर के
क्या पता उनके बाद कोई कहानी न रहे
शहर से गांव को पत्थर की बाढ़ आती है
गांव डूबे तो फिर ये राज सुनाही न रहे
जंग लड़ते रहो कि जंग न लग जाये तुम्हे
नदी के बोध के आगे की खानी न रहे
याद हमने तुम्हारी कर दी सुपुर्दे खाक
बेवफा तुम्हारी अब कोई निशानी न रहे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

(1) बी.जे.पी. की केन्द्र की नीतियों से राज्यों में हार

(2) केन्द्र के कारण राज्यों में हारे

एक तथ्य यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक है कि मेरे विचार में तीन प्रान्तो यथा मध्यप्रदेश, राजस्थान एवं छत्तीसगढ़ में वहां के तीन मुख्यमंत्रीयों के हाथों से शासन की बागडोर उनके कारण नहीं गई वरन् केन्द्र की बंदर की तरह गुलाटियों के कारण गई है। इसे हम केन्द्र की राज्यों में हार कह सकते है वे कारण महत्वानुसार निम्नांकित है-

(1) साम्प्रदायिकता का ध्रुवीकरण

(2) नोट बंदी

(3) जीएसटी

(4) डिजिटल इंडिया

(5) गुजरात को अधिकतम बजट का प्रावधान

(6) धारा 370 को खत्म न कर पाना

(7) आतंकवाद का बढ़ना

(8) मेक इन इंडिया की असफलता

(9) अपने नेताओं को बैंक लूटने की सुविधा और आम आदमी को बैंक से पैसे निकालने में परेशानी

(10) एक व्यापारी को सारे लाभ

(11) प्रधानमंत्री का पद से नीचे गिरकर भाषण

(12) मंहगाई विशेषकर पेट्रोल की

(13) किसानों को अप्रत्याशित हानि

(14) स्वतंत्र सरकारी उपक्रमो का अपने फायदे के लिये उपयोग

(15) वरिष्ठ नेताओं की उपेक्षा

(16) सुप्रीम कोर्ट के जजों की प्रेस कांफ्रेंस

(17) आर.एस.एस. के द्वारा उपेक्षा

(18) सवर्णो का असहयोग

सुनो

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

चोरो के उपदेश सुनो
जनता और दरवेश सुनो
        शातिर पापी अपराधी,
        है साधु के वेश सुनो
बैंक लूट कर सज्जन ही
भग जाते परदेश सुनो
        भीम द्रोपदी के अब तक
        खुले हुये है केश सुनो
खुले भगोड़े घूम रहे
नहीं हुये है पेश सुनो
        नहीं एक भी अपराधी
        पछताता लव लेष सुनो

कहते हो

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

हमीं से छीन कर हमी को दान करते हो
कहते हो कि तुम हर मोड़पर अहसान करते हो
हमारे मुल्क के जब लोग मिलना चाहते है तब
दहशत गर्द क्यों दीवाल को दरम्यान करते हो
हमसे मांगना है तुम्हे वरना तो तुम चले जाते
इसी के वास्ते ही अजनबी पहचान करते हो
तुम्हारे साफ है कपड़े फटे गर्दिश में मेरे है
इसी से सामने सबको मेरा अपमान करते हो
तुम्हारे पास छोटे घर सुकू की हवा बहती है
बड़े महलों की तुम क्यों आग का अरमान करते हो

छुयें से डरती आग

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मिट गई तारीख अब दिन वो नहीं रहा।
सोचा था जैसा नजारा अब हो नहीं रहा।।
रास्ते मंजिल के अब सीधे नहीं रहे।
रास्ते का निशां तक देखो नहीं रहा।।
आ रहे आतंक वादी लोकसभा तक।
सरहदों का निगहवां मानों नहीं रहा।।
हालात लड़ने लगे है आपस में इस तरह।
हाथियों पर महावत मानों नहीं रहा।।
सरहदों की आग पानी से नहीं बुझना।
उसको दरिया आग का क्यों धो नहीं रहा।।
नजारा तोपों का दिल्ली में बहुत देखा।
सरहदों के पार है मंुड क्यों खुल नहीं रहा।।
छुयें से अब डरने लगी आग इस तरह।
आग में अब खून काटो तो नहीं रहा।।

रात को ढंूढती रात

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आये तू मेरी कब्र पर तो उर्स भरते है

धड़क कर मुर्दे मेरी किस्मत पे जलते है
चमन तू चलता हो तो फूलो का माली रख
बगैर बागड़ चलती है शोहदे मचलते है
ऊषा है तू सुबह की या जलती शमा है
जलते तारे बन के परवाने से ढलते है
लिये चंदा का दिया ढलती है रात से।
सजे तारों से भला, ऐसे है निकलते हैं।।
तू तो आई देखने भगवान मन्दिर में।
देखने तुझको मगर पण्डित मचलते हैं।।

लाश और गिद्ध

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

करते हैं वे बस वायदे कुछ करते नहीं हैं।
सियासत दान हैं आवाम से वे डरते नहीं हैं।।
कहते हैं वे हुआ मगर कुछ भी नहीं हुआ।
फिर पांच साल यहां से गुजरते नहीं हैं।।

एक बार वे जो उड़ गये छाया नहीं दिखती।
फिर मरते दम जमीं पे कदम धरते नहीं हैं।।
बैंक उनसे मिलकर बैंक लूट रहे हैं।
ऊपर पहंुच कर नीचे वे उतरते नहीं हैं।।
होते है खुश देख कर लाशों को गिद्‍ध वे।
लाशों के ढ़ेर देख कर सुधरते नहीं हैं।।

शहादत की विदाई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आवाज गूंजे इस तरह सदियों सुनाई दें
कट जाये सिर तारीख को सदियों दिखाई दें
ऐसा फरिश्ता है कहां जो सर्द रातों में
एक भिखारी को ठंड में अपनी रजाई दे
उनसे छड़कते है सभी बातों के धनी है
उनकी क्या सुने बात जो बातें हवाई दे
पड़ गई काली सुनहरी बाल सूख कर

अल्लाह ही ऊपर से फसलों को तराई दे
दुश्मन से लड़े और विदा मुल्क से हुये
मुल्क शहादत को अब कैसे विदाई दे

बीता वर्ष

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

समय बीते साल के पन्ने कुतर गया
एक कलेण्डर चढ़ गया और एक उतर गया
उसका हम स्वागत करें जो आज आ गया
उसका विश्लेषण करें जो कल गुजर गया
दिनकरों के बीच में एक निशा क्या आई
एक सूरज ढ़ल गया और एक निखर गया
दो पलों के बीच में एक सोचता है पल
एक पल आगे खड़ा एक पल किधर गया
वास्तविक जो थे कभी परछाई बन गये

क्या बचा है इस तरफ और क्या उधर गया

मृत्यु पूर्व बयान

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ब्रिटेन के संविधान में मृत्यु पूर्व बयान एक निश्चित साक्ष्य होता है जबकि भारत के संविधान में मरनासन्न बयान एक परिस्थिति जन्य साक्ष्य है। साकेत की दृष्टि से यह उचित ही है। साकेत नौ भाई बहिनों में सबसे बड़ा है मगर उसका दुर्भाग्य है कुछ उसकी गोद में मर गये और कुछ को उसे कंधा देना पड़ा। जो उसकी गोद में मरी वह 2 वर्ष की गुड्डी थी। तब साकेत की उम्र बीस वर्ष की थी और जिन्हें उसने कंधा दिया वे क्रमशः उसकी शादी शुदा छोटी बहिन, पिताजी, छोटा भाई कंुवारी छोटी बहिन और शादी शुदा छोटी बहिन और मां थी। यह कहानी उसकी छोटी बहिन मंत्रा के बारे में है (यू तो उसके हर मृत भाई बहिन की अलग अलग कहानियां है) मंत्रा की शादी जिस पुरूष से हुई वह ग्वालियर निवासी उपल था। मंत्रा की शादी उसके पिता ने धूमधाम से की थी पर उपल की (जो कि एक क्लर्क था) नजरों में एक सामान्य शादी थी। यह समस्या मां बाप के द्वारा तय की गई शादियों में अक्सर आती है। क्लर्क लड़के भी स्वयं को किसी बड़े स्टेट के राजकुमार से कम नहीं समझते।

परिणम स्वरूप लड़को की कंुठायें लड़की को सहनी पड़ती है। जैसे उपल शादी के बाद एक लड़की को खुद के छोटे से घर में लेकर आया। उसके सामने ही उसने मंत्रा को पोंछा लगाने को कहा। इस विचित्र परिस्थितियों में वह मेहमान लड़की असहज हो गई। उपल उस लड़की के सामने स्वयं की मर्दागनी दिखाना चाहता था। इस घटिया सोच के प्रदर्शन के लिये पत्नि के शरीर से अधिक उपयुक्त क्या वस्तु मिल सकती है। हालांकि एक अमीर घर की मंत्रा अच्छे से पोंछा लगा रही थी पर उपल ने उसे एक चांटा दे मारा।

मगर उपल यह देख कर हतप्रभ रह गया कि उस मेहमान लड़की ने उपल को ही एक चाटा जड़ दिया और चली गई। उपल स्वयं की पत्नि के सामने यह अपमान सहन न कर सका और एक जानवर की तरह पत्नि की पिटाई करने लगा। मंत्रा रोते रोते निर्विरोध पिटती रही। ऐसे राक्षस रात को और हिंसक हो जाते है। वे प्रेम नहीं करते जानवर बन कर बच्चों को जन्म देते है। मंत्रा ने एक राजकुमारी जैसी सुंदर पुत्री को जन्म दिया पर वह काले मन वाला आदमी लड़की को सहन नहीं कर पाया। वह “सेडिस्ट” था।

मंत्रा एक अमीर पिता की संुदर पुत्री थी। वह हमेशा प्रथम श्रेणी से उतीर्ण होती रही एवं इसी गति से उसने एम.ए.पास किया था। वह एक अच्छी वक्ता भी थी। उपल के अत्याचारों को उसने पिताजी को इसलिये नही बतलाया कि उन्हें दुख न हो। यहां उपल उसकी लड़की से अत्यधिक स्नेह करता था पर उसने किसी दिन भी दिन नहीं सोचा कि यदि उसकी पुत्री से उसके होने वाले पति ने ऐसा ही व्यौहार किया तो ? स्वर्णा 9 वर्ष की हो गई। इसी बीच उस राक्षस की आक्रमक हिंसा के कारण एक लड़के ने जन्म लिया। यह लड़का शुरू से ही तोड़ फोड़ करने वाला हठी और हिंसक था।

बाप बच्चों के सामने स्वयं को निर्दोष एवं उनके बच्चों को उनकी मां के विरूद्ध खड़ा करने लगते है। उपल उसके बच्चों के सामने मंत्रा पर अत्याचार करता और स्वयं को निर्दोष बतला कर मंत्रा को पागल बतलाने लगा। इधर मंत्रा पर दुहरा भार आ गया। उपल से पिटना और लड़की को सजा धजा कर राजकुमारी की तरह रखना। उपल शराबी था। वह शराब पीकर थकते दम तक मंत्रा की पिटाई करता था। हर रात मंत्रा स्वयं को इस अत्याचार के लिये तैयार कर लेती थी।

हालांकि मंत्रा ने प्रतिस्पधिक परीक्षाओं के लिये भी तैयारी की थी पर सवर्णो के लिये इन परीक्षाओं में उतीर्णता एक दुरूह समस्या थी। इसलिये उसने सरस्वती शिशु मंदिर में नौकरी भी की थी पर सरस्वती शिशु मंदिरों की स्वयं की विवशतायें है। इन विवश्ताओं के रहते हुये भी सरस्वती शिशु मंदिरों में कई महिलाओं को सहारा दिया है। इन्हें नोबल पुरूस्कार से नवाजा जाना चाहिये।

साकेत को एक दिन सूचना मिली की मंत्रा दुर्घटनावश रसोईघर में जल गई है। साकेत समझ गया कि उसे राक्षस ने मार डाला होगा। वह भागता हुआ ग्वालियर गया और गजरा राजा अस्पताल में वर्न वार्ड में गया। मंत्रा का पूरा शरीर जल कर काला पड़ गया था। उसे ड्रिप चल रही थी। वह पूर्ण चैतन्य थी। साकेत को आया जान कर वह बोली “भैयया इन्होने कुछ नहीं किया मैनें ही आत्महत्या की है।

साकेत समझ गया कि बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखकर ही एक देवी एक राक्षस को बचा रही है। साकेत के दो आंसू टपक पड़े।

सातवां कुत्ता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उनको डीन साहब ब्लड हाउण्ड जैसे लग रहे थे और वह स्वयं को एक डरता और कांपता पिल्ला महसूस कर रहा था। उसे याद आया कि वह घटना सन् 1968 की थी डीन साहब गुर्राये "क्या चाहिये" वह मिमयाया" सर मुझे मेडिसिन में एम.डी.करना है" डीन साहब ने उसके कपड़े देखते हुए कहा "यह सही है कि मेडिसिन की लिखित परीक्षा में तुम्हारे सर्वाधिक अंक आये थे पर तुम्हे यह भी याद होगा कि मैनें मौखिक परीक्षा में तुम्हे फेल कर दिया था। वह स्वयं के कपड़े देख कर सिकुड़ गया। डीन फिर गुर्राये "मेडिसिन की सारी सीट्स तो सचिवों के लड़को से भर चुकी है। यदि तुम तीन तक महिनों अवैतनिक "हाउस मेन शिप" कर सको तो सोचा जा सकता है।"

उसने कं़ू कूं करते हुए कहा "सर, मैं अवैतनिक तो एक माह तक नहीं कर पाऊंगा।" डीन बोले "तब ऐसा करो, मैं तुम्हे सर्जरी में वैतनिक हाउस मेन शिप दे सकता हँ़ू उसे ले लो। उसे लगा कि उसे खजया कुत्ता समझ कर अपने पास से दुत्कार रहे है। पर उसके पास कोई और चारा भी नही था। सर्जरी के प्रोफेसर भी उसे एक खजैला कुत्ता ही समझते रहे। उसने एक कर्मयोगी की तरह साल भर काम किया। वह लगभग 24 घंटे ड्यूटी पर रहता था। वह सर्जरी विभाग की आवश्यकता बन गया था। हर प्रोफेसर, असिस्टेंट, प्रोफेसर, लेक्चरर या रजिस्ट्रार को ज्ञात हो गया कि डिपार्टमेंट में कोई हो या न हो वह जरूर होगा। उसे भी सर्जरी विभाग में काम करते आनंद आने लगा था।

एक वर्ष पश्चात फिर वही वेतन की समस्या खड़ी हो गई, यानि कि उसे रजिस्ट्रार का पद नहीं मिला। वह अवसाद में बैठा था कि डा.सी.पी.देवानी आ गये। वे बोले" तुम्हे वेतन ही चाहिए न मेरी एक इंडियन कौंसिल आॅफ मेडिकिल रिसर्च की स्कीम पड़ी है वह तुम ले लो। मेरा रजिस्ट्रार के पद पर चयन हो गया है।" उसे डा. देवानी उस कुत्तो के समाज में फरिश्ता लगे ? डा. देवानी ने जिस रिसर्च स्कीम पर प्रोफाइल तैयार किये थे वह उसे दे दिये और कहा "तुम्हे बनारस जाना पड़ेगा। वहां बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी के जो सर्जरी के प्रोफेसर है डा. उडप्पा उनके दस्तखत इस रिसर्च के लिये ले लेना।

उसने वे पेपर्स इस तरह लपक लिये जैसे कोई भूखा कुत्ता रोटी पर लपकता है। उसने वह रिसर्च पेपर पड़ा। वह बनारस गया। वहां हिन्दु मुस्लिम दंगो के कारण कर्फ्यू लगा था उसने डा. के.एन.उडप्पा को फोन किया कि वह रिसर्च स्कीम पर उनके हस्ताक्षर लेने आया है। वहां से डा.के.एन.उडप्पा की आवाज आई "मैं एम्बुलेन्स भेज

रहा हूँ। कफर्यू में एम्बुलेन्स की सेवायें निर्वाध रहती है। तुम यहां आ जाओ और हमारे साथ खाना खाना और मैं पेपर्स पर हस्ताक्षर कर दूंगा।

वह इस मानवता से पिघलता गया। उसने कहा "सर मुझसे इतनी अच्छी तरह से कोई बोला नहीं है। मैं आपकी मानवता पर रो दूंगा। आप तो मेरे तीन साल के खाने का इंतजाम कर दीजिए मैं आपका आभारी रहूंगा।" डा. उडप्पा बोले "जैसी तुम्हारी मर्जी। तुम पेपर्स एम्बुलेंस के ड्राइवर को दे देना। मैं दस्तखत करके भिजवा दूंगा।"

बनारस से वह दिल्ली को ट्रेन से रवाना हुआ। उसने तृतीय श्रेणी का टिकट लिया था। रात को ट्रेन चली। वह ऊपर सामान रखने के स्थान पर अटैची रख कर सो गया। ट्रेन को सुबह दिल्ली पहुंचना था। जब वह दिल्ली पहुंचा तो उसका चश्मा और जूते चोरी चले गये थे। उसको संतोष हुआ कि जिस "अटैची" में "पेपर्स" रखे थे वह सलामत थी। उसने सोचा कि वह पेपर्स अपने पास रख कर अटैची क्लाक रूम में रख देगा। जब वह क्लाक रूम का फार्म भर रहा था उतनी देर में उसकी "अटैची" गायब हो चुकी थी। अब वह कुर्ता पायाजामा में ही था। पैर नंगे थे। गनीमत थी कि पेपर्स बच गये थे। वह पेपर्स लेकर आइ.सी.एम आर के दफ्तर पहुंचा। बाबू से पेपर्स लेने का निवेदन किया बाबू ने कहा "जिसकी स्कीम है उसे भेजो। क्या लाट साहब है कि प्यून के हाथो भिजवा दिया।" कुर्सी पर तो केंचुआ भी सांप बन कर फुफकारने लगता है। वह लुटा पिटा डाक्टर बोला "सर मैं ही आदमी हूँ जिसका ये रिसर्च पेपर है। मैं बनारस से चला तो इन पेपर्स के अलावा मेरी सारी चीजे चुरा ली गई।"

जब आप शिक्षित हो जाते है तो किंचित अभिजात्यपन आपकी भाषा में आ जाता है। अतः उस बाबू ने यह स्वीकार कर लिये के सामने जो लुटा हुआ व्यक्ति है वह डाक्टर ही है। उसकी कहानी पर बाबू ने कहा कि इस स्कीम की 13 प्रतियाँ लाना पड़ेगी। वह बोला "सचमुच में मेरे पास केवल भोपाल जाने तक के पैसे बचे है। मैं इनकी प्रतियां नहीं कर सकता। उन बाबू महोदय ने कहा "ठहरो" में ही इनकी प्रतियां करवा लेता हूॅ।।" फिर सचमुच में उन्होने ही उनकी प्रतियां तैयार करवा दी। इस तरह वह भोपाल लौट आया।

पहला कुत्ता

आई.सी.एम.आर के मार्ग दर्शक सर्जरी के विभागाध्यक्ष को ही बनाया था। उस समय तेरह विद्यार्थियों का स्नातकोत्तर अध्ययन के लिये चयन हुआ था। पशुओं पर प्रयोग के लिये कम ही विद्यार्थी आगे आते है क्योंकि उनमें बहुत अधिक मेहनत लगती थी। फिर राजनीति की तरह शिक्षा में जातिवाद बहुत होता है। तेरह में से नौ

विद्यार्थी विभागाध्यक्ष की जाति के थे तो उन्हें मात्र दो को जानवरों पर प्रयोग की बाध्यता थी। उसी को जानवरों की प्रयोगशाला विकसित करने का दायित्व था। उसे कुत्ते खरीदने के लिये प्रति कुत्ता 13 रूपये स्वीकृत किये गये थे। कुत्तो के बिस्किट्स ब्रेड के लिये रू. 25 स्वीकृत हुये थे। प्रयोगशाला के सामान के लिये रू. 30 स्वीकृत हुये थे। कुत्तो के केयर टेकर के लिये रू. 100/- ¬प्रतिमाह स्वीकृत हुये थे और आकस्मिक निधि रू. 400 प्रतिमाह स्वीकृत हुई थी। कुत्तो के केयर टेकर को ही सड़क के कुत्ते लाने का दायित्व दिया गया था। वह पहला कुता लाया तो कुत्ता भौंक जरूर रहा था पर उसकी आँखों में करूणा के भाव थे।

कुत्ते के उदर में "पेरेल्डीहाइड" का इंजेक्शन लगाया गया। वह कुछ देर में बेहोश हो गया। फिर उसके चारो पैर सीधे करके बांध दिये गये गये। (यह प्रयोग मेंढ़को के ऊपर प्रयोग से अधिक मानवीय लगी जहाँ उनके सिर को झुका कर एक सूजे के द्वारा पृष्ठ भाग से दिमाग का सुशुम्मा से विच्छेदन कर दिया जाता था एवं उनके पैरो को सीधा कर उनके पैरो को सीधा कर उनको आलपिन से मोम की ट्रे में जड़ दिया जाता था।) उसने फिर कुत्ते के उदर में चीरा लगा दिया। उदर झिल्ली निकलने पर उसे बांयी ओर तब तक हटाया जब तक कि पोस्टीरियर या मुख पृष्ठ मुख्य शिरा नहीं निकल आई। उसको गुर्दो के नीचे हुक किया गया। फिर हुक के छेद में एक धागा पिरोया गया, हुक को बाहर निकाला गया और धागे को बाहर बांध दिया।

उसे पीछे से एक्सीलेन्ट की आवाज सुनाई दी। वह अचकचा गया। उसने मुड़कर देखा तो विभागाध्यक्ष खड़े हुये थे। उन्होने पीठ थपथपा कर कहा "केरीआॅन" । और यह कह कर वे चले गये। उसे जो प्रसन्नता हुई वह एम.बी.बी.एस. के चयन के समय भी हुई थी। उसने उदर को बंद किया दस्ताने और आपरेश्न के कपड़े उतारे और हाथ धो लिये। वह विडम्बना ही थी कि स्वयं का पेट भरने के लिये वह एक निर्दोष कुत्ते को मार रहा था। दूसरे दिन कुत्ते के पैरो में सूजन आ गई। उसे बांध दिया गया था। वह पैरो के बल घिसटने लगा था। तीसरे दिन शिरा से उसका रक्त निकाला। मालूम पड़ा कि "ब्लड यूरिया" नही बढ़ा था। सातवें दिन बीनो ग्राफी (शिराओं का अंकेक्षण) किया गया। शिराओं ने रीड की हड्डीयों के दोनो तरफ आरी जैसी शिराओं के द्वारा पृष्ठ मुख्य शिरा को अग्र शिरा से जोड़ दिया था एवं कुत्ता जिंदा था। उन फोटोग्राफ्स को देखने पूरा सर्जरी विभाग उमड़ पड़ा। सब आश्चर्य से उस प्रयोग से परिणाम को देख रहे थे। ऐसा प्रयोग विभाग में पहले कभी नहीं हुआ था।

दूसरा कुत्ता

दूसरे कुत्ते की पृष्ठ मुख्य शिरा गुर्दे की शिराओं के ऊपर बांधी जानी थी। इस आप्रेशन के पश्चात उसकी मृत्यु निश्चित थी। जैविक प्रयोगशाला के साथ लगी हुई मेडिको लीगल विभाग था। चीरघर इसी पाश्विक प्रयोगशाला के पास था। उसके विभागाध्यक्ष ने उसे बुलाया और डांटने लगे। वह अपमान एवं अन्याय सहते सहते ढीट हो गया था। प्रोफेसर ने कहा "तुम्हारी प्रयोगशाला के कुत्ते रोते रहते है जिससे हमें व्यवधान होता है।" उसने विनम्र से जवाब दिया "सर उन्हें मुर्दो के भूत दिखते होंगे इसलिये वे रोते है।" यह सुनकर वे हंस दिये।

इस कुत्ते की मुख्य शिरा गुर्दे की शिराओं के ऊपर बांधी गई थी। वह कुत्ता दूसरे दिन बेहोश हो गया। उसका ब्लड यूरिया लिया गया वह बहुत अधिक बढ़ गया था। उसकी शिराओं का अंकन पोस्टीरियर वीनो ग्राफी की गई। "डाई" (रंग) बांधने के स्तर तक ही रूक गया था। समानान्तर शिराये (को लेटरल वीन्स) नहीं खुली थी। तीसरे दिन उसे झटके आने लगे। सांस तेज चलने लगी और वह मर गया।

तीसरा कुत्ता

तीसरे कुत्ते की शिरा गुर्दे की शिराओं के नीचे बांधी गई। विभागाध्यक्ष की नफरत कभी कभी सतह पर आ ही जाती थी। कभी कभी तो वे "केस पेपर्स" उसके मुंह पर फेंक देते थे। तब सभी व्याख्याता उसके ऊपर उसी तरह गुर्राते थे जैसे किसी मोहल्ले में कोई अजनबी कुत्ता आ जातर है और सारे कुत्ते उस अकेले कुत्ते पर आक्रमण कर देते है। पर प्रयोग के परिणाम बहुत अच्छे थे अतः विभागाध्यक्ष इसलिये प्रशंसा भी कर देते थे कि मार्गदर्शक के रूप में उनका नाम था। अतः वे सन् 1970 में एक ऐसे लेख के प्रकाशन का सपना देख रहे थे जो पहले हुआ ही नहीं था। इस तीसरे कुत्ते के ऊपर प्रायोगिक परिणाम भी पहले कुत्ते के समान ही अप्रत्याशित रूप से अच्छे थे। विभागाध्यक्ष ने एक बार सब के समान उससे पूछा "इन प्रयोगो के परिणामों से मनुष्य को क्या लाभ होने वाला है।

उसने जवाब दिया "सर, यदि दीर्घकाल तक पर बिस्तर पर पड़े रहने से या डायबिटीज से या संक्रमण से पैरो की शिराओं में खून के थक्के जम जाते है तो पल्मोनरी एम्बोलिज्म (एम्बोलिज्म का मतलब होता है कि किसी एक वस्तु का एक स्थान से निकल कर धमनियों या शिरारों में बहने वाले रक्त के साथ वह कर दूसरे स्थान जैसे फेफड़े या मस्तिष्क में पहुंच कर रूक जाना। इससे आगे का रक्त प्रवाह बंद होकर अंधा कर देना या हाथ पैरो का पैरेलिजिस या फेफड़ो का रक्त प्रवाह बंद होना।) प्रोफेसर ने फिर पूछा दूसरे कुत्ते के मरने का कारण ?

उसने जवाब दिया “सर इसके अनेक कारण है। दिल को पम्प करने के लिये रक्त शिराओं द्वारा ही मिलता है। वह यदि बंद हो जाता है तो ह्नदय मस्तिष्क को पर्याप्त रक्त नहीं दे पाता है। दूसरा मुख्य कारण ब्लड यूरिया का बढ़ना है जो मस्तिष्क के लिये जहर काम करता है। तीसरा गुर्दो में रक्त वाहिकाओं द्वारा नहीं जा पाता अतः गुर्दे खराब हो जाते है, चैथा उच्च रक्तचाप का होना पांचवा एड्रीनल हारमोन का रक्त में न मिलना इत्यादि। विभागाध्यक्ष ने कहा वेरी गुड।

चैथा कुत्ता

इसमें शिराये फिर गुर्दे की शिराओं के ऊपर बांधी गई थी। उसे सुबह अस्पताल में “राउण्ड” लेना पड़ता था फिर प्रोफेसर को राउण्ड दिलाना होता था। उसे अब एक एक मरीज का नाम सहित मरीज की दशा का वर्णन करना पड़ता था। इसके बाद वह प्रयोगशाला में जाता था। शल्यक्रिया के प्रयोग बहुत समय लेते थे। शाम को फिर राउण्ड लेकर प्रोफेसर को राउण्ड दिलाना पड़ता था तब तक हर मरीज की जांचे प्रयोगशाला में एकत्रित करना पड़ती थी कि मरीज को दूसरे दिन आप्रेशन के लिये रखा जा सके। इमरजेंसी ड्यूटी की तरह ही “नाइट ड्यूटी” करनी पड़ती थी। जिससे कि रात भर “काल अटेण्ड” करना पड़ते थे अतः एक मिनिट भी सोने नहीं मिलता था। और दूसरे दिन फिर चाक चैबन्द रहना पड़ता था। चैथे कुते के ऊपर प्रयोग के परिणाम भी उत्साह जनक नहींे रहे। वह मर गया। उसे गड़वाना पड़ा।

पांचवा कुत्ता

सर्जरी डिपार्टमेन्ट में एक काफी क्लब था। लगभग ग्यारह बजे सभी प्रोफेसर, रजिस्ट्रार, डिमांसट्रेटर, एवं हाउसमेन एक साथ काफी का आनंद लेते थे। एक दिन वह भागता हुआ नीचे आया और हांफते हांफते असिस्टेन्ट प्रोफेसर से बोला। “सर, मेरे ड्यूटी रूम में एक लड़की आकर बेहोश हो गई है।” असिस्टेन्ट प्रोफेसर ने मजाक में कहा “तूने कुछ किया होगा” वह बोला “सर, मैनें कुछ नहीं किया” असिस्टेन्ट प्रोफेसर उसी मूड में बोले” तो जाओ कुछ करो।”

वह जाने लगा तो असिस्टेन्ट प्रोफेसर ने “कहा अब क्या फायदा। अब वह तुम्हारे कमरे को खाली करक किसी और कमरे में बेहोश होने को चली गई होगी।” उसने जाकर देखा तो सचमुच में उसका कमरा खाली था। पांचवे कुते के ऊपर भी आप्रेशन के परिणाम उत्साहवर्धक रहे। उसे हर प्रयोग के परिणाम आई.सी.ए.एम को भिजवाना पड़ते थे। इसी दौरान उसने केश बुक भरना भी सीखा जो उसे बाद में काम आया।

छटवां कुत्ता

एम.एस.एम.डी, या पी.एच.डी. करने के दौरान विभागाध्यक्ष की एक गुलाम की तरह सेवा पड़ती है उनके घर के सामान लाना, बीमार पड़ने पर उनके हाथ पैरो की मालिश करना इत्यादि सभी सेवायें करना पड़ती है। उनके मूत्र का नमूना प्रयोगशाला ले जाना यह सभी शामिल होता है। छठवें कुत्ते के आप्रेशन के परिणाम भी अच्छे नहीं रहे उसकी मृत्यु पर उसे धरती में गड़बाना पडा। उसके प्रयोगो की उसने थीसिस तैयार करके आइ.सी.एम.आर को भिजवा दी।

इसी समय वार्षिक परीक्षा निकट आ गई। उसे ज्ञात था कि जैसे एम.बी.बी.एस की तरह ही उसे जान बूझ कर फेल कर दिया जायेगा पर परीक्षा के तीन माह पूर्व एक अप्रत्याशित घटना घट गई। वर्तमान विभागाध्यक्ष का स्थानांतरण इंदौर हो गया एवं उनके स्थान पर डा. शर्मा आ गये, जिनके बारे में प्रसिद्ध था कि वे परीक्षा परिणाम निष्पक्ष देते थे। वार्षिक परीक्षा में लिखित परीक्षा में उसके सर्वाधिक अंक आये। मौखिक परीक्षा में अलाहाबाद एवं देहली से एक्सटर्नल आये थे। डा.शर्मा उसकी मौखिक परीक्षा उन दोनो के द्वारा लिया जाना देखते रहे। प्रोफेसर शर्मा ने कुछ नहीं कहा। उस रात उसके फस्र्ट एवं सेकण्ड शो की फिल्में देखी और आकर बेफिक्र हो कर सो गया। उसके चार वर्ष की कड़ी मेहनत का अन्त हो गया था। अब उसे नौकरी देखना थी।

विभागाध्यक्ष आई.सी.एम.आर की वह स्कीम इंदौर ले गये वह निवेदन करता रहा कि सर स्कीम पूरी होने में मात्र तीन माह बचे है। स्कीम में उसने ईमानदारी से मेहनत की है। उसके चश्मा, जूते एवं ब्रीफकेस चोरी हुये, एक विभाग खड़ा किया पर वे नहीं माने।

सातवां कुत्ता

मार्च 1996 में उसे ग्वालियर से भाइयों का दूरभाष आया कि उसकी छोटी बहिन ने जलकर आत्महत्या कर ली है। वह जल्दी ग्वालियर पहुंचे और हां, साथ में रूपये 50,000 लेकर आये कि वे लोग होटल में ठहरे है और उनके सारे पैसे खत्म हो गये है।

चंूकि गरीब होने के कारण उसे समय-समय पर धोखा दिया गया था अतः सन् 1973 में मेडिकल आफीसर के पद पर आकर भी नौकरी ईमानदारी से की अतः प्रैक्टिस न के बराबर रही। उसके पास रू. 50,000/- नहीं थे। उसने एक अन्य चिकित्सक डा. लुहाड़िया से ब्याज पर पैसे उधार लिये और तत्काल ग्वालियर रवाना हो गया। उन लोगो के होटल के उधार को चुका कर वह अस्पताल गया वहां देखा तो बर्न वार्ड में उसे

बहिन नहीं दिखाई दी। तब भाइयो ने एक काले जले हुये शरीर को दिखलाया जिसे देखकर वह स्तब्ध रह गया। उसने कहा "बेटा मन्त्रा, मैं आ गया हूँ।

मंत्रा ने कहा "भैया, अब मैं जा रही हूँ। मुझे कोई दर्द नहीं हो रहा है। मेरे जलने में इनकी कोई गलती नहीं है। मेरे बच्चों का ख्याल रखना।" वह चुप रहा। कुछ देर बाद मंत्रा ने प्राण त्याग दिये। मंत्रा का शरीर पोस्टमार्टम रूम में बेरहमी से पटक दिया गया। वहां 13 शव इधर उधर लावारिस पड़े हुये थे। केवल एक ही पोस्टमार्टम टेबिल थी। कुछ शवों पर झुण्ड की झुण्ड इल्लियां बिलबिला रही थी। चिकित्सक उनको साफ कर शवोच्छेदन कर रहा था। कुछ शवों के पेट फूल गये थे, बड़ा वीभत्स दृश्य था। उसकी बहिन को चिकित्सक की बहिन समझ कर पोस्टमार्टम कर दिया गया। उसका बहनोई स्वयं प्रभाव का वर्णन तो बहुत करता था। एक तरह से मैगालो मेनियक था। एक शव वाहन का इंतजाम भी नहीं कर सका। इसी बीच मंझले ने कहा भैया यहां से एस पी साहब मेरे पहचान के है। आप कहें तो इन लोगो से नपवा लें।

वह बोला ऐसी बचकाना हरकत मत करना। बच्चे वैसे ही बगैर मां के हो गये है। इनका बाप यदि जेल में गया तो बगैर बाप के भी जायेंगे। वे एक कलंक लेकर जीयेंगे सो अलग। 19 वर्ष पश्चात उसकी भानजी की शादी सन् 2016 में हो गई। उसे आमंत्रित नहीं किया गया। उसे एक संतोष हुआ। नवंबर सन् 2016 को ही बैंक में जाकर उसने स्वयं का जीवित प्रमाण पत्र दिया और गायब हो गया।

मार्च 2016 को ग्वालियर में साधु प्रकट हुआ। वह साधु हस्तरेखा विद था और लोगो का भूत भविष्य और वर्तमान स्पष्ट रूप से बतलाता था। ऐसे लोगो के पास भीड़ लग ही जाती है। मुफ्त में लोगो को कुछ भी मिल जाये तो वे कुछ भी झपट लेते है। उस साधु के पास हिमान्त भी गया। साधु ने कहा "बच्चा तुम्हारी पहली पत्नी ने आत्महत्या की थी।" हिमान्त चकित रह गया। साधु ने फिर कहा तुम्हारी दूसरी बीबी भी तुम्हे छोड़ कर भाग गई।" हिमान्त बोला "सच है गुरू जी।" साधु बोला "उसने तुम पर "केस" कर दिया है" जी गुरूजी हिमान्त बोला साधु बोला" वह कहती है कि वह तुम्हारी पहली पत्नी की हत्या का भी केस तुम पर चलायेगी।" हिमान्त गिड़गिड़ा कर बोला "इसी का तो डर है गुरूजी" साधु ने कहा "कुछ नहीं होगा रात को रू. 5000/-लेकर मेरे पास आ जाना एक अनुष्ठान करवा दूंगा।"

रात को धड़कते दिल से हिमान्त ने साधु के आश्रम में पहुंचा। साधु ने उसे प्रेम से बिठाया। एक वेदी के सामने बैठा कर उसे कुछ पवित्र मीठा पेय दिया। उसे पीकर हिमान्त को नींद आने लगी फिर बेहोश हो गया। दूसरे दिन दो घटनायें हुई हिमान्त आश्रम में जला हुआ पाया गया और साधु गायब हो गया। तीन महिने तीन दिन बाद वह वापिस आया तो पत्नि ने भय से पूछा कहां थे तुम तीन महिने। उसने कहा

“सातवां कुत्ता मारने।” पत्नि ने पूछा क्या मतलब मैं समझी नहीं” ? वह बोला” कुछ दिनों में समझ जाओगी।” चार महिने बीत गये एक दिन ग्वालियर की पुलिस उसे ढूंढती आ गई। इंस्पेक्टर ने उसे धारा 302 में गिरफ्तार कर लिया। उसने इंस्पेक्टर से स्वयं ही पूछा” आप कैसे जाना कि हिमान की हत्या मैनें की है।

इंस्पेक्टर ने प्रति प्रश्न किया “जब वह नशीली दवाइयों से मर ही गया था तब आपको क्या आवश्यकता थी कि आप उसकी इन्फीशियर वेना केवा (उदर की वह नली जो शरीर के निचले हिस्से का खून ऊपर ले जाती है) को बांधे।

डाक्टर ने जवाब दिया “जब मैनें उसे मार डाला तब वह मुझे एक मृत कुत्ते के समान लगा। मुझे लगा कि उसके गुर्दे के ऊपर इंफीनियर वेना केभा को बांध ही देना चाहिये। उसे कुत्ते की मौत मरना चाहिए। इंस्पेक्टर ने जवाब दिया “डाक्टर साहब आपकी यही इन्सट्क्टि हमें आपके पास ले आई। हमनें पिछले पचास वर्ष की एम.एस. के इस विषय पर शोध पत्र खंगाले और आप मिल गये।

कड़वा देगा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

किसी गैर को घुसने दोगे, आपस में लड़वा देगा।

मीठा मीठा बोलेगा, अंजाम मगर कड़वा देगा।।

आगे आगे गले लगेगा, पीछे चाकू घोपेगा।
धीरे धीरे सभी चमन के फूलों को झड़व देगा।।

जिन्दा नहीं एक भी इस बस्ती में, शहर लाश घर है।
अगर वहाँ आवाज उठाओगे, जिन्दा गड़वा देगा।।

झण्डा लेकर अगर चलोगे पीछे कई लग जायेंगे।
उनमें से पीछे से कोई, गोली भी जड़वा देगा।।

एक जिन्न है यहाँ, मगर जिन्दा लोगो पर भारी है।
अपना लाभ उठाने, भाई भाई को लड़वा देगा

चुनाव की भगदड़

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

नेता वह जो ताने मारे, क्योंकि नेता का उल्टा ताने होता है। वह विरोधी दल के नेताओं को ताने मारता है। वे ताने उसी के पास लौट कर आ जाते है। विरोधी नेता उन्हें ब्याज सहित वापिस लौटा देता है। इस तरह हमारे देश में तानों की कबड्डी होती

रहती है। हर पांच साल में उन्हें देश पर संकट दिखने लगता है, हालांकि वे ही देश पर संकट के मां बाप होते हैं। वे यदि उनके प्रशीतित कक्षों से बाहर न निकले तो देश जैसे भी हो, चलता रहता है। ये देश की चाल में रोडे है, बाधा दौड़ में बाधायें है, खो खो की सीटी है, क्रिकेट में बल्लेबाजों के लिए एम्पायर की उंगलियों की गोलाई है, फुटबाल और हाकी के गोल है, लोकसभा के बर्हिगमन है। वे आजादी के लिये फतवा हैं, दंगे रूपी जहांगीर के अकबर और जोधा बाई है ब्रह्नन ज्ञान के रास्ते की वासना है संक्षेप में वे नेता है। नेता नारा है तो जनता नारी है। वह इंतजार में रहती है कि कब नेता जी घी डालें और कब वह दंगो जैसी आगी में कूदें। नेता की अंग्रेजी होती है स्मंकमत। इसका उल्टा होता है तमकमंस यानि आपस में सौदेबाजी। हम उनके लिये लड़ते है और वे आपास में सौदेबाजी करते हैं।

हम दंगे की गेंद है जो नेता की ठोंकरो पर लुढ़कती रहती है। देश संकट में तभी आता है जब चुनाव आते है। तब हमें नेताजी बतलाते है कि देश संकट में है। चुनाव के बाद देश में फिर शांति आ जाती है। शांति और संकट की एक राशि है। यदि संकट और नेता का चोली दामन का साथ होता है। दल का उल्टा है लद। हर दल जनता पर लदा है। जनता केंचुआ है फिर भी मंहगाई उसकी कमर तोड़ देती है। नेता कहता है कि सामने का नेता चोर है। सामने का नेता कहता है कि आमने का नेता चोर है दोनो नेता आमने सामने है। चंूकि चोर चोर मौसेरे भाई होते है अतः दोनो चोर है।

देश में अनेक जनता दल है, अनेक कांग्रेसी है, अनेक पार्टियां है, एक कोई नहीं। इतने दल है कि देश दलों का दलदल हो गया है। सब दल, जनता एवं देश की भलाई करना चाह रहे है। जब सबका ध्येय एक है तो आपस में लड़ते क्यों है यह छोटी सी चीज लेखक की विशाल समझ से बाहर की चीज है एक पार्टी कहती है कि हम हिन्दु हैं और हमें मुसलमानों से लड़ना है तो दूसरी कहती है कि हम मुसलमान है और हमें हिन्दुओं से लड़ना हैं। कम से कम चुनावों तक तो लड़ना ही है। फिर जाओ भाड़ में भाड़ में ही शांति है।

चुनाव आने पर नेताओं और जनता में भगदड़ मच जाती है। नेताओं में टिकिट के लिये भगदड़ और आम आदमी में खास नेताओं की सभा में जाने की भगदड़। एक आदमी को तीन तीन सभाओं में जाना पड़ता है क्योंकि उसने तीनों नेताओं से उधार लिया होता है जो उसे ब्याज के साथ पांच वर्ष तक चुकाना पड़ता है। भगदड़, भागदौड़ का संक्षिप्त रूप है। उसमें मात्राऐं नहीं हैं। मात्राऐं बल देती हंै। भगदड़ एक लक्ष्य विहीन भागदौड़ है।

चुनाव में किसका चुना जाना है और किसकी नाव डूबती है ये महात्मा गांधी तय करते हैं प्रत्याक्षी की योग्यता या जाति समीकरण नहीं। बहुत मंहगे हो गये हैं। महात्मा

गांधी। बड़े नोटो पर छपते हैं। और खादी ! जिसका अविष्कार महात्मा गांधी ने किया था, आज बापू होते तो वह भी उसकी लंगोटी नहीं खरीद पाते। इतनी मंहगी हो गई है खादी।

पाठको ! जब आप चुनाव समाचार देखे तब आपको एक कापी और पेन कलम साथ में रखना चाहिये। यह आपके ज्ञान वर्धक के लिए आवश्यक है तब आपको ज्ञात होगा कि किस नेता के पूर्वज चोर थे, किस नेता के पूर्वज उचक्के थे, किस नेता के पूर्वज लुच्चे थे और किस नेता के पूर्वज लफंगे थे। उनके बारे में जो आप अभी तक पढ़ते आये थे वह अब तक "चस" यानि सच का उल्टा था। आपने बेकार में अपना कीमती समय पांचवी या छटवीं कक्षा में उन्हें आदर्श पुरूष मानने में बर्बाद कर दिया। चुनाव में प्रत्याशियों की जो भगदड़ मचती है तो मतदाता यह देख कर दंग रह जाता है कि कौन किस दल से आ रहा है और कहां जा रहा है। प्रत्याशियों की मरी आत्माएं जागृत हो जाती है। वे अ दल से ब दल में, ब से मे में क से ड में और ज्ञ से अ दल में घुस रहे है।ं वर्ण व्यवस्था व्यंजन व्यवस्था की ओर भाग रही है।

चुनाव आयोग धन्यवाद का पात्र है कि एक नोटा नामक प्रत्याशी भी खड़ा कर दिया है जो हर क्षेत्र में हर प्रत्याशी के विरोध में खड़ा रहता है पर वह चुना नहीं जाता। उसे केवल मत ही दिया जा सकता है। वह कोई भला या बुरा नहीं कर सकता। वह ब्रह्नम है उदासीन है। बस है।

चुनावों के समय दिवंगत महापुरूषों को स्वर्ग में हिचंकियां आने लगती है। हरेक दल मुछ्दो के सहारे चुनाव लड़ना चाह रहे है, खुद की नीतियों के सहारे नहीं स्वर्गीय महापुरूषों पर डाके पड़ने लगते है। वे कहते है कि वे उनके दल के हैं और ये कहते है कि उनके दल के है। उनको दला जा रहा है, निचोड़ा जा रहा है, उनकी मूर्तियों की रस्साकशी हो रही। वे बेचारे सोच रहें है कि महापुरूष क्यों हुये और यदि महापुरूष हुये तो स्वर्गीय क्यों हुये।

दलों के स्वाभिमानी कद्दावर नेता, अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के पैरों की कालीन बने जा रहें हैं लगता है कि चुनाव नहीं, चुनावों पर फिल्म बन रही हो। बायोपिक्स की बाढ़े आ रही हैं। शूटर्श से सम्पर्क किये जा रहे है। टी.व्ही. चेनल्स पर मुर्गे लड़ाये जा रहे है। सोशल मीडिया में नये पन्ने जोड़े जा रहे हैं और पुराने फाड़े जा रहे हैं। हर नेता के मंुह से कीचड़ निकल रहीं है। टांगे खीचनें की प्रतिस्पर्धा चल रही हैं। इस तरह चुनाव की ऋतु पूरे उछाल पर है।

लागत से सस्ता

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

आम आदमी हालातों की जद में फंसता गया।
और जमाना उसकी बेचारी पर हंसता गया ।।
कीचड़ की ताकत तो देखो उसे खींचती गई।
जितनी बाहर आने की कोशिश की धंसता गया।।
होती गई मजबूत सियासत उसकी ताकत से।
और सियासत का फंदा उस पर ही कसता गया।।
कोशिश की पिंजरे से बाहर आने की बेहद।
उसका तार सांप बन कर पंक्षी को डंसता गया।।
पेड़ उखाड़े जंगल के झोपड़िया गांवो की।
उन्हें निगल कर पत्थर का एक कस्बा बसता गया।।
रहे झुका कर सर को चलते एक सिलसिला था।
जहां उठाया सर हाथों से वह भी रस्ता गया।।
हमें फेंकना पड़े टमाटर, प्याज रास्ते में।
उनका बिकना क्या बिकना लागत से सस्ता गया।।

दुश्मन पड़ोसी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पड़ोसी हो और कोई अनबन न हो।
और और उनकी चाल में अकड़न न हो।।
गरदन सुबकते बच्चों की खंजर के तले।
और शैतान के भी दिल में जो धड़कना न हो।।
जो दुनिया जलाते है बनाने वाले की बनी।
तो उनमें दिल भी शायद क्या ? यकीनन न हो।।
उन सांपो के फन पीछे और आगे हंसी है।
कुचलते तुम जहां हो वहां कोई फन न हो।।
हमें तो फकत गाली देता है तेरा कुत्ता।
तुझे इस तरह निगल लेगा कि फिर तड़पन न हो।।

अन्दर जैसे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अश्क हो आंख के अंदर जैसे।
सीप में एक समन्दर जैसे।।
वो शख्श दिल में लिये फिरता है,
कैद में एक बवन्डर जैसे।।
शांत बाहर हूँ, दिल में लहरें हैं।
समन्दर उल्टा हो अन्दर जैसे।।
हमने तो एक सी किस्मत पाई।
क्षितिज तक जमीं हो वन्जर जैसे।।
आपकी हंसी ऐसी लगती है।
शहद में तर-व-तर खन्जर जैसे।।

कीचड़ से पानी धोना

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कुछ तो अपने हाथ खुले हैं
कुछ लक्ष्मी भी चंचल है

आवक एक मुश्त छोटी सी
लेकिन खर्चा पल पल है

प्रजातंत्र की बात न पूछो
प्रजातंत्र के क्या कहने
जितने दल है सब में दल दल
हर दल में एक दल दल है

इन्कलाब दौलत के आगे
आगे जाम लगता है झुक कर
इंकलाब की मदिरा धन के
साथ छलकती कल कल है

झूठ चीख कर बोला आखिर,
जीत हुई सच की देखो।
और हार कर सच बोला कि,
सच कहने का ये फल है।।

कीचड़ कहती है कीचड़ हम,
नहीं सहेंगे तिल भर भी।
कीचड़ से पानी धोने की,
इस बस्ती में हलचल है।।

किनारा छोड़ दिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

किनारा पा के किनारा छोड़ दिया।
पास थी मंजिल तो रास्ता मोड़ दिया।।

खिलौना वक्त पे मुझको न मिला।
देर से आया खिलौना तोड़ दिया।।
खा के धोखा उसी को चाहा किये।
नाम सिरफिरो में अपना जोड़ दिया।।
प्यास थी गर्मियों की धूप में।
तुम रहे प्यासे तो मटका फोड़ दिया।।
सर्दियों में तुम्हे कम्बल भेंट कर।
पत्थरों पर आस्मा को ओड़ लिया।।

जिन्दगी फिसल गई

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तुम तक पहंुचने में जिंदगी निकल गई।
जीवन को बिताने में जिंदगी फिसल गई।।
वीरान बस्ती हो गई तुम छोड़ कर गये।
गैर हाजिरी में तुम्हारी बस्ती बदल गई।।
कागज के फूल चमन में सब लगाने लगे।
तितली चमन को छोड़ कर दीपक में जल गई।।
फूल कम्प्यूटर खिलाता है चमन में अब,।

बहारें कम्प्यूटर के मानीटर में ढल गई।।
जज्बात फर्ज हो गये कुछ दिन में क्या करें।
दिल जलता है पर हँसने की आदत सी चल गई।।

उदर में कटे सिर का प्रश्न

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं गहरी नींद में था कि कालबेल जोर से चीखने लगी। चिकित्सको के कर्तव्यों के कारण उनका पूरा परिवार एक अनिश्चित तनाव में रहता है। जब रात को दो बजे दरवाजे की कुण्डली खटखटाई जाती है तो पूरा परिवार भयाक्रान्त होकर जाग जाता है। चिडचिड़े मूड से मैेने दरवाजा खोला तो अपेक्षानुसार अस्पताल से बुलावा था कि असहनीय पेट दर्द का एक प्रकरण मेडिकल वार्ड में भरती है सब डा. स्थापक के अनुसार एक मरीज का आप्रेशन होना चाहिये।

वस्त्र बदल कर मैं एम्बुलेंस में बैठा और एम्बुलेंस अस्पताल की तरफ दौड़ने लगी। आदतन मैनें बाबा की तरफ देखा वे हमेशा की भांति जाग रहे थे। उस समय छिन्दवाड़ा इतना सुरक्षित था कि उतनी रात को भी इक्का दुक्का लड़कियां घूमती मिल जाती थी। डा. स्थापक महिलाओं के मेडिकल वार्ड में ले गये। उन्होने एक महिला को दिखाया जो कि सदमें में थी। उसे पसीना आ रहा था। उसकी सांस तेज चल रही थी। आंखे बेचैनी से यहां वहां देख रही थी। नब्ज कमजोर और तेज चल रही थी। रक्त चाप

90/50 था। पेट कड़ा था और छूने पर उसे अत्यन्त दर्द हो रहा था। यानि कि उसे एक्यूट एडोमन था। एक्स रे में यकृत के ऊपर गैस की छाया थी। इसका तात्पर्य था कि उसके आमाशय से लेकर बड़ी आंत तक कहीं छेद हो गया था। मैनें उसे सरकारी वार्ड में स्थानान्तरित किया। उसे आप्रेशन की तत्काल आवश्यकता थी।

मैनें तत्काल आप्रेशन थियेटर की नर्स श्रीमती दास एव सनेस्थिस्ट डा. हेमन्त नायडू को बुलवा भिजवा दिया। दोनो ही ड्यूटी के मामले में ईमानदार थे। (अब सेवा निवृत हो गये है) उनके आने तक मैं ड्यूटी रूम में बैठ कर उस महिला के पति से प्रकरण के बारे में सूचना लेने लगा। जिला अस्पताल में ऐसे प्रकरण रात को ही आते है। अपराध और दुर्घटनाये रात को ही घटित होती है। जो आप्रेशन हम करने जा रहे थे वह बगैर खून के नहीं हो सकता था। मैनें उस महिला के पति से कहा यह एक बड़ा आप्रेशन है। इसमें महिला की जान को खतरा है। इस आप्रेशन के लिये दो यूनिट खून की जरूरत पड़ेगी। तुम एक यूनिट खून तो दे ही सकते हो।" वह भड़क गया और बोला "मैं खून नहीं दूंगा" ।

मैनें समझाया तुम्हारे खून देने में तुम्हे कोई नुकसान नहीं होगा और तुम्हारी पत्नि की जान बच जायेगी।" वह बोला बात यह नहीं है साहब, मैं खून दूंगा तो हमारा खून का रिश्ता हो जायेगा। वह मेरी बहिन हो जायेगी। मुझे बहुत गुस्सा आई खून न देने के लिये लोग विचित्र तरह के बहाने ढूंढ लाते है। कुछ कहते है कि उनमें खून की कमी है कुछ कहते है कि उन्हें पीलिया, मलेरिया, सिकिल सेल, एनीमिया मधुमेह या यहां तक कि सिफिलिस है पर यह एक नये तरह का बहाना था।

मैं गुस्सा हो गया। मैनें कहा "यदि ऐसा है तो तुम तुम्हारी पत्नी को नागपुर ले जाओ।" उस मक्कार ने जवाब दिया अच्छा सर आप आप्रेशन तो चालू कर दें मैं तब तक खून का इंतजाम करता हूँ।" उसके आश्वासन पर हमने मरीज को आप्रेशन थियेटर में ले लिया। डा. नायडू ने बहुत सावधानी पूर्वक श्वास नली में ट्यूब डाली और उसे वायरल उपकरण से जोड़ दिया। उन्होने एनीस्थीसिया हल्का ही रखा।

मैनें महिला के पेट में चीरा लगाया। अंदर कुछ भी निकल सकता था। उदर को जादू का पिटारा कहते है। हमें हर परिस्थिति के लिये तैय्यार रहना पड़ता है। पर जो स्थिति निकली उसके लिये हम कतई तैय्यार नहीं थे। उदर गुहा में बहुत अधिक खून था। उसक "सक" करने पर एक बच्चे का कटा हुआ सर था। महिला की जच्चा दानी फटी हुई थी। हमारे होश उड़ गये। हमें आश्चर्य मिश्रित वीभत्सता हुई इसका तात्पर्य था कि उस आदमी ने किसी अ-प्रशिक्षित नर्स या दाई से एक पूर्ण विकसित बच्चे का आपराधिक गर्भपात करवाया था। उससे धड़ तो बाहर आ गया था। फिर सम्भवतः

महिला की हालत खराब हो गई होगी तो उसने शिशु की गर्दन काट दी होगी और महिला को शासकीय अस्पताल भेज दिया होगा।

अल्ट्रासोनोग्राफी मशीनों ने गर्भस्थ शिशुओं पर लड़की होने के शक में कई गर्भपात करवाये हैं। जबकि मेरा यह अनुभव है कि जिले की सैकड़ो अल्ट्रासोनोलाजिस्ट्स से किसी को भी गर्भस्थ लिंग निर्धारण का ज्ञान नहीं होता।

वह सिर वेदना में दिख रहा था मानो कह रहा हो कि मैनें तुम्हारी क्रूर दुनिया देख ली। मेरी मां को तुम लोगो ने कितनी यातनायें दी है उस कटे सिर के बाल मुलायम चेहरे पर लेनुगो लगा हुआ था। आंखे बंद थी कटी गरदन की एक एक नस दिख रही थी। उस की गरदन की रीढ़ की हड्डी कटी हुई थी। उस की आत्मा का अब न जाने कहां होगी पर जहां भी होगी इस धरती पर दुनिया से ज्यादा सुखी होगी।

डा. हेमन्त नायडू ने कहा सर, उदर को जल्दी बंद कीजिए मरीज सिंक कर रहा है।” मैनें अति शीघ्रता से उदर बंद किया और महिला को बोतल एवं आॅक्सीजन लगे हुये ही वार्ड में भेज दिया। आप्रेशन थियेटर के दरवाजे पर ही वह मर्द मुस्कुराता हुआ मिल गया। मैनें पूछा “खून का क्या हुआ।” वह दुष्ट बोला “डाक्टर साहब खून का इंतजाम नहीं हुआ। चाहे जितना मंहगा मिले अस्पताल में ही इंतजाम करवा दीजिये। आपकी भी चाय पानी का इंतजाम करवा दूंगा।”

मेरे गाल पर उस आदमी ने थप्पड़ मारा था। मैनें आप्रेशन थियेटर में रामलाल (वार्ड ब्वाय) से कहा कि बच्चों के सिर को पैक करके सील कर दो और उस पर मेरे “सिग्नेचर” करवा लेना।”

उस आदमी को लगा कि मैं प्रकरण शायद पुलिस को देने वाला हँू। तो वह आक्रमक हो गया। रात की शांति भंग करके चिल्लाने ला “तूने हमारे बच्चे और घरवाली को मार डाला। मैं अभी पुलिस में रिपोर्ट करने जा रहा हँू और गाॅव वालों को लाकर तेरा घेराव करूंगा। मेरी बीबी यदि मर गई तो मैं तेरी बीबी को उठवा लूंगा।”

मैं इस परिस्थिति के लिये तैय्यार था। मैनें शांति से जवाब दिया “पुलिस में रिपोर्ट तो मैं करने जा ही रहा हँू। जहां तक तुम्हारे द्वारा कोई अपराध करने का प्रश्न है तो ये गलती मत करना। मैनें पुलिस को फोन कर दिया है वह आती ही होगी। ” वह बड़बड़ाता रहा। मैं रात को ही मुख्य चिकित्साधिकारी के बंगले पर गया। घंटी सुन कर वह आँख मलते हुये बाहर आये। मैनें पूरा प्रकरण उन्हें बतलाया। वह बोले “पुलिस में रिपोर्ट मत करना लफड़ा हो जायेगा और विभाग बदनाम हो जायेगा।” मैं आश्चर्य चकित हो गया और चुपचाप वापिस अस्पताल आ गया।

उन दिनों डाॅ. पंडित साहब सिविल सर्जन थे। वे एक निहायत ही धैर्यवान एवं विद्धान चिकित्सक थे। उनके माध्यम से मैनें प्रकरण की सूचना पुलिस को दे दी। घर

आकर मैनें एक नींद की गोली खा ली। पत्नि समझ गई कि फिर कोई संजीदा प्रकरण हो गया है। सुबह जैसा कि अपेक्षित था, सारे स्थानीय अखबार मेरी आलोचना से भरे पड़े थे। उनका मुख्य आरोप था कि आप्रेशन के पहिले मृत महिला का परीक्षण किसी महिला चिकित्सक से क्यों नहीं करवाया और खून के अभाव में मैनें उस महिला का आप्रेशन क्यों कर दिया। तीन चार दिन मेरी आलोचना अखबारों में होती रही फिर प्रकरण ने अचानक मोड़ ले लिया।

उस व्यक्ति ने चंदनगांव की किसी नर्स को मोटी रकम देकर पूर्व विकसित शिशु का गर्भपात कराने का प्रयत्न किया था। अखबारों ने लिखा था कि उक्त नर्स पहिले पहले भी इस तरह के वीभत्स कार्य कर चुकी है पर उस पर कोई आपराधिक प्रकरण दर्ज नहीं हुआ। उस पर अपराधिक प्रकरण इस बार भी दर्ज नहीं हुआ।

स्वीकारोक्ति

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

डी एण्ड सी एक बहुप्रचिलित शब्द है इसका पूर्ण रूप है डायलेटेशन एण्ड क्यूरेटाज। इस क्रिया में गर्भाशय का मंुह चैड़ा करके एक चम्मचनुमा औजार से गर्भाशय की आन्तरिक झिल्ली को खुरच खुरच कर बाहर निकाला जाता है। फिर इसे खुर्दवीन से देखने के लिये पेथालाजी विभाग में भेजा जाता है।

यह क्रिया रोगों को जानने, इलाज या चिकित्सीय या आपराधिक गर्भपात के लिये की जाती है। मैनें सर्जन होने के नाते इस क्रिया को महिलाओं पर एक चैलेंज के रूप में करना प्रारम्भ किया। मुझे याद नहीं कि मैनें इसे शायद अर्थोपार्जन के लिये किया हो या नहीं भी किया हो। पर मेरे मित्रों एवं रिश्तेदारों ने अवांछित प्रसव एवं गर्भपात के लिये मेरा पर्याप्त दोहन किया।

चिकित्सकीय गर्भपात कानून के तहत इसके कुछ नियम है जैसे:

(1) यह क्रिया एमबीबीएस से कम उपाधिधारियों द्वारा नहीं की जायेगी।

(2) यदि चिकित्सक मात्र एम.बी.बी.एस. है तो उसे चिकित्सकीय गर्भपात का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है।

(3) गायनोलाजिस्ट जो एम.एस. या एम.डी. है उन्हें प्रशिक्षण लेना अनिवार्य नहीं है।

(4) यह क्रिया चिन्हिनत चिकित्सा संस्थाओं में ही की जायेगी।
(5) यह क्रिया तभी की जा सकेगी जब सामान्य प्रसव से माँ की जान को खतरा हो या
(6) गर्भस्थ शिशु में जन्मजात विकृति हो या
(7) प्रसव से मां की मानसिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ता हो।
(8) प्रसव तीन माह से कम का हो। यदि प्रसव तीन माह से छः माह का हो तो दो विशेषज्ञों की तत्संबंधी सलाह या सहमति आवश्यक हो।
(9) यह क्रिया शिशु के लिंग निर्धारण के लिये नहीं की जा सकेगी। यह एक आपराधिक प्रकरण माना जायेगा।
(10) इस क्रिया के समय गर्भवती स्वस्थ मानसिक स्थिति होना आवश्यक है।

ऐसे अवसर पर गर्भपात करने वाले चिकित्सक गर्भपात की प्रेरणा देने वाले व्यक्ति समान रूप से दोषी माने जायेंगे। तो मैं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में यह आप्रेशन किया करता था। सही निश्चेतना में यह एक दर्द विहीन क्रिया है। मैनें मूर्ख बन कर न जाने चिकित्सकीय गर्भपात किये होंगे। इन क्रियाओं में मैं अपने को पेश की जनसंख्या नियंत्रण करने वाला देश भक्त मानता था पर एक दिन

जब मैं गर्भपात कर रहा था तो एक धार के साथ एम्नीयाटिक फ्लड आ गया। फिर तो मुझे ओवम फोरसेप (शिशु के अंग निकालने वाला उपकरण) उपयोग करना पड़ी। उसके उपयोग से पहले एक छोटा या नाजुक हाथ टूट कर बाहर आ गया। वह फूल सा अंग देख कर मुझे बड़ा पश्चाताप हुआ। पर अब वे टुकड़े टुकड़े में शिशु के पूरे नाजुक नाजुक अंग निकालने के लिये विवश था जब तक कि वह पूरा नाजुक पौधा जमीन से नहीं उखड़ गया। एक गर्भाशय की आन्तरिक झिल्ली को खुरच खुरच कर बाहर न निकाल दिया।

जब इसकी सूचना कथित रिश्तेदार को दी तो वे बहुत खुश हुये, पर मैं पश्चाताप से भर गया। मैनें सोचा कि मैं इन क्रूर पुरूषों के स्वार्थ भरे रिश्ते की भावना में ये कलियां उखाड़ने (डि फ्लोरेशन) का काम क्यों कर रहा हँू ? मुझे उस रात सपने में चारो तरफ नाजुक-नाजुक फूल जैसे शिशुओं के अंग दिखते रहे।

दूसरे दिन मैनें सोचा, शायद इसीलिये मेरी शादी के पन्द्रह साल होने तक भगवान ने मुझे संतान सुख से वंचित रखा है। तब मैनें प्रण कर लिया कि मनोरंजन के लिये मैं यह घिनौना कार्य नहीं करूंगा। उसी के पश्चात भगवान ने मुझे दो फूल सी लड़कियां संतान के रूप में दी। इसके बाद ही मैनें स्वयं पर पुरूष नसबंदी करा ली।

छिन्दी का प्रकरण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं एक एल.टी.टी. सर्जन भी हूँ एल.टी.टी. का तात्पर्य है लेप्रोस्कोपिक ट्यूवेक्टाजी या लेप्रोस्कोपिक ट्यूब टाइग। सरल भाषा में इसे दूरबीन पद्धति से महिला नसबंदी भी कह सकते हैं मैनें लगभग पचास हजार महिला नसबंदियां की है और सभी सफल रहीं है। लगभग पाँच हजार सफल पुरूष नसबंदियां की है। मैनें दो पुत्रियों को जन्म देने के बाद स्वयं की भी वासेक्टामी करवाई है। इस तरह भारत सरकार की जनसंख्या नियंत्रण नीति में मेरा भी छोटा सा योगदान रहा है।

वह एक धुंधलकी शाम थी। कई महिलायें नसबंदी करवाने के लिये तैय्यार थी। तब भारत सरकार के नये नियम नहीं आये थे, अतः कभी कभी तीन सौ नसबंदियां भी चार या पांच शिविरों में करना पड़ती थी। उस शाम को लगभग पन्द्रह आप्रेशन मैं कर चुका था। सम्भवतः पचास आप्रेशन करना थे। जब मैं आप्रेशन करता था तो मेरी नजरें चारो तरफ देखती रहती थी। मैने देखा कि एक महिला को चार कार्यकर्ता आप्रेशन के लिये ला रहे थे जो एक असमान्य बात थी। किसी भी महिला को टेबिल तक लाने में एक ही कार्यकर्ता पर्याप्त होता है। वे उस महिला को अप्रत्याशित शीघ्रता से टेबिल पर लिटाना चाह रहे थे मैनें उन्हें रोक दिया और परीक्षण के लिये महिला को वहीं फर्श पर लिटा दिया।

मैनें देखा कि उस महिला की कलाई और गरदन के पास नब्ज नहीं थी। सांसे एवं दिल की धड़कने रूक चुकी थी पुतलियाँ फैल गई थी और प्रकाश से प्रतिक्रिया नहीं कर रही थी। यानि कि उसकी मृत्यु हो चुकी थी। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि कार्यकर्ता महिला को टेबिल पर लिटाने की इसलिये शीघ्रता कर रहे थे कि एक बार सर्जन का चाकू लगे तो मृत्यु का कारण वे सर्जन पर थोप देते।

मैनें प्रकरण की जांच करना प्रारंभ की तो मालूम पड़ा कि उसे इन्जेक्शन एट्रोपीन के स्थान पर इन्जेक्शन एड्रीनेलीन लगा दिया गया था जो कि किसी भी पस्थिति (सिवा दिल के रूकने पर) 1ः1000 से अधिक ही नहीं दिया जाता। पर उन्होने पूरा लगा दिया था।

मैनें दोनो इन्जेक्शनों को सील किया और उस पर हस्ताक्षर कर दिये। फिर मैनें प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के प्रभारी को बुलवाया। वे बंगले पर आराम फरमा रहे थे। यह अनियमितता मैनें कई प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर देखी कि मैं आप्रेशन कर रहा हूँ

और प्रभारी बंगले पर प्रायवेट प्रैक्टिस कर रहे है। वे सील्ड इन्जेक्शन एक तहरीर के साथ तामिया के पुलिस स्टेशन पर दे दिये और एफ.आई.आर लिखवा दी। मैनें प्रकरण की सूचना तत्कालीन सी.एम.एच.ओ को दी। उन्होने प्रश्न किया यदि आप्रेशन के दौरान किसी महिला की मृत्यु हो जाये तो शासन के क्या आदेश है ?

मैनें जवाब दिया “पति को मुआवजे के तौर पर बीस हजार रूपये दे दिये जाते है।” “तो ठीक है” उन्होने जवाब दिया इसका भी प्रकरण बना दो।” मैनें जोर देकर कहा” पर सर उसके दो छोटे बच्चे भी है उन्हें कौन पालेगा ? वह तो परिवार की घुरी थी।” उन्होने तेज आवाज में कहा “हो गया तुम्हारा हिन्दी साहित्य” । मैनें प्रत्युत्तर में कहा “तो जिन्होने इतनी भयानक गलती की है उन्हें सजा क्या नहीं मिलनी चाहिये।”

उन्होंने फोन रख दिया।

बांयी तरफ एपेन्डिक्स

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एपेन्डिक्स अमूमन उदर के दाहिने तरफ के निचले भाग में होता है। एपेन्डिक्स मानव शरीर के लिये एक अनुपयोगी अंग है। मानव के विकास के साथ साथ कुछ अंग अनुपयोगी हो गये है जैसे कान का बाहरी भाग भी। हालांकि एपेन्डिक्स गौवंश में काफी बड़ा होता है और पाचन में सहायक होता है पर मानवों में 5 से 10 सेमी का ही होता है। मगर जब एपेन्डिक्स का संक्रमण हो जाता है तब वह एक जान लेवा परिस्थिति बन जाती है। इस दशा को एपेन्डिसाइटिस कहते है। तब इसका तत्काल आप्रेशन कर एपेन्डिक्स को काट कर बाहर निकाल देना चाहिये। यह आप्रेशन दर्द के अड़तालीय घंटो के अंदर हो जाना चाहिये।

एपेन्डिसाइटिस में उदर के निचले भाग में भयानक दर्द होता है। उस स्थान पर हाथ भी नहीं लगा सकते है क्योंकि व्यक्ति सीधा पड़ा रहता है। सांस लेने में भी कष्ट होता है। उल्टी आ सकती है। हल्का या तेज ज्वर हो सकता है। एपेन्डिसाइटिस की क्लिटायें जानलेवा हो सकती है। वह फट भी सकता है तब व्यक्ति शॉक में जा सकता है। उदर गुहा में पीव पड़ सकती है, तब जाड़ा देकर बुखार भी आ सकता है। उदर मे े यकृत में भी पीव पड़ सकती है।

दाहिनी तरफ भी एपेन्डिक्स की स्थिति निश्चित नहीं रहती है वैसे तो वह नीचे की तरफ रहता है पर बड़ी आंत के पीछे भी रह सकता है। जो प्रकरण मेरे पास आया वह उदर के बांयी तरफ दर्द बतला रहा था मगर बाकी चिन्हन एपेन्डिसाइटिस के ही थे। जग उसका एक्स रे लिया गया तो यकृत बांयी तरफ था एवं ह्नदय दांयी तरफ था यानि यह प्रकरण साइटस इन्वर्सस टोटेलिस का थ जिस अवस्था में सारे अंगो की स्थिति उलट जाती है। इसी आधार पर उसका आप्रेशन बांयी तरफ किया गया और मेरा अनुमान सही निकला।

सही में उभयलिंगी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ऐसे प्रकरण बहुत कम ही होते है जब किसी पुरूष में अण्डकोष के साथ टेस्टेस के साथ उदर में पूर्ण विकसित गर्भाशय डिम्ब और डिम्ब वाहनियां हो। जिला चिकित्सालय छिन्दवाड़ा में एक हर्निया का प्रकरण आया। कोई भी शल्यक्रिया विशेषज्ञ उसका आप्रेशन करने को तैय्यार नहीं था। अब इतने छोटे आप्रेशन के लिये उसे नागपुर भेजा जाये तो उस गरीब के लगभग पचास हजार रूपये खर्च हो जाते जो वह खर्च करने के लिये असमर्थ था।

वह व्यक्ति मेरे पास आया तो मैनें आप्रेशन लिस्ट में रख लिया। आप्रेशन के समय वह परिस्थित आ गयी जिसने हमें अचम्भे में डाल दिया। उसकी हर्निया की थैली

में पूर्ण विकसित डिम्बाशय, डिम्बवाहिनी और गर्भाशय था जबकि बाहर शिशन एवं अण्डकोश थे। अब प्रश्न यह उठा कि उसे पुरूष बनाया जाये या महिला।

जब उस व्यक्ति से पूछा तो उसने कहा कि वह पुरूष रहना ही पसन्द करेगा। तब मैंनें तय किया कि उसका गर्भाशय डिम्बों से साथ निकाल दिया जाये अन्यथा उनकी किलष्टायें हो सकती थी।

गुदा में ग्लास

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक 40-50 वर्ष का पुरूष जिला चिकित्सालय आया। उसने कहा कि उसके गुदा में उसने एक ग्लास घुसा लिया है। पूछने पर उसने बतलाया कि उसके गुदा द्वार में खुजली हो रही थी अतः वह एक ग्लास पर बैठ गया और वह ग्लास उसके अंदर चला गया। इस अविश्वसिनीय कहानी पर हमने भी विश्वास नहीं किया, वह हमें एक “सेक्सुअली परवरटेड” व्यक्ति लगा। मगर समस्या थी कि उस ग्लास को कैसे निकाला जाये। क्योंकि गुदा उस पर सिकुड़ गई थी। यदि औजारों से उसे निकालते तो वह उस पर फिसल जाते थे।

अतः उसे स्पाइनल एनीस्थिसिया दिया गया। इसके बाद उसके गुदा द्वार को पर्याप्त चैड़ा किया गया फिर गुदा में हाथ डाला गया। तब उसे बाहर निकाला गया। उस ग्लास पर बहुत दिनों तक स्टाफनर्सेज उनकी चूडियाँ लगाती रही।

श्रीमति अ्ग्रवाल

डा. कौशल किशोर

श्रीवास्तव

मेरी पदस्थापना जब खुरई में हुई तक रमेश अग्रवाल मेरा अधीनस्थ कर्मचारी थे, सम्भवतः कम्प्यूटर। मैं स्वतन्त्रता के पश्चात वहां पदस्थ होने वाला पहिला सर्जन था। मेरा सरकारी क्वार्टर चिकित्सालय से एक किलोमीटर रेल्वे लाइन के करीब था। मेरे पास स्कूटर तक नहीं था कार की कौन कहे। जबकि मेरे अधीन पदस्थ एकाउन्टेन्ट सुपरवाइजर, फूड इन्सपेक्टर आदि सभी के पास स्कूटर या मोटर साइकिले थी।

रमेश अग्रवाल के बड़े भाई साहब एक मिठाई की दुकान चलाते थे। उनकी पत्नि लगभग पचास वर्ष की थी। उनके तीन बच्चे थे। श्रीमति अग्रवाल को पेशाब करने में

तकलीफ होती थी और गर्भाशय योनि मार्ग से बाहर आता था। मेरे विचार से उनकी हिस्टरेक्टामी (गर्भाशय निकालना) और कोलापोरफी (योनि मार्ग और पेशाब की थैली की संयुक्त शल्य क्रिया) होनी चाहिये थी। मेरे विचार में वह आप्रेशन सागर जिले के आटेट्रेटिक एवं गायनेलाजिकल डिपार्टमेंट में होना चाहिये था पर रमेश जोर दे रहा था कि वह आप्रेशन में ही खुरई के छोटे से अस्पताल में करूं जो कि एक असम्भव कार्य था।

अग्रवाल ने कहा "आप भी तो सर्जन है आप भी यह आप्रेशन कर सकते है एक बार यह आप्रेशन हो जाये तो रट्टा कटे।" मैनें कहा यहाँ" बेहोश करने वाले डाक्टर नहीं है।" वह बोला मैनें डा. कुकरेले से बात कर ली है वे एनीस्थीसिया दे देंगे। हमें अपनी कमियाँ दृढ़तापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिये जो मैं नहीं कर पाया। इसे मैं मेरी कमजोर इच्छा शक्ति ही मानूंगा। अग्रवाल लोग शायद उनकी सुविधा देख रहे थे कि यदि सात दिन उनकी मिठाई की दुकान बंद रही तो उनका कितना नुकसान होगा और सागर में उन्हें कितनी असुविधा होगी। मेरी कमजोर इच्छाशक्ति और उनके स्वार्थ के कारण मां बलि होने जा रही थी। हिस्टेरेक्टामी मुख्यतः तीन प्रकार से की जा सकती है (1) उदर से (2) योनि मार्ग से या (3) दूरबीन के द्वारा। जब गर्भाशय योनिमार्ग से बाहर निकाला जाता है तो कालपोरेफी (शेष योनि मार्ग का स्थरीकरण) की भी सुविधा रहती है।

श्रीमति अग्रवाल को (लिथोटोमी) घुटने मोड़ कर एवं जांघें दूर रख कर स्थिति में रखा गया। इस स्थिति में सर्जन गर्भाशय की शल्य क्रिया योनि मार्ग से करता है। रिट्रेक्टर क्ष के द्वारा (जगह चैड़ी करने वाले उपकरण) पर्याप्त स्थान बना कर गया। गर्भाशय का निचला भाग जिसे "सर्विबस" कहते है नीचे खींचा गया फिर योनि की श्लेश्मा में चीरा लगाया गया। यह चीरा बाजू तक लाय। चीरा (इन्सीजन) गहरा करके पेरीटोनियम तक पहुंच और उसमें चीरा लगाया एवं गर्भाशय को उलट दिया गया। शेष शल्यक्रिया वैसी ही की जैसी कि उदर से करते है। इतने में डा.कुकरेले एवं किरार ने कहा "सर मरीज की हालत बिगड़ रही है शीघ्र करें।" मैनें शीघ्रता से आप्रेशन खत्म किया और घर आ गया।

आप्रेशन दोपहर बारह बजे खत्म हुआ और तीन बजे खबर आई कि मरीज की हालत बिगड़ रही है। मुझे पूर्वाभास हो गया कि श्रीमति अग्रवाल के पास कुछ ही घंटे शेष है मैं भागता हुआ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गया। मरीज को देखा कि उसकी हालत बिगड़ रही है। नब्ज कमजोर पड़ रही है। उनकी रक्तचाप नीचे गिर रहा है। नब्ज तेज हो गई। वे पानी मांग रही थी। ये सब आन्तरिक रक्त स्त्राव के लक्षण थे। उनकी ड्रिप को (अन्तःशिरा द्रव) तेज किया। मैं वहां तीन घंटे बैठा रहा। अचानक वे बोली "मुझे

दिखाई नहीं दे रहा है पर सुनाई दे रहा है। इसका तात्पर्य है कि उच्च केन्द्रों में रक्त परिभ्रमण बन्द हो रहा था क्योंकि आँखों की तंत्रिका दूसरी है एवं सुनने की आठवीं। ऐसे समय मरीज को कोई अपशब्द नहीं कहना चाहिये क्योंकि सुनने की सामथ्र्य बढ़ जाती है। मैं इतनी देर में मानसिक रूप से खारे भगवानों के निकट जाकर गिड़गिड़ाया कि वे श्रीमति अग्रवाल को बचा लें, चाहे मुझे उठा लें। पर भगवान होते तो उन्हें जरूर बचाते। मैं कहने लगा कि भाभी जी भगवान को याद कीजिए वे कहने लगी" मुझे घबराहट हो रही है। कुछ देर बाद उनकी सांस बंद हो गई।

मैनें किसी की मृत्यु के समय महसूस किया है कि कुछ स्थान रिक्त हो जाता है, पंखे की आवाज तेज हो जाती है। मैं सिर झुकाये घर आ गया। मुझे बहुत मानसिक तनाव था। घर आकर मैनें दो डायजेपाम की गोली लिया खाई" और चुपचाप पड़ गया। मां एवं पत्नि समझ गई कि कुछ अनहोनी घट गई है। वे भी कमरा छोड़ कर चली गई। दूसरे दिन से मैनें उस रास्ते से अस्पताल जाना छोड़ दिया। रमेश का अवकाश का आवेदन आ गया। अग्रवाल परिवार से कोई आक्षेप मेरे ऊपर नहीं लगाया गया। कुछ दिनों बाद श्रीमति अग्रवाल का तेरहवीं का आमंत्रण आया।

मैं सिर झुकाये उनके घर गया तो वहां सबके सिर छुटे हुये थे। मैं पश्चाताप में बैठा रहा और हमेशा अपराध भावना से ग्रस्त रहा। कुछ दिनों के बाद पदोन्नति हो गई और मैं छिन्दवाड़ा आ गया। बाद के दिन उस परिवार ने संघर्ष में बिताये। श्रीमति अग्रवाल को बटा कोई अधिकारी बन गया था। और आज यानि अक्टूबर दो हजार सत्रह को अवस्थी का फोन आया कि रमेश उसको परिवार से अलग हो गया था। कालान्तर में उसका देहावसान हो गया।

डा. गोपाल अरोरा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भारत में सैकड़ो डा.गोपाल अरोरा होंगे। इन्टरनेट पर “डाउन लोड” करके देखिये कई मिल जायेगे। मैं तो कहता हॅू कि डा. पिलपिले डाउन लोड करेंगे तो हजारों न सही सैकड़ों तो मिल ही जायेंगे। भगवान जाने इन्टरनेट वाले इतने नाम कहां से लाते हैं। मगर जब आप इन्हें खोजने जाऐंगे तो एक भी नहीं मिलेगा। इनमें से कुछ ऊपरी मंजिल पर पहंुच गये होते हैं तो कुछ आपके काम के ही नहीं होते। कुछ विदेश चले जाते हैं तो वहीं चिपक जाते हैं और देश को भूल जाते है। कहने का तात्पर्य यह है कि शेयर बाजार में पैसा फसाने के पहले जिस तरह लिखा होता है रीड आल द डाक्यूमेन्ट्स केयर फुली” उसी तरह डाक्टरों की पंजी भी सावधानी पूर्वक पढ़ लें। ऐसा न हो कि आप मोतिया बिन्द का आप्रेशन करवाने जायें पर किसी हिन्दी के पी.एच.डी. से मलिक मोहम्मद जायसी पर ज्ञान बढ़ा कर आ जायें। पर से जो एलोपेथिक डाक्टर होते हैं ये छोटे से अंगो से बंगला, कार, रेप संगीत नाच गाना विदेश यात्रा, पैसा पुरूस्कार इत्यादि तक कैसे निकाल लेते हैं।

मैं डा. गोपाल अरोरा के पास पत्नि के मोतिया बिन्द का आप्रेशन करवाने गया था। नागपुर डाक्टरों की अच्छी मंडी है। एक बार फंस कर देखिये तो वे आपके कान तक में से मोतियाबिंद निकाल देंगे हालांकि मोतियाबिन्द आंखों में ही होता है। डाक्टर साहिब जो एक काल्पनिक पात्र है ने हमें चाय पिलाई। हमें लगा कि बकरे खिला पिला कर ही काटे जाते है। फिर मकड़ी की तरह उन्होने हमारे चारांे तरफ जाल बिछाना चालू कर दिया बोले “हमारे दरवाजे में कई तरह के आप्रेशन होते है जैसे 19 हजार रूपये का उन्तीस हजार रूपये का, 39 हजार रूपये का। वे दस के अंक लगा कर एक लाख बीस हजार तक पहंुच गये। फिर बोले भाभी जी (बगैर भैय्या के भाभी जी) आज

कल सोना लाॅकर में भी सुरक्षित नहीं रहता, आप आँख के लेन्स के रूप में डलवा लीजिए। न तो कोई चोरी का डर और न ही कोई मांग सकता।

हम 85 हजार रूपये के ऊपर अटक गये। अब रस्साकशी की तरह वे हमें एक लाख बीस हजार की रेखा के पार खीच रहे थे और हम 85 हजार से आगे नहीं सरक पा रहे थे, तो सौदा 85,000 रू. पर अटक गया। हमारी स्वीकृति पाकर उन्हें वही आनन्द आया जो सांप को मेढ़क पकड़ने पर आता है। वे एक कुशल सर्जन है। इनमें दो राय नहीं क्योंकि दूसरी राय अपने पास रखें, कहीे और चिपकाने के काम में आयेगी। वे मेरी पत्नि को आप्रेशन थियेटर में ले गये। वे उसी आंख का आप्रेशन करते हैं जिसमें मोतियाबिन्द होता है। इस मामले में वे ईमानदार है। पन्द्रह मिनिट में मेरी पत्नि आप्रेशन थियेटर से वापिस आ गई। तब तक वे हमें मोतियाबिन्द के आप्रेशन की “डाक्यूमेन्ट्री” दिखाते रहे। उन्होने चार पांच घंटे तरह की यानि कि जितनी उन्हे याद थी आंखों में डालने की दवाईयां हर घंटे डालने की खरीदवा दी। दुकान डाक्टर साहब की ही थी। अब हर पांच मिनिट के अन्तर से आंखो में वे बंूदे डालने का क्रम चालू हुआ तो जब आखिरी बंूद डाली जाती तो पहली का नम्बर आ जाता। एक महिने तक झुके झुके मैं भूल ही गया कि तन कर खड़ा होना क्या होता है।

और हां, उन्होने हमें बिल भी दिखा दिया। जिसमें एक सेमी डीलक्स वार्ड में तीन घंटे ठहरने के तीन हजार रूपये लिये गये। उन्होने एक कोने में कहीं तेईस हजार रूपये लिखे थे। यही उनके नाराज होने का कारण थे। वैसे तो वे बेहद विनम्र है पर यदि उन्हें जरा भी शक हो जाये कि उन तेईस हजार रूपये का विवरण किसी आयकर अधिकारी के पास पहंुच सकता है तो वे कंेचुयें से सांप बन जाते है। मैनें क्योंकि 23000 रूपये के हिसाब से 10 आप्रेशन के दो लाख तीस हजार रूपये हुये। इनमें यदि 365 दिन का गुणा करो तो 30 करोड़ के लगभग होते है तो वे 30 करोड़ तो क्या अस्सी लाख रूपये तक पर कर न देते होंगे।

मैनें एक हिमाकत कर दी। मैनें पूछ लिया कि डाक्टर साहब यह कैसे मालूम पड़ेगा कि आपके आंख में साठ हजार रूपये का ही लेन्स लगाया है जैसा कि आपने बिल में लिखा है तो वे बोले “ठीक है मैंे दुबारा आप्रेशन करके वह लेन्स आपके हाथ में रख देता हँू। आप बाजार में जाकर उसकी कीमत मालूम कर लेना। तब तक मैं आपकी पत्नि की आँख की वह जगह खाली रखूंगा। जब आप संतुष्ट हो जायेंगे तब वही लेंस दुबारा फिट कर दूंगा। मैं इसके पैसे नहीं लूंगा। मैं संतुष्ट होकर रह गया।

उन्होने पुनः उनकी दस बारह मशीनों में पत्नि की जांच की। आखिर जब मशीने खरीदी है तो उनका उपयोग भी होना चाहिये और जब उनका उपयोग किया जाता है उनको पैसे भी ग्राहक यानि मरीज से लिया जाना चाहिये। वे मशीने क्या हैं, डाक्टर

साहब के लिये हमारे जेब से पैसे निकालने थे ए.टी.एम. कार्ड है। फिर उन्होने हमें उन्हीें की दुकान से चश्मा बनवाने का आग्रह किया। यानि वह आंखो का अस्पताल क्या है एक कारखाना है।

मुस्कुराती मौत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

प्रश्न यह है कि क्या एक जनरल सर्जन को ह्नदय की शल्य क्रिया करने का अधिकार था ? मगर सन् 1971 में गांधी मेडिकल कालेज में सर्जरी के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कुमार ने ऐसा किया जिसका परिणाम मृत्यु होना था और वही हुआ। वह एक 16 वर्ष की सुन्दर लड़की थी। पर उसकी सांस जल्दी फूल जाया करती थी। उसकी नब्ज तेज थी। पैरों में सूजन थी। एक्स रे में कन्सट्रिक्टिव पेरी काडाइटिस

” के संकेत थे। यह बीमारी अक्सर “टी.वी.” के कारण होती है। डा. कुमार ने उसका आप्रेशन करने का निश्चय किया। इस आप्रेशन में ह्नदय को ढकने वाली झिल्ली कड़ी हो जाती है। प्रोफेसर कुमार का ख्याल था कि उस कड़ी झिल्ली को काट कर निकाला जा सकता था।

वह दिन हम विद्‌यार्थियों के लिये सनसनी वाला दिन था। हम सब गेलरी में खड़े होकर आप्रेशन देख रहे थे। आप्रेशन के पहले उस स्थान को स्प्रिट से साफ किया जाता है फिर उस स्थान को छोड़ कर पूरे शरीर को आटोक्लेवड (जीवाणु रहित) वस्त्रों से ढक दिया जाता है। बेहोश करने वाले चिकित्सक ने मरीज को बेहोश करके श्वास नली में एक रबर की नली डाली एवं श्वास नली प्रश्वास व्यवस्था को “वायल एप्रेटस” से जोड़ दिया। इसका मतलब था कि मरीज का श्वास प्रश्वास व्यवस्था पर उनका नियंत्रण हो गया था और वे बेहोशी की गहराई को नियंत्रित कर सकते थे।

प्रोफेसर कुमार ने आप्रेशन प्रारम्भ किया। हम सब एक बड़े एवं नये आप्रेशन के गवाह बनने वाले थे। उन्होने पसलियों को काटा तो धड़कता दिल सामने था। फिर वे पेरीकार्डियम को ह्नदय से उधेड़ने लगे। डा. अग्रवाल उनके सहायक थे जो एक गर्व की बात थी। सरजरी में अधिकतर संवाद इशारों में होते हैं। किसी प्रक्रिया के सामने प्रोफेसर ने कहा “कट” उस समय डा. अग्रवाल हम लोगो को गर्व से देख रहे थे। उन्होने न मालूम क्या काटा कि पूरी आप्रेशन की जगह खून से भर गई। प्रोफेसर कुमार पसीने पसीने हो गये। अब उस स्थान को देखना, फिर उसको सीना यह एक दुश्कर कार्य था। रक्त स्त्राव वाले स्थान को बड़ी मुश्किल से वे देख पाये फिर उस स्थान को सिया गया।

रक्त स्त्राव बहुत हो गया था। उस लड़की को आप्रेशन के बाद आई.सी.यू.वार्ड में भेज दिया गया। वह वार्ड इन्टेन्सिव केयर यूनिट वार्ड था। हम लोगो की वहां ड्‌यटी लगा दी गई। हमें घंटे घंटे से ब्लड प्रेसर एवं नब्ज देखना थी और चार्ट में लिखना था। शाम को प्रोफेसर कुमार राउण्ड पर आये। हम सब हाउसमेन चारो तरफ खड़े थे प्रोफेसर साहब ने उस लड़की से पूछा “कैसे हो बेटा।” उन्हें देख कर वह सुन्दर लड़की मुस्कुराई और उसकी गरदन ओर लटक गई।

बगैर हाथ पैरो के पण्डित

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

बर्जर्स नामक बीमारी में जांघो एवं बाहों की धमनियों या उनसे ऊपर की धमनियों में कोलीस्टीराल के या खून के थक्के जम जाते हैं। उनके अवरूद्ध होने पर हाथ पैर, टांगंे, जांघों हाथ या बांहो का रक्त परिभ्रमण बन्द हो जाता है जिससे वे सड़ने लगते हैं एवं उन्हें काटना पड़ता है। इस बीमारी में पहले पैर की उंगलियाँ काली पड़ कर सूख जाती है। फिर उन्हें काटना पड़ता है। मरीज के पैरो या हाथो का सड़ना तकलीफ नहीं देता वरन उनमें भयंकर जलन पड़ती है। उन्हें काटना पड़ता है धीरे धीरे काटने का सिलसिला ऊपर बढ़ता जाता है। जिस व्यक्ति की हम बात कर रहें हैं उसकी जांघे एवं भुजायें तक हमें काटना पड़ी पर उसने बीड़ी पीना नहीं छोड़ा।

हां, यह बीमारी मैनें मात्र बीड़ी पीने वालों में ही देखी है। हम उस पण्डित की हर उंगली काटने पर उसे समझाते थे कि वह बीड़ी पीना छोड़ दे। पर हम यह जानते थे कि यह हमारा अरण्य रोदन है। हमने यह देखा है कि रात को दो बजे यदि कोई मरीज वार्ड में पैर लटकाये मिलता था तो वह वर्जर्स डिसीज का ही मरीज होता था। उसके पैर एवं हाथ काटने का जो सिलसिला चला तो वह पण्डित बगैर जांघो और बांहो का धड़ ही होकर रह गया मगर उसने बीड़ा पीना नहीं छोड़ा।

उसने वार्ड में कुछ शिष्य बना लिये थे जो उसे बीड़ी सुलगा कर देते थो और वह बीड़ी पीता रहता था। जिला चिकित्सालय छिन्दवाड़ा में हम लोगों के सुबह के राउण्ड के बाद उनके शिवय उसे लाद कर पास के श्री अनगढ़ हनुमान जी के मंदिर के पास सुला देते थे। वहां वह मरीज भीख मांगता था। शाम को वह पैसे इकट्ठे करता था। उनसे वह बीड़ी खरीदता था। कभी-कभी वह शराब भी पीता था। वह बदमाश इतना था कि नर्सो को देखकर सीटी बजाता था और उन्हें आँख भी मारता था। जबकि वह बगैर सहारे के सरक भी नहीं सकता था।

बर्जसे डिसीज के लगभग 100 मरीज मैनें देखे मगर उनमें एक साम्य देखा कि वह सब बीड़ी पीते थे। मगर उनका बीड़ी पीना कभी नहीं छूटता था। भारतीय तो भारतीय खुरई के तलापार गांव के एक एबट नामक अंग्रेज था। उसकी जमीन तलापार में थी। वह सर्दियों में यहां रहता था एवं फसल काटने के बाद गर्मियों में इंग्लैड चला

जाता था। वह गोरा आदमी तलापार के ग्रामीणों के साथ बीड़ी पीता था। वर्जस डिसीज के कारण उसके पैर के पंजे की दो उंगलियां काटनी पड़ी थी।

जहां यह बीमारी बीड़ी पीने वालो में ज्यादा होती हैं वहीं गोरे यूरोपियन या अमेरिकन्स में मधुमेह उच्च रक्त चाप, कोली स्टीराल की बड़ी मात्रा अधिक पाई जाती है।

पुरूषों द्वारा स्वयं के जननांगो पर अत्याचार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

(1) जिला चिकित्सालय छिन्दवाड़ा में एक साधु भरती हुये। उनका शिशन फैक्चर्ड था। उससे खून बह रहा था। हमने पूछा कि वह दुर्घटना कैसे हुई तो वह बोले "साली इन्दियाँ वश में नहीं हो रही थी तो मैनें इसमें जूता मार दिया। मैं बोला कि खराबी आपकी जननेन्दियों में नहीं है आपके मन या दिमाग में है।

(2) भोपाल मेडिकल कालेज के सर्जरी विभाग में एक व्यक्ति भरती हुआ जिन्होने उसके शिशन को कुल्हाडी के छेद में घुसा लिया था। जिससे कुल्हाड़ी के आगे वाला भाग काफी सूज गया था। था। वह कुल्हाड़ी आसानी से निकलने वाली नहीं थी अतः मरीज को बेहोश किया गया। फिर उसके सूजे हुये भाग में कई पंचर किये गये और उस भाग को दबा कर द्रव निकाला गया। तब वह इतना पतला हुआ कि वह कुल्हाड़ी निकाली गई।

(3) एक जिला चिकित्साहधिकारी जैसी रेंक के अधिकारी हम लोगो के पास आये एवं शिशन के निकाले जाने पर जोर देने लगे। उन्हें केन्सर जैसी कोई बीमारी भी नहीं थी। हमने उनके इस विचित्र व्यवहार का कारण पूछा तो कहने लगे "मेरी पत्नि नेतागिरी करती है। उसे ऊपर की स्थिति बनाने के लिये कई बड़े नेताओं के नीचे सोना पड़ता है।

अब मेरा शिशन तो उसके काम का ही नहीं है अतः इसे काट दिया जाये। अन्ततः वे उनके लक्ष्य में सफल हो गये।

सेक्स आॅरगी के ऐसे अनेक प्रकरण हमारे सामने आते हैं। उन्हें मानसिक चिकित्सा की आवश्यकता होती है ऐसे सारे प्रकरण दया के पात्र है।

एक्स केवेसन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सभी धर्मो में कुछ परम्परायें अच्छी हैं एवं कुछ परम्परायें दोषमय हैं। ईसाई एवं इस्लाम को मानने वाले उनके मुर्दो को जलाते नहीं है, जमीन में कब्र बना कर गड़ा देते है। हालांकि इससे प्रदूषण फैलता है एवं उपयोगी जमीन अनुपयोगी हो जाती है, पर हिन्दुओं के द्वारा शव को जलाने के विरूद्ध गड़ाने की प्रक्रिया में शंकास्पद मृत्यु में शव को पुनः निकाला जा सकता है एवं पुनः पोस्टमार्टम किया जा सकता है।

यह शवों को कब्रो को बाहर निकाल कर पुनः पोस्टमार्टम करने की प्रक्रिया में उपजिलाध्यक्ष की अनुमति आवश्यक होती है। इसी अनुमति के आधार पर पुलिस चिकित्सा में पुनः पोस्टमार्टम का आग्रह करती है। चैरई प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में एक महिला चिकित्सक के पास एक शव परीक्षण के लिये आया। उनके मतानुसार मृत्यु जहर पीने से हुई थी। वह शव एक मुसलमान का था। गांव में शव दफनाने के बाद

कानाफूसी प्रारम्भ हो गई कि उक्त व्यक्ति की मृत्यु एक झगडे में हुई थी जहर खाने से नहीं। गांव वालो का एक समूह प्रशासन के पास पहंुचा और आवेदन दिया कि मृतक का पोस्टमार्टम दुबारा किया जाये। मेरे पास पुलिस का प्रतिवेदन आया। ऐसे कार्यों में चिकित्सक प्रायः उदासीन होते है पर आज्ञा तो आज्ञा होती है।

मैं कुछ और चिकित्सकों को लेकर सिपाही के साथ उस गांव में गया। गांव वाले पहले से ही स्वागत के लिये खड़े थे। वे हमें उस स्थान पर ले गये जहां शव का गड़ाया गया था। गांव वालों की सहायता से हमने उस शव को निकाला। उसका मैनें ध्यान से निरीक्षण किया तो उसके सीने एवं खोपड़ी में चोट के निशान दिखे। उसका सीना खोला गया तो उसकी बाई तरफ की कुछ पसलियां टूटी हुई मिली। उसके बांये सीने में काफी रक्त इकट्ठा था। इसी तरह उसकी खोपड़ी की हड्यिाँ भी टूटी हुई मिलीं और उसके भेजे में भी एकत्रित था। सारी चोटें मृत्यु पूर्व थी। मैनें अपना मत दिया कि मृतक सीने एवं सिर की चोट के कारण रक्त प्रवाह एवं रक्त की कमी के कारण मरा था।

मेरे मत के कारण तमाम प्रकरण बदल गया एवं पुलिस की जाँच इस दिशा में चल पड़ी।

उदर गुहा में पूर्ण विकसित लड़की

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं कलेक्टर ए.आर.डंगस के साथ मीटिंग में व्यस्त था। इतने में स्त्री रोग विशेषज्ञ श्रीमति असफरी खान का फोन आया। उन्होने मुझे तत्काल याद किया था। वे एक सीजेरियन आप्रेशन कर रही थी। उसमें उन्हें मुश्किलें आ रही थीं और उन्हें मेरी

सहायता की आवश्यकता थी। मैनें कलेक्टर साहब को तथ्यों से अवगत कराया तो उन्होने मुझे तत्काल मीटिंग छोड़ने की आज्ञा दे दी।

मैं सरकारी गाड़ी में बैठ कर अस्पताल पहंुचा और लगभग भागता हुआ आप्रेशन थियेटर में गया। वहां माजरा बड़ा आश्चर्यजनक था। जिस महिला का आप्रेशन किया जा रहा था उस का गर्भाशय बगैर गर्भ के छोटा होकर दाहिनी तरफ था। शिशु को प्रेल्सेन्टा (शिशु जिस माध्यम से गर्भाशय से पोषण प्राप्त करता है) फैला हुआ था और आंतो और ओमेन्टम (चर्बी युक्त परदा जो बड़ी आंत से लटक कर पूरे उदर में फैला हुआ होता है) से चिपका हुआ था। मैं तत्काल आप्रेशन करने के लिये तैयार हो गया।

आप्रेशन में धीरे धीरे प्रेसेन्टा को आंतो से अलग किया। जहां वह ओमेन्टम से अलग नहीं किया जा सकता था वहां ओमेन्टम को काट कर धागे से बांध दिया। जब प्रेसेन्टा को अलग करके शिशु को अलग किया तो शिशु की हालत अच्छी थी। कुछ ही देर में वह रोने लगा वह एक लड़की थी। मैनें एनेस्टथेटिस्ट से फोटोग्राफ के लिये इजाजत मांगी तो उन्होने साफ मना कर दिया। उन्होने कहा कि मरीज की हालत अच्छी नहीं थी और ओ.टी.डेश की सम्भाना थी। मैनें शीघ्रता से आप्रेशन किया। आप्रेशन थियेटर से मां और बच्चा सकुशल बाहर आये।

आठवें दिन मरीज के टांके निकाल दिये गये। दोनो की हालत अच्छी थी। उदर में गर्भाघान तभी होता है जब संसेचन उदर में ही हो ट्यूब ब्लाक हो।

दुनिया की सबसे छोटी छोट कद की महिला का दो बार सीजेरियन

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मैं उन दिनों मध्यप्रदेश के सागर जिले की खुरई तहसील में बी.एम.ओ के पद पर कार्यरत था। मुझे नर्स श्रीमति साहू ने सूचना दी कि एक सीजेरियन आप्रेशन का केस आया है। मैनें कहा खुरई एक छोटी सी जगह है यहां न एनेस्थिस्ट है और न ही खून देने की सुविधा। उसे सागर भिजवा दो।”

श्रीमति साहू ने कहा “सर उसका पति एक गरीब मुसलमान है उसे तो खाने के लाले पड़े हैं। वह सागर नहीं जा सकता।”

मैनें उसका सीजेरियन सेक्सन करने का निश्चय किया। उसे आप्रेशन टेबिल पर लिटाया गया। मैनें कुहनी तक लगभग दस बार हाथ धोये। मास्क और केप पहले ही पहिन लिया था। वह एक 30” की मुस्लिम महिला थी जिसकी आवाज चिड़ियों के चहकने जैसी थी। वह स्पष्ट रूप से एक सिकेलो पेल्विक डिसप्रोर्शन का प्रकरण था। उसके उदर को पेन्ट एवं ड्रप किया गया। फिर मैनें उसके उदर में 2ः लिडोकेन लगाया। कुछ देर इन्तजार करने के पश्चात नाभि के नीचे चीरा लगाया। जब पेरीटोनियम खोलने का मौका आया तो उसे ीलण् च्मदजव्रमबपद संकंजम एवं ीलण् क्पं्रमचंदए प्ण्टण् दिया गया।

अब मेरे पास मात्र तीन मिनिट थे। उसी दौरान मैनें गर्भाशय में चीरा लगाया एवं बेबी को बाहर निकाल लिया। एक छोटे से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में बगैर एनेस्टथेटिस्ट के इससे उत्तम तरीका सीजेरियन सेक्सन करने का कोई और नहीं था। इस तरीके से मैं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खुरई में कई सीजेरियन सफलता पूर्वक कर चुका हॅू। मरीज एवं बेबी को 8 वे दिन छुट्टी दे दी गई। छुट्टी के समय दोनो स्वस्थ थे।

करीब दो वर्ष पश्चात मैनें देखा कि मेरे शासकीय आवास के समक्ष एक व्यक्ति सड़क पर लोट रहा है और जोर जोर से रो रहा है। मैनें बाहर निकल कर देखा तो उसी मुस्लिम महिला का पति था। मेरे पूछने पर उसने बतलाया कि उसकी पत्नि को पुनः ¬प्रसव पीड़ा हो रही है। मैं भड़क गया तोवह मेरे पैर पकड़ का लेट गया।

मैं नाराज होकर बोला, तुम्हारी बीबी का फेमिली प्लानिंग का आप्रेशन साथ में कर दूंगा मगर वह तैय्यार नहीं हुआ। वह बोला हमारा धर्म इसकी इजाजत नहीं देता। मैनें कहा ठीक है मैं उसका आप्रेशन नहीं करूंगा।” वह रोते हुए बोला “हुजूर दो मौतें हो जायेंगी। उसका गुनाह आप को लगेगा मैं झल्ला कर बोला “अच्छा तो तुम पाक साफ ही रहोगे। वह रोने लगा। मैनें सोचा कि भगवान यदि मुझसे ही यह जिम्मेदारी उठाने

का आदेश दे रहा है तो यही सही। मैनें सीजेरियन सेक्शन का फिर वही तरीका अपनाया और आठवें दिन स्वस्थ जज्जा और बच्चा को घर भेज दिया।

दोनो अण्डकोश एक ही तरफ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

दोनो "टेस्टेस" उदर में विकसित होती है "और बाद में दाहिने और बांये अण्डाशय (स्क्रोट्म) में कई तत्वों के कारण दोनो तरफ अलग अलग थैलियों में उतर आती हैे जबकि महिलाओं में डिम्ब उदर में ही रहते हैं। वे कारण जो अण्डकोशो को नीचे धकेलते है मुख्यतः निम्न हैः

(1) उदर का दबाव

(2) गुवरनेकुलम का अण्डकोशों को नीचे खींचना।

(3) इन्गुआइनल केनाल का रहना (इन्सुआइनल वह रास्ता है जिसमें से अण्डकोश नीचे आते है।

(4) उदर का अधिक तापक्रम कुछ जानवरों में अण्डकोश उदर में ही रहते है केवल संसर्ग के समय नीचे आते है।

(5) हारमोन्स में परिवर्तन आदि मगर एक हाइड्रोसील के आप्रेशन के दौरान मैनें दोनो अण्डकोष एक ही तरफ देखे प्रश्न यह उठता है कि (1) क्या दोनो का विकास एक ही तरफ हुआ था।

(2) क्या नीचे उतरते समय बांयी तरफ का गुबरनेंकुलम विकसित नहीं हुआ था। (3) क्या दाहिनी ओर का गुवरनेकुलम बांयी ओर के गुवरनेकुलम से अधिक ताकतवर था। बहरहाल आप्रेशन के समय मैनें देखा कि दोनो अण्डकोश दाहिनी तरफ ही थे। उनकी शुक्र वाहिनियां मिली हुई थी और एक ही साथ उदर गुहा में प्रवेश कर रही थी। मुझे नहीं मालूम था कि वे उदर में अलग-अलग हुई या नहीं थी।

यह एक बहुत ही विरल प्रकरण था और मैनें सर्जरी की पुस्तकों में ऐसा प्रकरण नहीं पढ़ा था।

स्यूडो पेन्क्रीयाटिक सिस्ट

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

उदर के उपरी भाग से नाभि तक फूले हुये पेट की शिकायत लेकर एक मरीज को सर्जीकल वार्ड में भर्ती किया गया। मात्र थोडे से ही खाने से उसका पेट भर जाता था। परकशन में एक उंगली को फूले स्थान पर रख कर दूसरे हाथ की उंगी से उसे ठोकने पर आवाज “डल” आती थी। उसकी सीमाओं के बाहर परकशन करने पर आवाज “टिम्पेनिक” जैसे किसी गेस भरे स्थान की आवाज हो) उसकी सीमायें निर्धारित की गई। उस समय चिकित्सालय में अल्ट्रा सोनोग्राफी की मशीने नहीं आई थी। अतः “बेरियम” पिलाकर अमाशय का एक्सरे किया गया। एक्सरे में एक काली छाया से आमाशश्य आगे धकाया गया थ। इन सब के आधार पर हम इस निर्णय पर पहंुचे कि उस व्यक्ति को “स्यूडोपेन्क्रीयेटिक सिस्ट” है। हमने उसका आप्रेशन करने का निर्णय लिया।

उसके आप्रेशन में उदर के ऊपरी भाग से नाभिक तक मध्य रेखीय चीरा लगाया गया। आमाशय में चीरा लगाया गया। फिर उसकी पश्चिम की सतह को खोला गया। उसका द्रव पूरा निकाला गया। फिर आमाशय की पृष्ट भाग में एक “क्रास” के आकार

का चीरा लगातार छोड़ दिया गया। उसका स्वास्थ अच्छा रहा एवं नवे दिन उसकी छुट्टी कर दी गई। उपरोक्त आप्रेशन को जुरास्ज आप्रेशन कहते है।

श्रीमति तिवारी

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

तिवारी साहब उन दिनों टेलीफोन कार्यालय में स्टोर कीपर थे। वे उनकी पत्नि को दिखाने के लिये मानसरोवर स्थित मेरी क्लिनिक में लेकर आये। (शी वाज स फेट फीमेल आफ फोटी) उनके उदर को अल्ट्रा सोनोग्राफी में गाल ब्लडर में कई पथरियाँ थी। उन्हे उदर के दाहिनी ओर ऊपरी भाग में अत्यधिक दर्द होता था। उनकी नब्ज (पल्स) लगभग 100 मिनिट थी एवं तापक्रम 99 फेरेन हाइठ था। श्री तिवारी यह तय करके ही आये थो कि उन्हें "गाल ब्लेडर" का आप्रेशन मुझसे ही करवाना है।

मुझे उन दिनों दाहिनी तरफ का "ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया" था। इस बीमारी के लिये मैं उन दिनों "कार्वामेजापिन" नामक दवा उस भयानक दर्द को दबाने के लिये ले रहा था ? जब मैं किसी कार्य पर अधिक ध्यान देता था तो मुझे "निस्टेगमस" (नेत्रों का तीव्र गति से दांये से बांये घूमना) सारे शरीर का दायें बायें हिलना, धंुधला दिखाई

पड़ना, हाथो पर नियंत्रण आदि न रहना आदि होता थी। अतः मैनें डाक्टर भगत, एम,एस सर्जरी को सहायक के रूप में रखा।

मैनें मरीज के उदर के ऊपरी भाग में मध्य रेखा के दाहिनी तरफ (राइट पेरा मीडियन) चीरा लगाया। जब हम ने लिवर (यकृत) को रिट्रिक्ट करने, एक एक डियोडिनम के ऊपर और एक आमाशय को बांयी तरफ खीचने गाल ब्लेडर के ऊपर एक गाज का टुकड़ा रख कर उसे गाल का टुकड़ा रख ककर उसे गाल ब्लेडर को पकड़ने वाली फोरसेफ से पकड़ा। शीघ्र ही "काडमेन्स" ट्रायेन्गल पकड़ कर गाल ब्लेडर की डक्ट को पकड़ लिया एवं जहां वह कामन वायल डक्ट से मिलती थी वहां एन्गुलर फोर सेफ से पकड़ लिया। यह काम अत्यन्त ध्यान से करने पर मैं हिलने लगा अतः डाक्टर नायडू ने मुझे (जो कि एक कुशल एनेस्थैटिक है) एक स्टूल पर बिठाल दिया।

दुर्भाग्य वश डा भगत गाल ब्रेडर की डक्ट को कामन वायल डक्ट की और नहीं बांध पाये। उन्होने "गाल ब्लेडर" निकाल दिया। मैनें डाक्टर भगत से कहा कि इसमें तो बायल (हरे रंग का पित्त द्रव) का घाव में से आता रहेगा। उन्होने कहा कि वह खुद व खुद बंद हो जायेगा। यहां मेरा उनसे मतभेद था। उन्होने घाव बंद कर दिया।

दूसरे ही दिन से उसकी पट्टी हरे द्रव से रंगने लगी। इस स्त्राव से घाव की त्वचा गल जाती है। महत्वपूर्ण तत्व शरीर के बाहर निकलने लगती है संक्रमण हो जाता है एवं अन्य कई क्लिष्टतायें होने लगती है। मैनें दस दिन श्रीमति तिवारी की मरहम पट्टी की। इसी बीच एक बार निवेदन करने पर डा. भगत ने भी आकर उन्हें देखा। मगर वह स्त्राव कम तक नहीं हुआ। फिर मैनें उसके स्वास्थ्य के लिये साई बाबा से प्रार्थना की और उनके नाम का एक नारियल चढ़ाया। मैनें देखा कि जब भी मेरा मरीज गंभीर हुआ है, साई बाबा से प्रार्थना करने पर या तो वह पूर्ण स्वस्थ हो गया था या संतोषजनक हल निकल आया। मैनें डरते-डरते तिवारी साहब से कहा वे उनकी पत्नि को नागपुर के किसी अच्छे चिकित्सालय ले जायें। वे तत्काल तैय्यार हो गये मगर उनकी लड़की नाराज हो गई। मैं चुपचाप सुनता रहा। उक्त आप्रेशन मैनें डा.मलिक के अस्पताल में किया था। वह छिन्दवाड़ा का सर्व सुविधायुक्त, साफ सुथरा अस्पताल है।

श्री तिवारी साहब उनकी पत्नि को नागपुर के सिम्स अस्पताल ले गये जहां उनको स्टेन्ट डाला गया। उनके घाव का स्त्राव तत्काल बन्द हो गया। इसी बीच मैं छिन्दवाड़ा से नागपुर देखने भी गया। वे ठीक होकर वहां से आ गई। मैनें भगवान को धन्यवाद दिया।

मगर मेरी मुश्किलें यही खत्म नहीं हो गई। उस भद्र महिला को इन्सजीनल हर्निया (जहां चीरा लगाया जाता है वहां का हर्निया) हो गया। उसको दिखाने के लिये वे बार बार मेरी क्लिनिक आती रहीं और मैं शर्मिन्दा होता रहा। वह बहादुर एवं मुझ पर

विश्वास रखने वाली महिला कहती रही कि वह मुझसे ही हर्निया का आप्रेशन करवायेगी पर मैनें उनके हाथ जोड़ लिये।

माँ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब भी हुई निराशा माँ।
तुमने दिया दिलासा माँ।।

तुम कुनबे में घुलती हो।
तिल-तिल तोला माशा माँ।।

तुम जलता दीपक घर में।
तुम विषाद में आशा माँ।।

हम तो एक पत्थर ही थे।
तुमने हमें तराशा माँ।।

तुमने सिर पर हाथ रखा।
जब-जब हुई हताशा माँ।।

माँ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

माँ अपने में मूल प्रकृति है।
सृष्टि उसकी अनुपम कृति है।।

करूणा और ईश्वर सृष्टि में।
माता की ही तो आकृति है।।

शोर शराबे में माँ का स्वर।
कानों में मीठी झंकृति है।।

बालक में माता रहती है।
बालक एक उसकी प्रति है।।

मैं समाधि में जल जाता हूँ।
माँ मन है बुद्धि है धृति है।।

बचपन से वृद्धावस्था तक।
बार बार माँ की आवृति है।।

बातें

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कभी इन्कार की बातें।
कभी इकरा की बातें।।

बड़ी मंहगाई करते है।
सभी सरकार की बातें।।

साहिल पर खड़ी नावें,
करें मझदार की बातें।।

दिखी जो खूबसूरत बुत,
हुई फनकार की बातें।।

शमां ये सोचती, महफिल।
करे बेकार की बातें।।

कभी है शोर सी बातें।
कभी झनकार सी बाते।।

लफ्ज लटकने को

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

एक लफ्ज लटकने को।
एक राह भटकने को।।

है जुबां उनकी आतिश।
है हाथ मटकने को।।

हर दिन हमारा गुजरा।
अपमान गटकने को।।

हमको दिया है उसने।
एक दर्द चटकने को।।

थी मुश्किलें न आया।
कोई दोस्त फटकने को।।

ताकि

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

जब सियासत ही जंगल जलाने लगे।
क्यों न तूफान बस्ती में आने लगे।।

घर के बरतन जब खुद ही खडकने लगे।
क्यों पड़ोसी न आंखे दिखाने लगे।।

रामो रहमान ऊपर दुखी हैं बहुत।
लोग बुत खाने मस्जिद लड़ाने लगे।।

तुमने चिन्गारीं पालीं है तुम ही जलो।
हम भला अपने घर क्यों जलाने लगे ।।

तुम मशालें बनों जलते कचरा नहीं।
ताकि जनता मिसालें बनाने लगे।।

कार्यक्रम की शोभा

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

संयोजक महोदय (काहे के महोदय) का दूरभाष आया कि “श्रीवास्तव सर” आपको दिनांक 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस पर साहित्य प्रचारिणी में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिये आमंत्रित किया जा रहा है। आप अवश्य पधारियेगा। कार्यक्रम सांय सात बजे प्रारम्भ होगा। कृपया समय पर ध्यान रखियेगा। मैनें समय का ध्यान रखा और पौने सात बजे पहुंच गया। मेरी कक्षा के बच्चे पूछते हैं कि क्या पौने सात,

सात से बड़ा होता है ? मुझे बतलाना पड़ता है कि चंूकि पौने सात में पौन, सात से पहले आता है अतः वह सात से कम होता है।

मैं पौने सात बजे अध्यक्ष के कक्ष में पहंुच गया। मैनें कहा "श्रीमान जी, मुझे संयोजक महोदय ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिये आमंत्रित किया था। अतः मैं आ गया। अब कृपया मार्ग दर्शन दें कि मुझे किस तरह कार्यक्रम की शोभा बढ़ाना है ? "मैं सीधे ही उनके कक्ष में चला गया था अतः उन्हें बुरा लग गया। उन्होने सचिच से कहा "गेट पर एक "प्यून" रखना पड़ेगा। जो चाहे देखो मंुह उठाये सीधे ही "ऐन्टर" हो जाता है।" मैं सिकुड़ गया। मैनें कहा "मैं बाहर चला जाता हँू। वे बोले "वेटर" ।

मैनें अपने कानों को साफ किया। मुझे प्रतीत हुआ कि वे बेहतर कह रहे हैं पर मैनें ही "वेटर" सुना। बाहर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिये करीब ढाई सौ व्यक्ति खड़े हुये थे। उनमें अनेक महिलायें भी थी जो सचमुच में कार्यक्रम की शोभा थी। मैनें वर्मा जी से कहा "महिलाओं में महि सम्भवतः मही है। महो का तात्पर्य धरती है। या महो होगा क्योंकि वे दही का मही बना देती है। "वे बोले" नहीं। चूंकि महिलाओं में हि छोटा से छोटे "ई" की मात्रा है। अतः "म" का तात्पर्य मर्द हिला का तात्पर्य परेशान करना होता है। इस तरह हम हिन्दी का ज्ञान वर्धन करने लगे। हिन्दी स्त्रियों के चारो तरफ घूमने लगी।

चतुर्वेदी जी बोले "स्त्री में "त्रि" का तात्पर्य तीन गुणों से होता है। वे है सत्व, रज, और तम। प्रकृति याने पूर्व की कृति। ईश्वर ने पहले मूल प्रकृति को बनाया उससे तीन गुण उद्भूत हुये। पहलवान जी उखड़ गये बोले "तेरे से किसी ने कुछ पूछा क्या ? जब देखो औरत को तोड़ने मरोड़ने लगता है।" इतनें में संयोजक महोदय आ गये। हम में से हरेक सोचने लगा कि शायद वे उसकी तरफ देखकर एक परिचित मुस्कान फेंकेगे। पर ढाई सौ मुस्कोने फेंकना मुश्किल था और वे अन्दर चले गये। जो व्यक्ति दूरभाष पर घिघिया रहा था, घर बुला कर गुर्राने लगा।

अन्दर जाकर उन्होने मंच से घोषणा की "आप सब कृपया अंदर आकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायेगे। पहले मात शक्ति अंदर आयेगी। फिर पुरूष अंदर आयेगे। महिलाओं ने मातृ शक्ति संबोधन सुन कर बुरा माना और पुरूषों ने इसलिये बुरा मानों कि वे सेकेंड्स है, पर सब बुरा मानते हुए अंदर चले गये। कार्यक्रम में कार्य मंच पर हो रहा था और नीचंे क्रम से हम लोग बैठे थे। मैं पीछे की कुर्सी पर बैठा था, तभी कार्यक्रम की शोभा बढ़ती। यदि मैं आगे बैठता तो कार्यक्रम की शोभा कम होने का भय था। मैं पीछे बैठ कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहा था। मंच पर कार्यक्रम चला रहा था और नीचे चीम गोइयां। संयोजक हिन्दी दिवस पर हिन्दी के थोक व्यापारी पकड़ लाये थे और उसे

हिन्दी का लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार बतला रहे थे हमनें ऊपर वालों की बातों को मान ली।

सर्वप्रथम "श्रीराम चन्द्र कृपालु भज मन हरणभव भय दारूणम" छन्द पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। इस पर हाल तालियों से गंूज उठा। फिर मां सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की गई। इस समय मां सरस्च्ती कई कार्यक्रमों में व्यस्त थी। तब मुख्य अतिथि से दीप प्रज्वलित कर पूजा करने को कहा गया। वह उन्होने जूता पहने ही किया हम लोगो ने बुरा माना पर कर ही क्या सकते थे। सन् 2018 में पेट्रोल के भाव बढ़ते ही गये पर हमें लोगो ने क्या कर लिया ? उन्हें बुरा करने का अधिकार है और हमें बुरा मानने का। मंत्रिमंडल पेट्रोल के चढ़ते और रूपयों के उतरते मूल्यों पर मंथन कर रहा है। पेट्रोल के चढ़ते दाम, उनके अधिकार पूरा कर रहे हैं और रूपये उनके गिरते भावों का कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। मुख्य अतिथि जूता पहने दीप प्रज्वलित करने का अधिकार पूरा कर रहे है।

फिर क्रमशः सचिव और अध्यक्ष ने मुख्य अतिथि का अभिनन्दन शाल और श्रीफल भेंट से करके किया। वे वही शाल थे जो भिखारियों को बांटने से बच गये। मुख्य अतिथि का इससे अधिक सम्मान क्या हो सकता था। कार्यक्रम के बीच में हमें मिठाई भी दी गई। मुझे मालूम था कि यह मिठाई किसी के तेरहवीं कार्यक्रम से बची मिठाई थी जो आधे दामों में खरीद ली गई थी। अतः मैनें यह झूठ बोला कि मुझे मधुमेह है। मिठाई लेने से वर्मा जी को षडयंत्र मालूम पड़ा तो उन्होने भी मना कर दिया। फिर तो हमारी पूरी पंक्ति को ही मधुमेह हो गया।

तत्पश्चात कुछ भाषण संयोजक ने दिये। उन्होने हिन्दी की दुर्दशा पर हम को ललकारा। फिर उन्होने उनकी खींच तान कर हुक मिलाई कविता का पालन किया। उनके इस दुष्कर्म की समाप्ति पर आगे वालों ने तालियां बजाई। अब संचालन करने वाले कवि ने उनकी कुछ कार्यक्रम से असंबद्ध कवितायें पढ़ कर मुख्य अतिथि को हिन्दी की शाल में दो शब्द कहने को आमंत्रित किया। मुख्य अतिथि तो माइक पर आने को छटपटा ही ही रहे है। वे संचालक के माइक छोड़ने के पूर्व ही माइक पर आ गये।

उन्होने संस्कृत निष्ठ हिन्दी में वहीं मिभाषण दिया जो वे कई कार्यक्रमों दे चुके थे। उनके अभिभाषण पर हिन्दी की ग्रीवा से ऊंची हो गई क्योंकि उसे हर बार ऐसा करना पड़ता था। वे हिन्दी को बेचते थे। हिन्दी उनके लिये एक मुद्रा से भरा लिफाफा बन चुकी थी। वे पूरे समय बेचारी हिन्दी के लिये उनके उस मूल्यवान योगदान (जो कि कुछ था ही नहीं) का वर्णन करते रहे जो उन्होने विदेशो में (क्या मालूम) किया था।

आगे बैठने वालो को निर्देश थे कि वे उनके हर वाक्य पर तालियां बजायें। इन तालियों का उद्‌गम सभापति से होता है।

मैं पीछे बैठते बैठते ऊबने लगा क्योंकि वहां कुछ सुनाई नहीं दे रहा था और आगे वालों को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। मैनें बाजू में बैठे वर्मा जी से कहा (वे अब मुझे कार्यक्रम संयोजक बन गये थे। कि मुझे आवश्यक कार्य था अतः मैं वह बहुमूल्य कार्यक्रम छोड़ रहा हॅू।धीरे धीरे पीछे की पूरी पंक्ति को आवश्यक कार्य याद आ गये। एक एक करके हाल खाली होने लगा। इस तरह शो कार्यक्रम की शोभा धीरे धीरे खिसक गई। मात्र कार्यक्रम मंच पर रह गया और चलता रहा। मुझे नहीं मालूम हमारे योगदान का कार्यक्रम को सफलता प्रदान करनें में क्या योगदान रहा ?

गरदन तक गड़ी हुई घूरती लाश

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

साकेत उन दिनों छिन्दवाड़ा एडीशनल एस.पी. थे। रात को बारह बजे उनका फोन आया डाक्टर चलो तुम्हे तामिया घुमा लाये। मैं दौरे से वापिस लौटा था मैनें कहा मैं तामिया कई बार गया हॅू। हालांकि तामिया दिन में देखने की जगह है। लेकिन मैं बहुत थका हुआ हॅू अतः मैं नहीं जा पाउंगा उनका फोन आया "ठीक है। मैं आधा घंटे में तुम्हारे घर पहंुच रहा हॅू। तुम तैय्यार रहना मुझे बड़ी कोफ्त हुई। मैनें अपनी ही उतरन फिर पहनी और उनका इंतजार करने लगा।"

वे यथा समय आये और चाय की फरमाईश करने लगे। मैनें कहा "या तो चाय पी लो या अपन तामिया चलें।" वे बोले "अच्छा तो दूसरा विकल्प अच्छा है।" हम लोग तामिया के लिये चल पड़े। मैं सोचने लगा कि इन्हें एम्बेस्डर का मिली है और हमें

फट्टों वाली जीप! साकेत रात को तामिया घसीटने के लिये वे बातें करते रहे और मैं हँू हाँ में जवाब देता रहा।

छिन्दवाड़ा जिला में तामिया एक मिनिहिल स्टेशन है। वह समुद्र तल से 3 हजार फिट की ऊँचाई पर है। अधिकतर पहाड़ियों वृक्षों से लदी हैं अतः ह्नदय मनमोहक और मौसम खुशगुबार रहता है। तामिया पहंुचे तो नगर निरीक्षक पुलिस स्वागत के लिये खड़े थे। जाते ही साकेत ने पूछा "टी.ओ., साहब कहां है वह लाश ! अच्छा तो उनका यह मतलब था मुझे तामिया लाने का। मैनें साकेत जी से कहा "पोस्टमार्टम तो यहां के पदस्थ मेडिकल आफीसर भी कर सकते थे। "अब नखरे मत दिखाओ" वह बोले। वह समूह हमें तहसील से एक किलोमीटर पैदल घुप अंधेरे में एक पहाड़ी के तले में गया। टी.आई ने प्रकाश की व्यवस्था पेट्रोमेक्स से की थी।

उस पहाड़ी की तलहटी में सुनसान जगह पर एक लाश गरदन तक गढ़ी थी। बड़ा भयानक दृश्य था। एक हारर फिल्म की तरह। केवल गदरन और सिर ही धरती के ऊपर निकले थे। उसकी आंखे बाहर निकल रही थी। हमें घूरती हुई। कोई मजबूत दिल वाला आदमी भी डर जाये। उसकी जबान बाहर निकली हुई थी। चेहरा नीला पड़ गया था। मंुह से लार निकली थी। आंखो से आंसू निकले थे। और नाक और मंुह से फसूकर युक्त खून।

मैं आश्चर्य में पढ़ गया और साकेत मुझे इस तरह देख रहे थे जैसे कह रहे हो कि क्यों मियां अब क्या कहते हो। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के तीनो डाक्टर आ गये थे। मैनें डाक्टर सिंह से पूछा "क्यों सिंह साहब क्या मत है।" उन्होने कहा "सर दम घुटने से मौत हुई है। मैनें साकेत से कहा "सर इस आदमी को जमीन में गढ़ा दिया गया है। उन्होने कहा "सही है। जब तक वह इसे गड़ाता गया, टी.आई को कानो कान खबर नहीं हुई। मैनें साकेत जी से कहा इसे बाहर निकाला जाये तो आगे की प्रक्रिया चालू करें।

रात के दो बजे उस लाश को निकालने कुदालियां चलने लगी" । इस तरह के वीभत्स और डरावने दृश्य तो "रामसे" बन्धुओं की फिल्मों में भी नहीं देखे। पहले उसका सीना, फिर धड़ फिर जांघे निकाली गई।" कुछ लोग उस लाश को पुलिस के डर से सहारा दिये रहे। आम आदमियों में पुलिस का डर आधी रात के प्रेतो से भी ज्यादा रहता है। लाश को निकाल कर धोया गया। मैंनें फिर उसे ध्यान से देखा तो उसके पैर में सांप के काटने के "फेन्ग मार्क" थे। मैनें साकेत से कहा "इसे तो लगता है सांप ने काटा है। फिर इसे जमीन में क्यों गढ़ा दिया गया है।

"यही तो रहस्य है "वे बोले ! गांव वालो ने किसी तांत्रिक को बुलाया था। उसने झाड़ू से लाश को मारा। फिर कहा "यदि इसे जमीन में गढ़ा दिया जाये तो जहर उतर

जायेगा। गांव वालो ने इसे जमीन में गढ़ा दिया। इसकी सामूहिक हत्या कर दी गई। मैनें उसके रोते हुये बाप से पूछा “पास में ही तो बड़ा सरकारी अस्पताल है, वहां सांप का जहर उतारने के इंजेक्शन चैबीसो घंटे मिलते है।”

वह बोला मेरी मति ही मारी गई थी जो अपने जिगर के टुकड़े को अनारकली की तरह जिन्दा जमीन में गड़वा दिया। मैनें पूछा “वह तांत्रिक कहाँ है ? गांव वाले बोले “वह हम सब से बीस हजार रूपये लेकर चम्पत हो गया।

चंूकि लाश का पेट फूला था, विष्टा एवं वीर्य बाहर आ गया था, इल्लियां पड़ने लगी और हाथ-पैर ढीले पड़ गये थे। अतः उसकी मृत्यु 18-30 घंटे पहले हुई थी। मैनें डाक्टर सिंह को हिदायत दी कि तब भी विसरा परीक्षण के लिये पुलिस को सौंप देना।

तों जैसे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

कितने थे ! कितने से हैं।

हम उजड़े उजड़े से है।।

तुम दुनिया से चले गये।
और हम प्रेतों जैसे हैं।।

तुम आंगन की चिड़िया थे।
अब हम पेड़ कटे से हैं।।

याद तुम्हारी आंखे है।
वरना हम अंधे से हैं।।

तुम मशाल से आगे थे।
अब हम दिया बुझे से हैं।।

तुम को बचा नहीं पाये।
हम सब शख्श डरे से हैं।।

अग्निवाण बरसाता सूरज

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अग्निवाण बरसाता सूरज।
बंूद बंूद तरसाता सूरज।।
नदी सूख कर सड़क हो गई।

धरा सूख कर कडक हो गई।।
उस का दिल फट जाता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
ढाल वृक्ष थे उनको काटा।
अब सह लो सूरज का चांटा।।
हम पर क्रोध दिखाता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
कृषको का बह रहा पसीना।
अमृत सा पानी का पीना।।
पानी सब ले जाता सूरज।।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
पक्षी कलरव करना भूले।
सूनी सड़कें उड़ें बबूले।।
गर्मी बहुत, सताता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
छांव जरा सी जीवन दाता।
धूप सताती हमें विधाता।।
तलुऐ बहुत जलाता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
धारों जैसा बहे पसीना।
पंखे तरू थे उनको छीना।।
करूणा नहीं दिखाता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
जंगल जंगल आग धुआं है।
प्रलंयकारी दृश्य हुआ है।।
पशुओं को घबराता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
सरीसृपों को घबराहट है।
बाहर आने की आहट है।।
श्वानों को तड़पाता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।
धरती हुई सूख कर पत्थर।

फटी दीखती है पग पग पर।
उसका दिल घबराता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।

पशु पक्षी मरते पानी बिन।
तड़पाती है मृत्यु छिन छिन।
जंगल शोक मनाता, सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।

शोक मना कर पत्ते झड़ते।
हवा खड़ी है ठंूठ बिगड़ते।।
सूखे पेड़ जलाता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।

सभी देखते आसमान को।
मेघों के लघुतम निशान को।।
पानी नहीं गिराता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।

किरणों से पानी पी जाता।
और रात भी बहुत तपाता।।
ताण्डव नृत्य दिखाता सूरज।
अग्निवाण बरसाता सूरज।।

सेवा में,

सचिव आयोजन समिति
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट,

चैम्बर नं. 175
जिला न्यायालय भिवानी 127021
हरियाणा

विषयः- ट्रस्ट द्वारा दिये जाने वाले साहित्य सम्मानों हेतु आवेदन पत्र।

श्रीमान,

मेरा संक्षिप्त परिचय निम्न है -

नाम	डाॅ. कौशल किशोर श्रीवास्तव
पिता	स्व. श्री कोमल प्रसाद श्रीवास्तव
कार्यक्षेत्र	चिकित्सा/साहित्य
जन्मतिथि	15 सितंबर 1946
जन्म स्थान	विदिशा (म.प्र.)
पत्र व्यवहार का स्थायी पता	171 विशु नगर परासिया मार्ग छिन्दवाड़ा म.प्र. पिन 480001

शोध विषय का विवरण - किन्नरों का रहस्यमयी संसार
शोध निर्देशक का नाम - विशाल शुक्ला

श्री राकेश नायडू ने अत्यंत परिश्रम करके इस लेख का कम्प्यूटर टाइपसेट किया है। उनके सहयोग के बगैर यह लेख प्रकाशित नहीं हो पाता। उनके सहयोग के लिए लेखक हृदय से उनका आभारी है।

स्वयं का सत्यापन

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त सभी जानकारी सही है। यदि कोई जानकारी गलत पाई जाती है तो उसके लिए मैं स्वयं जिम्मेदार होउंगा।

छिन्दवाड़ा
दिनांक 13.05.2019

आवेदक के हस्ताक्षर
मो.न. 9424636145

किन्नरो का रहस्यमय संसार

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

पूर्व कथन

मैं सन् 1963 से सन् 1972 तक गांधी मेडिकल काॅलेज भोपाल में अध्ययनरत था। इन 9 वर्षो में मैनेे विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से एम.बी.बी.एस एवं भोपाल विश्वविद्यालय भोपाल उन दिनों तक वह बरकर्तुल्लाह विश्वविद्यालय नहीं बना था) से सर्जरी में एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की। जिस तरह काशी के बारे में उक्ति प्रसिद्ध है कि रांड, सांड, सीढ़ी सन्यासी।

इनसे बचे तो सेवे काशी।।

उसी तरह उन दिनों भोपाल: परदा, गरदा, जरदा एवं नामर्दा के लिए प्रसिद्ध था। किन्नरों की मुख्य बसाहट भोपाल में भारत टाकीज एवं केन्द्रीय पुस्तकालय के मध्य के क्षेत्र एवं लक्ष्मी टाकीज के आस पास थी। किन्नरों का संदर्भ वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में भी आया है। उनका एक गौरवशाली इतिहास रहा है। अर्जुन ने भीष्म पितामह का वध एक किन्नर के पीछे छिप कर ही किया था। पौराणिक काल में किन्नर मनुष्यों से श्रेष्ठ एवं देवताओं के समकक्ष जाने जाते थे। भगवान श्रीराम के द्वारा जनक दरबार में शिव जी के धनुष भंग के समय महात्मा तुलसीदास ने लिखा है:

ब्रहनादिक सुर सिद्ध मुनीसा।
प्रभुहिं प्रसंसटि देहि असीसा।।
वरसहिं सुमन रंग बहु माला।
गावहिं किन्नर गीत रसाला।।

(बालकाण्ड दोहा 261 चैपाई 3-4)

मुगलों के काल में उनका इतना अवमूल्यन हुआ कि विजित हिन्दु राजाओं एवं राजकुमारों के अण्डकोश क्रूरतापूर्वक कुचले जाने लगे। उनमें से बहुत से गौरवशाली राजाओं ने दर्द से चीख कर जान दे दी। जो बच गये उन्हें हरम की जासूसी के लिये चैकीदार बना दिया गया। आज मुजफ्फरपुर में बहुत से ऐसे झोलाछाप क्लिनिक चल रहें हैं जो रू. पचास हजार से लाखो रूपये लेकर वेवश अपहरित युवको को हीजड़ा बनाने का कार्य धडल्ले से कर रहे है। जहां शासन ने कन्या भ्रूण हत्या पर कठोर कानून बना दिये है जहां महिलायें मी.टू. आन्दोलन को जोर शोर से उठा रही हैं वहां इन हीजड़ो के पक्ष में बोलने वाली कोई सामाजिक संस्थ नहीं है। न ही शासन ने इनके

पक्ष में कोई कानून ही बनाया है। शासन की ओर से विकलांगो एवं वृद्धजनों को पेंशन दी जाती है पर समाज का यह विवश वर्ग विकलांग नहीं माना जाता।

भारत के पुरूष प्रधान समाज की क्रूरता एवं मानसिक विकृति के कारण, भूख की अग्नि ने होम डालने के लिये हीजड़ो को "सेक्स मेनियक्स" के साथ शारीरिक संबंध बनाने पड़ते है एवं उन यौन विक्षिप्तो की कई बीमारियां कुछ रूपयों के बदले में लेना पड़ती है। अभी कोई व्यवस्थित अध्ययन नहीं है कि कितने प्रतिशत हीजड़े गोनोरिया, सिफलिया, सेन्क्रायड एनल वार्ट, पीलिया, एडस या केंसर जैसी बीमारियों से इलाज के अभाव में तिल तिल घुट घुट कर मर रहे है। यदि ऐसे अध्ययन किये जायें तो उनके आंतरिक इलाज की कुछ व्यवस्था हो सकती है।

भारतीय समाज के पक्षपात पूर्ण रवैये के कारण सागर एवं कटनी के किन्नर महापौरों को षडयंत्र पूर्वक अपदस्थ कर दिया गया था। यदि उन्हें पद पर बना रहने दिया जाता तो सम्भवतः सागर एवं कटनी की दशा और उज्जवल होती जो किन्नर उनकी मेहनत एवं ईमानदारी से ऊपर उठते भी है तो नगर की भलाई की कीमत पर उन्हें अपदस्थ कर दिया जाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हीजड़ो को समाज का एक अंग ही समझा जाये। उनको (या वेश्याओं को) शारीरिक स्वार्थ के संबंध का माध्यम न समझ कर उनसे सहानुभूति का व्यौहार किया जाये। उनसे नफरत न कर उन पर करूणा की दृष्टि की जाये। किन्नरों को पुरूष वैश्या न समझा जावे कि ये विवश नौजवान है जो देश की प्रगति में प्रशासक शिक्षक, सैनिक, किसान या वैज्ञानिक बन कर हाथ बंटा सकते थे।

इतिहास

नपुंसको का वर्णन श्वेताखतरोप निषद में इस प्रकार आया है

नैव स्त्री नपुमानेष न चैवायं नपंुसक:
यद्यच्छरी मादते तेन तेन स युज्यत ।।

यह जीवात्मा न स्त्री है न पुरूष है और न ही नपंुसक है जिस जिस शरीर को गहन करता है उसी से युक्त हो जाता है कहने का अर्थ यह है कि वैदिक काल में भी नपंुसको से परिचत थी। सब आत्मा सब में एक ही है।

शिखण्डी एक महारथी था। श्रीमद् भगवद्रगीता के प्रथम अध्याय में पाण्डव सेना युद्ध प्रारम्भ होने पर शंखो का उदघोष करती है तब सत्रहवें अध्याय में शिखण्डी का परिचय निम्नानुसार दिया गया है-

काश्यश्च परमेंवासः शिखण्डी च महारथः

घृटद्युम्नों विराटश्च् सात्र्याक श्चापराजितः। यहां शिखण्डी को द्यृष्टद्युम्र विराट एवं भगवान कृष्ण के अपराजये पुत्र सात्यकि के पहले याद किया गया है। शिखण्डी ने महाभारत का रूख पाण्डवों के पक्ष में बदल दिया था। अर्जुन जब उनके आध्यात्मिक पिता इन्द्र के पास गये तब वे उर्वशी के लगातार देख रहे थे। इन्द्र ने समझा कि वे उर्वशी पर आसक्त है। इन्द्र ने रात को उर्वशी को अर्जुन के पास भेज दिया। उर्वशी ने अर्जुन से अभिसार के लिए आग्रह किया। तब अर्जुन ने द्दढ़ शब्दों में यह कह कर मना कर दिया कि वे चंूकि इन्द्र के साथ रमण करती है अतः वह उन्हें मां के रूप में देख रहा था। तब उर्वशी ने अर्जुन को एक वर्ष तक वृहन्नला होने का श्राप दे दिया जो पाण्डो के अज्ञातवास में वरदान के रूप में काम आया। जनक जी के दरबार में भगवान राम द्वारा धनुष भंग करने के अवसर पर श्री तुलसीदास जी ने लिखा है

ब्रह्ननादिक सुर सिद्ध मुनीसा
प्रभुहिं प्रसंसहिं देहि असीसा
वरसाहिं सुमन रंग बहुमाला
गावहिं किन्नर गीत रसाला

मैं एक बार मुल्ताई से छिन्दवाड़ा आ रहा था तो एक मुसलमान तहसीलदार मेरे साथ थे। जब फरिश्तों के बारे में चर्चा छिड़ने लगी तब उन्होने बतलाया कि फरिश्ते न पुल्लिंग होते है और न स्त्रीलिंग। भारत में किन्नरों की परम्परा मुगलों के साथ विकसित हुई। उनके हरम में शताधिक रानियाँ एवं रखैले होती थी। उन पर नजर रखने के लिये हिन्दु गुलामों को किन्नर बना दिया जाता था। इस प्रकार किन्नर उन पर जासूसी का कार्य किया करते थे एवं रानियां उन नपंुसको से प्रेम भी नहीं कर सकती थी। इन किन्नरों ने इतिहास भी बदले है। इन्हें उपहार में भी दिया जाता था।

परिभाषा

परिभाषा:-किन्नर संस्कृत का शब्द है। जो किम् और नर इन दो शब्दों से बना है। संधि होने पर यह किन्नर हो जाता है। किम् का तात्पर्य है क्या एवं नर का तात्पर्य है पुरूष। इसे निम्नानुसार समझा जा सकता है। किम ़ नर किन्नर यानि क्या यह व्यक्ति पुरूष है इन्हें उभयलिंगी,हीजड़ा वृहन्नला या शिखण्डी भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इन्हें यूनक (म्नदनबी) थर्डजेन्डर या बाई सेक्सुअल भी कहते है। संस्कृत में इन्हें अन्य पुरूष का सम्बोधन भी आया है किन्नर का संधि विच्छेद हम ऊपर दे चुके हैं उसी साम्यार्थ में उन्हें किम् पुरूष भी कहा जाता है। किन्नरों को धरती के प्राणियों से श्रेष्ठ प्राणी एवं गन्धर्वो के समकक्ष रखा जाता था जो नृत्य एवं संगीत में पारंगत होते थे एवं अवतारों

द्वारा श्रेष्ठ कार्य हो जाने पर उन पर पुष्प वर्षा करते थे। कालान्तर में उनकी अवमूल्यन उसी प्रकार हो गया जिस प्रकार ब्रहनना या इन्द्र की हुआ।

किन्नर बनने की प्रक्रिया

मुगलों के जमाने में गुलामों, हिन्दुओं या पराजित हिन्दु राजाओं को किन्नर बनाने की प्रक्रिया अत्यन्त क्रूर हुआ करती थी। उन गुलामों को बलात् किन्नर बनाया जाता था। विजितों को मानसिक रूप से तोड़ने का इससे अधिक क्रूर तरीका हो ही नहीं सकता था। जो राजा पहले ही गुलामी स्वीकार नहीं करते थे उन्हें बलात् मुसलमान बनाया जाता था फिर उन्हें किन्नर बना दिया जाता था।

एक अलग कमरे में उन्हें किन्नर बनाने की प्रक्रिया की जाती थी जिसमें कि उनकी चीखे बाहर न जा पायें। वहां उन्हें नशे की दवाइयां दी जाती थी या कभी कभी बगैर नशे की दवाइयां के ही उन पर क्रूरता बरपा की जाती है। फिर उन्हें नग्न कर उनके अण्डकोषों को कुचल दिया जाता था। इस क्रिया में उन्हें असहनीय वेदना होती है। उनकी चीखो को मंुह दबा कर रोक दिया जाता था। अधिकतर गुलाम इस क्रिया के दौरान मर जाते थे। उन्हें फेंक दिया जाता था। जो किस्मत से बच जाते थे वे हीजड़ा बन जाते थे। आधुनिक युग में इस क्रिया को नहीं अपनाया जा सकता। फिर भी उनमें एक कहावत प्रचलित है “अब दुख सदा सुख” कुछ लोगो के अनुसार किन्नर समाज की दाइयों से मित्रता होती है। यदि किसी लड़के का जन्म बगैर अण्डकोशो के होता है तो किन्नर उसे मां बाप से खरीद लेते है।

किन्नरों की समाज वृद्धि की प्रक्रिया बड़ी घिनौनी एवं किसी लड़की को वेश्या बनाने की प्रक्रिया से अधिक घिनौनी एवं दर्दनाक होती है। किन्नर बनाने के लिये दलाल रहते है जो पकड़ कर गुरूओं को बेच देते है। हर किन्नर उन गुरू का शिष्य माना जाता है।

किन्नरों में हारमोनल परिवर्तन

किन्नरों में अण्डकोश या तो होते ही नहीं है या क्रियात्मक नहीं होते। अण्डकोशो में शुक्राणु बनते है। उनमें दो अन्य कोष भी होते है

(1) सेल्स आॅफ लीडिंग एवं

(2) सेल्स आफ सरटोली

उपरोक्त दोनो कोष पुरूष हारमोन यथा टेस्टोस्टोरोन का स्त्राव करते है। इनका नियंत्रण मस्तिष्क की महत्वपूर्ण ग्रंथि एन्टीरियर पिट्यूटरी ग्लेण्ड से होता हैं यह ग्रंथि

फालीकुलर स्टिगुलेटिंग हारमोन या एफ.एस सच का स्त्राव करती है जो महिलाओं में डिम्ब एवं पुरूषों में शुक्राणुओं के निर्माण को नियंत्रित करती है।

जब पुरूषों के अण्डकोष नष्ट हो जाते है तब सेल्स आफ सरटोली एवं सेल्स आफ लीडिंग नहीं रहते। जिससे पुरूष हारमोन टेस्टीस्टीरोन का स्त्राव नहीं होता पर स्त्री हारमोन एड्रीनल ग्रंथियों से निकलते रहते हैं। कुछ पुरूष हारमोन्स भी निकलते रहते है। इससे पुरूष में शारीरिक परिवर्तन होने लगता है। उनमें स्त्रीकरण होने लगता है। साथ ही आवाज भारी हो जाती है। ग्रोथ हारमोन के कारण शरीर स्थूल हो जाता है। स्तन बड़े हो जाते है। स्त्रियोचित हाव भाव आ जाते है।

वर्तमान किन्नरों की समाज रचना

किन्नरों का एक सर्वोच्च गुरू होता है जिसका हर किन्नर अत्यन्त आदर करते है। किन्नरों का एक सार्वजनिक उत्सव होता है। जिसमें हर किन्नर भाग लेते है। ऐसे ही एक उत्सव में तम्बुओं के जल जाने पर अनेक किन्नरों की मृत्यु हो गई थी। किन्नरों का हर शहर में एक मोहल्ला होता है। इसके कई कारण है पहला तो यह कि उनसे तथाकथित सभ्य समाज नफरत करता है। दूसरे उनका व्योहार इस तरह का होता है कि जो तथाकथित सभ्य समाज के आचार विचारों से मेल नहीं खाता। तीसरा कारण यह है कि विस्थापितों की तरह वे एक स्थान पर ही रहना पसन्द करते हैं। चैथा यह कि वे समूहो में निकलते हैं अतः एक स्थान पर रहना उन्हें सुविधाजनक लगता है। ऐसे अन्य अनेक कारण हैं जो एक समूह में रहने को विवश करते है। पढ़े लिखे लोग उन्हें उनके व्यौहार के कारण पसन्द नहीं करते। पढ़े लिखे लोगो का यह डर रहता है कि मालूम नहीं वे कब उनका अपमान कर दें। सभ्य समाज उन्हें हेय दृष्टि से देखता है जिसका उन्हें हर पल अहसास रहता है।

उन समूहो का भी एक मुखिया रहता है जिसका वह समूह आदर करता है एवं उसका हर कहना माना जाता है। उस समाज में कुछ ढोलक बजाने वाले होते है तो कुछ गाना गाने वाले एवं विशेष प्रकार से ताली बजाने वाले। वे स्त्रियोचित श्रृंगार करके ही बाहर निकलते है। वे स्त्रियों की ही वेशभूषा में रहते है। वे अधिकतर फिल्मी गाने ही गाते है। यूं तो फिल्मों में उनके विकृत रूप को ही दर्शाया जाता है पर स्वर्गीय महमूद की एक फिल्म आई थी। वह फिल्म थी स्वर्गीय कंुवारा बाप। उस फिल्म में स्वर्गीय महमूद के पिता का एक नृत्य भी था। उस गाने के बोल थे सज रही गली मेरी अम्मा सुनहरे गोटे में।

किन्नरों के रहस्यमय समाज में तथाकथित सभ्य पुरूष जाना पसन्द नहीं करते एवं न ही उन्हें इसकी आज्ञा है। उन्हें विशेष प्रकार से गाने एवं ताली बजाने की शिक्षा दी जाती है। किन्नरों को उनके धर्म के अनुसार दफनाया जाता है। कुछ किन्नर दफनाये जाने के लिये मुसलमान हो जाते है। पर हिन्दु किन्नरों को चूंकि कुवांरा माना जाता है अतः उन्हें भी दफनाया जाता है। समाज का हर आदमी मानवता के वशीभूत होकर उनके दफनाने में सहयोग करता है। कोई मृत्यु के बाद उनसे दुव्र्यवहार नहीं करता।

आज कल कुछ दलाल नवयुवकों का अपहरण कर उन्हें किन्नर बनाने के लिये देते है। यहां उनका भया दोहन किया जाता है। फिर उन्हें झोला झाप डाक्टर के पास ले जाया जाता है जो स्वयं को बी.यू.एम.एस बतलाते है। फर्रूखाबाद में डा. सिद्धिकी या डा.एम.एस.खान या डा. विनोद जैसे कई झोला छाप डाक्टर रहते है इस आप्रेशन को पुरूष को चपटा करना कहते है ये डाक्टर एक आप्रेशन के लगभग रू. 50,000 लेते है। इनमें बेहोश करने वाले डाक्टर भी रहते है जो स्पाइनल एनीस्थीसीआ देते है फिर उन विवश किशोरो से बलात स्वेच्छा से लिंग परिवर्तन करने की स्वीकृति ली जाती है। कुछ किशोर इस भयानक अनुभव के दौरान एनीस्थीसिया में मर भी जाते है।

इस आप्रेशन में लिंग एवं अण्डकोश काट दिये जाते है। टांके पन्द्रह दिन बाद खोल दिये जाते हैं। ये किशोर आप्रेशन के बाद शर्म से घर भी नहीं जा पाते। इन्हें अजीवन फीमेल हारमोन्स दिये जाते है। विवश होकर उन्हें किन्नरों के समूह में रहना पड़ता है।

कभी कभी उन किशोरो से बलात लिखवा लिया जाता है कि उन्हें लिंग का केंसर है और वे लिंग का आप्रेशन करवाना चाहते है। इसके बाद उनकी गायन नृत्य एवं वादन का प्रशिक्षण होता है। उन्हें पैसे कमा कर उनके नायक या गुरू को देना पड़ते है। प्रशिक्षण में उन्हें महिलाओं के श्रृंगार एवं हाव भाव सिखाये जाते है। यह कानून व्यवस्था के लिये लज्जा की बात है कि दलालों किन्नर समाज में चलने वाले इस घिनौने व्यवस्था एवं झोलाछाप डाक्टरों के इस रेकेट को नहीं तोड़ सकती।

किन्नरो की अर्थ व्यवस्था

किन्नरों की अर्थ व्यवस्था अधिकतर भिक्षा पर आधारित होती है। वे समूहो में नाचते गाते चलते है। किसी घर में जन्म होने, शादी होने, या अन्य शुभ कार्य होने पर वे एक साथ समूह में पहंुच जाते है। फिर वे उनके संगीत, नृत्य एवं गायन के बाद एक साथ हजारो रूपयों की मांग कर बैठते है। भारतीय समाज में यह धारणा प्रचिलित

है कि उनकी दुआये बच्चे को दीर्घजीवी एवं सुखी बनायेंगी। वे सद्यजात शिशु को कुछ देर गोद में रख कर खिलाते भी है।

वे फिर उनकी मांग पर अड़ भी जाते है पर धीरे धीरे भाव ताव करने पर वे एक स्थल पर राजी हो जाते है और बच्चे को दुआयें देकर चले जाते है। वे तीज त्यौहार पर भी गाते बजाते घरों घर पैसे मांगने आते है। आजकल वे ट्रेन एवं बसो में भी पैसे मांगने आ जाते है। कभी कभी वे ट्रेन के यात्रियों से पैसे भी छीनने लगते है। उनकी इस छीनने वाली प्रकृति से सामान्य लोग उनसे भय खाते है एवं उनसे पीछा छुड़ाने के लिये उन्हें मनमाने पैसे दे देते है। अन्यथा वे शरीर का स्पर्श करने लगते है एवं अपशब्द बोलने लगते है।

अर्थोपार्जन के लिये कुछ किन्नरों को विकृत मानसिकता वाले लोगो के साथ यौन संबंध बनाना पड़ते है। ये विकृत मानसिकता वाले उनके साथ अप्राकृतिक मैथुन विशेषकर गुदा मैथुन करते हैं जिससे किन्नरों को उनके यौन जनित रोग हो जाते है। उन रोगो का वर्णन अन्यत्र किया जायेगा। किन्नर उनके नाम स्त्रीलिंग में रखते है जैसे बबिता, कविता, सविता, मेहरून्निसा आदि। हालांकि वे किंपुरूष होते है। कुछ युवक पैसा कमाने या उनके परिवार का खर्च चलाने के लिये स्वेच्छा से इस व्यवस्था में शामिल हो जाते है। वहीं कुछ क्रूर मां बाप विवशता में उनके बच्चों को दलालों को बेच देते है।

किन्नर और मूल धारा के साथ उनके संबंध

जैसा कि कहा जा चुका है कि किन्नरों को सामान्य समाज पसंद नहीं करता। वह उनसे दूरी बना कर रहता है। इसके लिये दोनो ही वर्ग जिम्मेदार है। किन्नरों के द्वारा सामान्य समाज के प्रति उनके ताली बजाने के तरीके, नाच गाने के तरीके, हाव भाव भगिमा, पैसे मांगने की हठ, बददुआये देना इत्यादि सिरे से ही ना पसंद है पर यह किन्नरों की सदियो से चली आ रही परम्परा है। कोई उन्हें बतलाता नहीं कि अब शुभकानायें देने के तरीके बदल गये है।

दूसरे समाज के निचले तबके के लोगों को उनके इस व्यौहार में आनंद आता है और वे इसे प्रोत्साहित करते है। इससे किन्नर सोचते हैं कि वे सही रास्ते पर चल रहे हैं। दूसरी ओर सभ्य समाज सहानुभूति पूर्वक व्यौहार नहीं करता। उन्हें देख भय खाता है। उनका समूह आता देख कर दरवाजे बंद कर लेता है जबकि वे सहानुभूति के पात्र होते है। मगर हम उन्हें हीन दृष्टि से देखते है।

विभिन्न उत्सवों पर हम वर्ग विशेष को आदर के साथ भोजन के लिये आमंत्रित करते हैं एवं विदा करते समय तिलक लगा कर अभिवादन करते हैं पर क्या किन्नरों के

साथ कभी इस तरह की परम्परा समाज ने डाली ? यदि ऐसा करने लगे तो सामाजिक व्यौहार का परस्पर आदान प्रदान होगा और उन्हें सामाजिक मूलधरा में मिलाया जा सकेगा। यही व्यवहार हमें वेश्याओं के साथ भी करना चाहिये। दूसरी ओर हम उनसे जानवरों से बदतर व्यौहार करते है तो वे भी हमें अपनी भाषा में जवाब देंगे।

कुछ लोग उन्हें केवल स्वयं की यौन तुष्टि के लिये उपयोग करते हैं और उन्हें कई बीमारियों के हवाले कर देते हैं जो लोग “सेक्स ओरगी” के लिये उपयोगी करते है वे स्वयं भी उन्हीं बीमारियों को लेकर घर आ जाते है और फिर स्वयं के निर्दोष परिवार को भी उन्हीं बीमारियों से ग्रसित कर देते है।

मानव जाति की इस लुप्त होती हुई प्रजाति के बीच एन.जी.ओ को भी कार्य करना चाहिये। उन्हें उनके सामाजिक संरचना, आचार विचार, समस्यायें और उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना चाहिये। स्वयंसेवी संगठनों को उनके और समाज की मूल धारा एवं सरकार के बीच सेतु का काम करना चाहिये। किन्नर एक अच्छे प्रशासक हो सकते है जैसा कि उन्होने सागर नगर निगम का महापौर होकर दिखाया पर सभ्य समाज के घिरे घिनौने षडयंत्र ने उन्हें अपदस्थ कर दिया।

किन्नरों की स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें

मैं जब गांधी मेडिकल कालेज भोपाल में सरजरी का हाउस मेन था तब एक किन्नर गुदा द्वार में कुछ समस्या लेकर आया। जब मैनें उसका परीक्षण किया तब उसके गुदा द्वार में कई एनल वार्ट्स थे। यह एक यौन जनित रोग है। किन्नरों को गुदा द्वारा से मैथुन करने वाले पुरूष पेसिव एजेन्ट (अक्रियाशील भागीदार) की तरह उपयोग करते है। उनके गुदा द्वार को वे महिला की योनि की तरह उपयोग करते है।

किन्नरों में होने वाली रोगो को हम मूलतः तीन वर्गो में बांट सकते है (1) वेत्रस्ट्रेशन (अण्डकोशो का काटना) (2) यौनजनित रोग (3) मानसिक एवं सामाजिक समस्यायें

वेत्रस्ट्रेशन से उत्पन्न रोग

अण्डकोश में मूलतः दो तरह के कोश होते है एक वे जो शुक्राणु उत्पन्न करते है और दूसरे वे जो हारमोन्स उत्पन्न करते है। ये सेल्स आफ लीडिंग और सेल्स आफ सरटोली कहलाते है। इनको शुक्र वाहिका की धमनी रक्त पहुंचाती है। इसके नष्ट होने से मेल हारमोन यथा टेस्टोस्टीरान उत्पन्न नहीं होते। यह हारमोन पुरूषों में पुरूषोचित चिन्हन उत्पन्न करता है। इनकी अनुपस्थिति में महिलाओं के हारमोन्स बढ़ जाते है।

अतः किन्नरों में महिलोचित गुण यथा दाढ़ी मूछों की अनुपस्थिति स्तन का बढ़ना बाजू एवं पेडू के बालो का कम होना उत्पन्न होना इत्यादि गुण उत्पन्न हो जाते हंै इस परिवर्तन से जहां उन्हें पोस्टेट गं्रथि का कैंसर कम होता है वहीं स्तन कैंसर के प्रकरण बढ़ सकते है। उनका लिंग भी काट दिया जाता है जिसकी मूत्र संस्थान के संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। उन्हें ईस्ट्रोजेन नामक हारमोन पर भी रखा जाता है, जो एक फीमेल हारमोन इससे उनमें स्त्रियोचित गुण एवं हावभाव पैदा हो जाते है।

यौन संबंधी रोग

सभ्य समाज के कुछ पुरूष उसकी यौन संतुष्टि के लिये किन्नरों से यौन संबंध रख लेते है। वे उनसे सोडोमी (गुदा मैथुन) करते है जिससे किनरों को यौन रोग हो जाते है। उन रोगो की लिस्ट बहुत लंबी है उनमें से कुछ के नाम नीचे दिये जा रहे है।

(1) गोनोरिया

(2) सिफलिस

(3) लिम्फो ग्रेनुलोमा इन्गुवाइनेल

(4) एनल वार्ट

(5) हरपीज

(6) पीलिया

(7) एड्स इत्यादि

महिलाओं की तरह किन्नरों में भी यौन जनित रोगो के बाह्नय चिन्ह्न नहीं होते। गुदा से पीव आना, शौच में कष्ट गुदा के आसपास छाले, वार्ट, जांघो के ऊपर गठानों का बढ़ना पूरे शरीर में गठानों का होना बुखार आना आंखो का आना जोड़ो की सूजन विभिन्न प्रकार के कैंसर मंुह में छाले आदि कुछ लक्षण हो सकते है उनका व्ही.डी.आर एल टेस्ट गुदा के स्त्राव का परीक्षण, लिवर फंक्शन टेस्ट, इत्यादि करवाना चाहिये। जिसमें रोगो की पहचान एवं इलाज करवाया जा सके।

उन्हें गुदा मैथुन के समय क्रियाशील भागीदार (एक्टिव पार्टनर) को कंडोम के उपयोग पर बल देना चाहिये।) जिससे कि यौन जनित रोगो से बचाव हो सके एवं उनका प्रसार रोका जा सके।

मानसिक एवं सामाजिक अपमान

रास्ते चलते लोग उन्हें हिजड़ा एवं छक्के इत्यादि कह कर बुलाते है जिससे उन्हें बड़ी मानसिक पीड़ा होती है। उन्हें अपमान के घूट पीना पड़ते है, धीरे वे फिर इसके आदी हो जाते है। समाज को इस जहर पान करने वाले समाज के प्रति रवैय्या बदलना चाहिये।

इनमें यदि समाज घुल मिलने का अवसर दे तो बहुत अच्छा। जब हम विकलांगो के प्रति करूणा रख सकते है तो किन्नरों केति क्यों नहीं ?

सरकार एवं किन्नर

सरकार के प्रतिनिधियों का ध्यान किन्नर समाज के प्रति बिल्कुल नहीं जाता और सरकार के लिये यह एक शर्म की बात है। सरकार को उन्हें विकलांगो की तरह पेन्शन देना चाहिये जिससे वे इज्जत से जीवन यापन कर सके। सरकार को प्रौढ़ शिक्षा के तहत उनमें शिक्षा का प्रसार करना चाहिये। उन्हें मकान मुहैय्या करवाना चाहिये। उनसें स्किल डेवलपमेंट जैसे कार्यक्रम के द्वारा राष्ट्र की प्रगति में उनका योगदान प्राप्त करना चाहियें

किन्नरों की समस्या को समझने ओर सुलझाने के लिये सरकार को हर जिले में एक समिति बनाना चाहिये। जिसमें किन्नरों के प्रतिनिधि एवं शासन के अधिकारी माह में कम से कम एक साथ बैठे। इस समिति में स्वयंसेवी संस्था के प्रतिनिधि एवं शासकीय चिकित्सक भी आमंत्रित किये जाने चाहिये। इसकी रिपोर्ट प्रति माह शासन को भेजी जानी चाहिये। कुछ बेरोजगार स्वेच्छा से घर का खर्च चलाने के लिये किन्नर बन जाते है। उन्हें इस कार्य के लिये असहनीस शारीरिक एवं मानसिक यंत्रणा से गुजरना पड़ता है। इस पलायनवाद को रोकने का एक मात्र उपाय बेरोजगारो को बेरोजगारी भत्ता है।

शासन को किन्नरों का पुर्नस्थापन करने की पहल करना चाहिये एवं उन्हें व्यापार के लिये ऋण उपलब्ध कराना चाहिये एवं उनके कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना चाहिये। शासन के दलाल, गुरूओं एवं झोला छाप डाक्टरो के नेक्सस को तोड़ना चाहिये इससे किन्नर समाज के प्रति “हय्ूमन” ट्रेफिकिंग” को रोका जा सकेगा।

किन्नरो से समाज सेवा के कार्य करवाये जा सकते है। इसके लिये शासन को श्रम मूल्य देना पड़ेगा। इससे किन्नरों द्वारा भीख मांगना एवं लूटपाट पर अंकुश लगाया जा सकेगा। किन्नरों का रूप धारण कर लूट पाट करने वाले सामान्य व्यक्तियों को पकड़कर सजा का प्रावधान करना चाहिये।

मेरा ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सन् 1970 में मैने डाक्टर संतोष सिंह (प्रोफेसर आफ आफ्घेल्मालाजी) से नेत्र ज्योति की जांच करवाई। डा. संतोष सिहं बिल्कुल श्वेतवस्त्रधारी थे। श्वेत पगड़ी, श्वेत कुरता, श्वेत चूड़ीदार पाजामामानों उनकी पहचान थी। एक ऋषिवत् शांति उनके चेहरे पर हमेशा विराजती थी।

मुझे उस समय के पूर्व से ही आज तक दाहिनी आंख से सीधी पंक्ति देखने पर मध्यमा में एक कोणीय वक्रता दिखती है प्रोफेसर संतोष सिंह ने आफ्थेल्मोस्कोपी करके बतलाया कि मुझे एक्लिप्स बर्न (बगैर सहायता के सूर्य ग्रहण देखने से दृष्टि केन्द्र (रेटिना का वह भाग जिससे मानव देखता है डिस्क या फोबिया का जल जाना) है।

सन् 2000 में मैने महसूस किया कि जब मैं यात्रा में (बस, कार या जीप) जागता रहता हँू तो मेरी दांई आंख दुखने लगती थी और वह नींद पूरी होने पर ही ठीक होती थी। यह दर्द अनन्नास का अधिक रस पीने, अधिक चाय या काफी पीने, अधिक चाकलेट खाने, अधिक कोका कोला पीने, ए.सी. की सीधी हवा लगने, अधिक तनाव या क्रोध करने, अधिक सम्भोग करने पर बढ़ जाता था। कभी कभी तो अधिक तेज हवा लगने यथा स्कूटर से घर आने पर इतना बढ़ जाता था कि रास्ते में तीन या चार बार रूकना

पड़ता था, जैसे "इन्टरमिटेन्ट क्लाडिकेशन" में चलनेपर जांघो टांगो या पैरो का बढ़ जाता है।

सन् 2005 में मैं जबलपुर में था। तब एक दम ही दोपहर में दाहिनी भौहों के ऊपर दाहिने गाल पर ऊपर के दाहिने होंठ पर दर्द होने लगा। यह दर्द असहनीये मिर्गी के झटकों के जैसा नाक एवं गाल के जंक्शन की रेखा में होने लगा। यह दर्द दतना असहनीय था कि बोलने या खाना खाने तक में होने लगा। यह दर्द हर दो से पांच मिनट में होने लगा तब मेरे आंखो में आंसू आने लगे एवे नाक से पानी बहने लगता। यह दर्द ऊपर देखने, सिर ऊपर करने पर दाहिनी तरफ देखने पर बढ़ जाता।

जबलपुर में किन्ही होमियोपेथिक के चिकित्सक को दिखाया। उन्होने कुछ गोलियों एक एक घंटे से खाने को दी। पर परिणाम शून्य ही रहा। हम लोग भाग कर नागपुर आये वहां दो या तीन न्यूरोलोजिस्टों को दिखाया। उन्होने एक मत से कहा कि मुझे दाहिनी तरफ की ट्राइजेमिनल नर्व की प्रथम दो शाखाओं का ट्राइजेमिनल न्यूरेल्लिजया है। (ट्राइजेमिनल नर्व मस्तिष्क को चेहरे की संवेदनायें ले जाने वाली पांचवी नर्व है।) बाद में डा. द्विवेदी ने बतलाया कि इसे हम सेन्सरी एपीलेप्सी भी कह सकते है।

जांचे विशेषकर इलेक्ट्रो एनसिफेलो ग्राम, स्कल की एम आर आई या रक्त की जांच सामान्य निकली। हां नर्व कन्डक्शन में बतलाया गया कि कन्डक्शन धीमा है। चिकित्सकों ने मुझे कार्बामेजापिन 200 मि.ग्रा. हर छः घंटे में खाने के लिये दी। उनसे दर्द तो कम हुआ पर "निस्टेगमस" (नेत्र गोलको का यहां वहां घूमना) धूमिल नजर एवं टांगो का बहकना होने लगा। फिर मुझे एक एंटी डिप्रेसेन्ट (शायद फ्लोक्सीटिन या कुछ और) दी गई। जब तक उसका असर रहता तो दर्द नहीं होता था पर जब उसका असर कम होता तो दर्द "बाउन्स" करके आता। यहां तक कि मैं चल भी नहीं पाता था पैरो की घमस तक असहनीय दर्द देती थी।

मैनें यह दर्द एक या दो साल सहन किया। मुझे बतलाया गया कि इस दर्द का आप्रेशन भी होता है जिससे मृत्युदर एक प्रतिशत है। इस डर से मैनें आप्रेशन का विचार छोड़ दिया। इस आप्रेशन को खापड़ी के पिछले भाग से किया जाता है। इसमें पांचवी नर्व एवं एक "एवरेन्ट आर्टी" असमान्य धमनी के बीच "टेफ्लान ग्राफ्ट" रख दिया जाता है।

लगभग दर्द के भय से मैं गर्मियों में पन्द्रह दिन नहाया तक नहीं। मेरी दाहिनी आंख में कीचड़ जम जाती थी जिससे दर्द के भय से मैं निकाल भी नहीं पाता था। एक कमरे में ही मैं सीमित होकर रह गया था। बाहर निकलने पर भी दर्द होता था। हवा तक मुझे बेहद दर्द देती थी। बादल होने पर मुझे दर्द होता था।

इसी बीच मेरा दर्द ऊपर के जबड़े के चैथे दांत पर सिमट गया। मैनें सोचा शायद उस दांत के कारण सारा उपद्रव हो रहा है ? वह दांत निकलवाने मैं डा. पाराशर के पास गया। वे एक कुशल डेन्टल सर्जन हैं। उन्होनें दांतो का बारीक परीक्षण कर स्पष्ट रूप से कह दिया कि मेरा दर्द किसी दांतो की समस्या के कारण नहीं है। और उन्होने भी मुझे कार्बोमेजापिन लिख दी। तब भी मैनें दाहिनी उपरी प्रथम प्रीमोलर निकलवा दिया। मगर इससे लगभग तीन महिनों मेरा दर्द गायब रहा मगर फिर होने लगा।

मेरी बड़ी पुत्री मुझे सीम्स हास्पिटल नागपुर ले गई। वहं के प्रभावी कोई बदमिजाज वृद्ध चिकित्सक थे। उन्होने मुझे देखने से मना कर दिया। पर उसी चिकित्सालय के एक नवयुवक डा. काबरा ने मुझे देखा और कार्बामेजापिन के साथ गादापिन सौ.मि.ग्रा. की गोलिया लिख दी। उन दोनो के “कम्बीनेशन” से मेरा दर्द बिल्कुल गायब रहने लगा।

मगर यदि तेज हवा बाहर भी चलती है तो मुझे बंद कमरे में भी दर्द होने लगता है। इसी तरह बादलों के आसमान में होने पर भी दर्द होने लगता है जब तक कि वे बरसने नहीं लगते। यदि बादल छिन्दवाड़ा से साठ किलोमीटर भी दूर होते हैं तो मुझे दर्द होने लगता है। कभी कभी तो उड़ीसा या मद्रास में तूफान आने पर, या मानसून भारत में कहीं भी आने पर दर्द होने लगता है। मैं दर्द होने पर बतला सकता हँू कि कहीं आसमान में बादल हैं भले ही वे छिन्दवाड़ा में न दिखे।

कार्वामंेजापिन से मुझे सोडियम की कमी हो जाती है जिससे मेरे पैर बहकने लगते है इसी तरह केल्सियम की कमी हो जाती है। अधिक शक्कर खाने, खट्टा खाने या मिथाइल कोवालेमीन खाने से दर्द बढ़ जाता है। यहां तक कि बी काम्पलेक्स की गोली खाने पर भी लगता है कि इनसे पांचवी नर्व की उत्तेजना बढ़ जाती है। इसी “थ्योरी” के चलते मैनें डायजापाम 5 मिग्रा. रात को लेना चालू कर दी। अब मैं 600 मि.ग्रा. (कन्ट्रोल्ड रिलीज) कार्वामेजापिन 300 मि.ग्रा. गावापिन 0.5 मिग्रा डायजापाम एवं 250 मिग्रा. सोडावाई कार्ब की गोली खाने में बहुत कम्फर्टेबल हँू। मगर मैं दांतो को ब्रश के बजाय उंगलियों से घिसता हँू। सेन्सोडाइन रेपिड रिलीफ टूथ पेस्ट का उपयोग करता हँू। काबामेजापीन एक एन्टी एपीलेप्टिक एवं मूड स्टेबिलाइजर है। यह ड्रग आफ च्वाइस है पर किसी भी एन्टी एपिलेप्टिक का प्रयोग किया जा सकता है।

मुझे दर्द तीखी गंध, रेफ्रीजरेटेड सामान कपूर, पिपरमेन्ट, फारमेल्डीहाइड से पकाये हुये फल, खाने के प्रिजरवेटिव (यथा मिथाइल पेरावेन, प्रोपाइल पेरावेन आदि) स्वचलित वाहन की खिड़की के पास बैठने पर, ए.सी. (कमरा या कार) आदि से बढ़ जाता था (है)। इसी तरह अधिक खटाई, पोदीना या धनिये की चटनी से भी दर्द बढ़ जाता है।

ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया
(कुछ मनोरंजक घटनायें)

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भारत वर्ष में हर बीमारी को जड़ से उखाड़ा जाता है मानो बीमारी की जड़े तना और पत्ते रहते हो। इस पवित्र कार्य के लिये आयुर्वेद एलोपेथी, यूनानी होम्योपेथी, योग सिद्ध तंत्रमंत्र, चुम्बक थेरेपी रंगीन पानी थेरेपी, स्पर्श थेरेपी, दादी के नुस्खे इत्यादि सब एक साथ मरीज पर टूट पड़ती है। यदि मरीज ठीक हो जाता है तब से पेथीज में श्रेय लेने की होड़ लग जाती है और

तांत्रिक लोग

(1) जैसे किन्नरों को ज्ञात हो जाता है कि किस घर में ताजा ताजा शिशु जन्मा है वैसे ही तांत्रिको को भी ज्ञात हो जाता है कि शहर में कौन असहनीय समस्या से ग्रस्त है। एक तांत्रिक महोदय को जब ज्ञात हुआ कि मुझे ट्राइजेमिनल न्यूरोल्जिम हुआ है तो वे कृपा पूर्वक मेरे घर आ गये। उन्होने मुझे कुछ चबाने को दिया और कहा कि उसे चबा कर मैं घर के पिछवाड़े से बाहर फेंक दूं फिर मुड़ कर न देखंू।

मैनें वह पान चबा कर घर के पीछे के आंगन से पीछे फेंक दिया, पर एक दम ही दो प्रतिक्रियायें हुई वह पान घर की बाउंड्री के अंदर ही फिंका मैनें उसे दुबारा उठा का बाहर फेंक दिया। जब मैं मुड़ कर घर के अंदर जाने लगा तो उस अंधेरी रात में मुझे किसी के खिलखिलाने की आवाज आई। मैनें एक दम पीछे मुड़ कर देखा तो वहां कोई क्यों होने लगा ? मेरी पत्नि ने गहरी सांस लेकर कहा “अब क्या फायदा” ?

(2) दूसरे दिन हमने एक मेडिकल रिप्रिजेन्टिव के जरिये फिर उसी तांत्रिक को बुलाया। वे मेरे भीपरिचित थे। उन्होने ध्यान से मेरी असफलता की गाथा सुनी। फिर कुछ देर चुप रह कर बोले अब कुछ नहीं हो सकता। दूसरा प्रयोग बतलाता हँू। शायद सफल हो जाये।” उन्होने मुझे फिर एक पान खाने को दिया और कहा आधी रात को इसको चबाते हुये जाना और किसी चैराहे पर थूक देना। ध्यान रहे कि इस दौरान

आपको कोई टोके ना” मैनें कहा “पर सर बाजू में ही शादी हो रही है और शहर में मुझे सब जानते हैं।”

वे उठते हुये बोले” अच्छा डाक्टर साहब मैं चलता हूँ।” मैं रात को तीन बजे उस सर्द रात को कम्बल ओढ़ कर पत्नि के साथ बाहर निकला। उस बर्फ जमा देनी वाली ठण्ड रात को भाग्य वश हमें कोई नहीं देख पाया। मैनें एक चैराहे पर पान थूका और वापिस आ गया। पर वह प्रयोग असफल रहा।

(3) डा. पेठे एक सेवा भावी चिकित्सक है। इसीलिये वे मेरे मित्र भी है। वे एक तांत्रिक को लेकर मेरे घर पर आ गये। उन्होने तांत्रिक क्रिया के लिये लौंग और कुछ नीवेयों का अनुष्ठान बतलाया। फिर कहा “आप कहां तकलीफ करेंगे डाक्टर साहब ! मैं स्वयं ही नींबू और लौंग साथ लेकर चलता हूँ। यह कह कर उन्होने झोले में से कुछ नींबू और लौंग निकाली। उन पर कुछ मंत्र फूंका। फिर मुझसे कहा कि उन्हें घर के पीछे फेंक दिया जाये। तांत्रिक लोग न जाने क्यों मेरे घर के पीछे पड़े रहते थे। मैनें वैसा ही किया पर कुछ लाभ नहीं हुआ।

(4) वही डाक्टर साहब फिर एक तांत्रिक को पकड़ लाये। मुझे धुआं मानसिक केन्द्रीकरण एवं चिंगारी को देखने से बड़ी तकलीफ होती थी। मगर उन्होने एक अगरबत्ती जलाई और फिर उसकी चिंगारी को लगातार देखने को कहा। मैं आधी अगरबत्ती तक तो उसे बड़ी मुश्किल से देखता रहाफिर मेरा न्यूरेल्जिया एक दम भड़क गया। दर्द असहनीय हो गया। मैनें उन तांत्रिक महोदय के हाथ जोड़े और प्रयोग आधे में ही बंद कर दिया। उन्होने निराश होकर कहा कि यह प्रयोग पूरा कर लेते है तो दर्द बिल्कुल अच्छा हो जाता। मैनें जवाब दिया “स्वामी, पूरी अगरबत्ती तक बचता ही कौन ?”

तांत्रिको पर टिप्पणी - हो सकता है कि कुछ तांत्रिक सिद्ध होते हो “पर अधिकतर अज्ञान का लाभ उठा कर भयादोहन ही करते है।

(5) मैनें स्वयं के दर्द के लिये कुछ नाजूमियों की भी सलाह ली। एक साहब के पास मुझे उनके शार्गिद ले गये। उन्होने कहा कि नजूमी जी कुछ लेते नहीं है, बस एक किलो काजू ही पर्याप्त हैं। में किलो काजू लेकर उनके पास गया। उन्होने कहा डा. साहब आप मेरा पेट का दर्द ठीक कर दीजिए मैं आपका सिर का दर्द ठीक कर दूंगा।” मैं तैय्यार हो गया। उन्होने मुझे एक तावीज दिया और सिर में दाहिनी तरफ बांधने को कहा। मैनें कल्पना कि वह तावीज लटकाये मैं चिकित्सालय में जहां मरीज, मेरे अधीनस्थ कर्मचारी एवं वरिष्ठ अधिकारी आते हैं, को मैं कैसा लगूंगा ? मैनें वह प्रयोग करने से मना कर दिया। पर मेरे इलाज से उनकी अमीतिक कोलाइटिस जरूर ठीक हो गई।

(6) मेरे एक मित्र श्री मोहनीश खान मुझे एक देवीजी के मंदिर ले गये जहां उनके पुजारी झाड़ फूंक कर इस तरह के दर्द ठीक करते है। उन्होने मुझे दो या तीन बार मंदिर में बुलाया। वह एक भव्य मंदिर है। वे सम्भवतः कुछ राख मेरे सिर पर मलते थे एवं कुछ प्रसाद देते थे। मैं तीन या चार बार उनके पास गया। जब तक वे दिमाग पर राख मलते थे मैं ठीक हो जाता था। पर मंदिर के बाहर आते ही दर्द फिर चालू हो जाता था। अतः मैनें वह प्रयोग बंद कर दिया।

नानी के नुस्खे

स्वर्गीय श्री पाण्डे जी हमारे परम मित्र हुआ करते थे। वे मेरे दुख को देख कर बहुत दुखी थे। एक दिन वे बोले "भैय्या, आपको माइग्रेन है। माइग्रेन में कपूर बड़ा लाभकारी होता है कल से मैं एक लड्डू में कपूर लाया करूंगा। बस तीन दिन का ही तो कोर्स है। मैं घबरा कर बोला "आप देख रहे हैं। कपूर की गंध से भी दर्द भड़क जाता है। आप के प्रयोग रहने ही दें।"

मगर उन्हें कौन रोक सकता था। वे दूसरे दिन कपूर का एक डिगला पेड़े में लेकर आ गये। मैं घबरा गया। पर उन्होने वह पेड़ा मेरे मंुह में ठंूस दिया। उससे मुझे इतना दर्द हुआ कि मैं तड़प कर रोने लगा। मगर वे कहां मानने वाले थे। दूसरे दिन वे फिर एक पेड़ा लेकर हाजिर हो गये। मैं भागने लगा तो उन्होने मेरे शुभचिन्तको से मेरे हाथ पैर पकड़वाये, खुद उन्होने मेरा मंुह खोला और वह पेड़ा मेरे मंुह में ठंूस दिया।

मेरा दर्द असहनीय हो गया। आंसू आने लगे। मैं छत पर जाने लगा। उन्होने पूछा कहां जा रहे हो ? मैनें कहा आपसे पीछा छुड़ाने। वे बोले आत्म हत्या मत करना। अभी एक डोज और बाकी है।" वे तीसरे दिन जब आये तो मैं बिस्तर पर नहीं था। उन्होने पत्नि से पूछा "भैय्या कहाँ है ? पत्नि ने जवाब दिया "वे डर कर घर छोड़ कर भाग गये।" उन्हें मेरे भागने का दुख नहीं हुआ वरन तीसरी डोज छूट जाने का दुख हुआ। दुखी होकर बोले "तीसरी डोज हो जाती तो अच्छा था।" यदि आज का गेप हो गया तो कल से फिर तीन डोज खिलाना पडेंगी।"

आयुर्वेद

(1) आयुर्वेद की कुछ दवाइयो से ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया का दर्द एक दम गायब हो गया था। उस गोली का नाम बैद्यनाथ सिरस्त्राण या ऐसा ही कुछ नाम था। उसके खाने से मुझे कार्बामोजापिन लेने की आवश्यकता न होती। पर उसके यौगिकों में कुछ

“हेवी मेटल” की भस्म थी इसीलिये मैनें वह गोली बंद कर दी। इस डर से कि वे भस्में गुर्दे को नुकसान पहंुचा सकती हैं

(2) श्री चन्द्रभान चैधरी छिन्दवाड़ा के विधायक थे। उनहोने समाज सेवा के लिए एक वैद्य जी रखे है। वे मुझे किसी औषधी की पत्तियां देते थे। उन्हें रात भर पानी में रखना पड़ता था एवं दूसरे दिन सुबह उनको चबा कर निगलना पड़ता था। उन पत्तियों से मुझे बहुत लाभ हुआ। मेरी कार्बामेजापिन की मात्रा बहुत कम हो गई थी। पर झिझक के कारण मैं बार बार उनके पास नहीं जा सकता था। मैनें उसे अनेक बार पूछा पर उन्होने पत्तियों का नाम नहीं बतलाया। यह प्रयोग झिझक के कारण बंद हो गया।

(3) मेरी बीमारी के प्रारंभिक दिनों में कोई एक अधेड़ वैद्य थी घर पर आने लगे। वे बोलते तो मीठा थे पर काढ़ा कड़वा देते थे। वे मेरी पत्नि को बिटिया बिटिया कह कर बुलाते थे। एक बार मेरी पत्नि ने कहा “इन्हें कुछ हो गया तो ?” वैद्य जी बोले “बिटिया मैं तो हूँ।” मैनें उन्हें भगा दिया। (मैनें उनका काढ़ा एक माह पिया पर कोई लाभ नहीं हुआ था।

होम्योपेथी

(1) डा. जैन की दवाइयों से मुझे बहुत लाभ हुआ था। लगभग एक माह मुझे कार्वामेजापिन नहीं लेना पड़ीं। पर मैं उनका कुछ कार्य नहीं कर पाया। इसलिये मैनें उनके पास जाना छोड़ दिया।

(2) जबलपुर में एक डाक्टर मिश्रा (सेवा निवृत डीन शासकीय मेडिकल कॉलेज) के पास गया। मेरी स्लिप पहंुचने के एक घंटे बाद उन्होने मुझे बुलाया (आजकल यदि कोई बाहर का चिकित्सक इलाज करवाने जाता है तो वहां के विशेषज्ञ झल्ला जाते है। उन्हें लगता है कि बाहर से आया चिकित्सक उन्हें फीस नहीं देगा) मैनें उन्हें सूचना दी कि मैं बेनोसाइड काफी दिनों से ट्रापिकल ईओसिनो फिलिया के लिये खा रहा हूँ। कहीं उसके कारण तो दर्द नहीं हो रहा है ? वे बोले बेनोसाइड से तो कोई नुकसान ही नहीं होता है। फिर उन्हें कुछ लगा तो उन्होनेें मिम्स में बेनोसाइड के बारे में पडा उसमें स्पष्ट लिखा था कि ये दबा “न्यूरोनल साइड एफेक्ट” कर सकती है। वे शर्मिन्दा तो हुये पर उन्होने मुझे हाम्योपेथी की दवाईयां दें दी। मैनें सोचा कि ये मेडिसिन में एम.डी. है तो होम्योपेथिक इलाज क्यों करते है। होम्योपेथी को एलोपेथिक चिकित्कों और गैर अनुभवी स्वयंभू चिकित्सको ने ने अधिक नुकसान पहंुचाया है।

(3) एक स्वयंभू चिकित्सक डा. राय ने मुझे एक वर्ष तक बहुत बेवकूफ बनाया। मैं उन्हें हर कन्सलटेशन पर बहुत कीमती उपहार दिया करता था। मैनें किसी का अहसान

नहीं लिया। लोगो में गलतफहमी पैदा कर दी गई है कि होम्योपेथी में लक्षण पहले बढ़ते है और होम्योपेथी बहुत धीरे प्रभाव डालती है। बस इसी का उन्होने बहुत फायदा उठाया। अंत में एक वर्ष पश्चात भी मुझे तिलभर भी फायदा नहीं हुआ तो मैनें उन्हें छोड़ दिया।

(4) एक और होम्योपेथिक डा. राय है पर वे स्नातक है। उनका इलाज भी मैनें एक माह लिया फिर छोड़ दिया।

(5) एक होम्योपेथी के एम.डी. चिकित्सक से मैनें दस दिन इलाज करवाया। पर लगातार दस्त लगने के बाद भी मुझमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मैनें उनका इलाज छोड़ दिया तो दस्त बंद हो गये।

स्पर्श चिकित्सा

ऐसे दो चिकित्सको से मैनें चिकित्सा करवाई। वे मेरे कपाल एवं दाहिने गाल पर बहुत धीरे धीरे हाथ फेरते थे फिर पूछते थे कि कुछ लाभ हुआ। पर मुझे कोई लाभ नहीं हुआ।

निष्कर्ष

आयुर्वेद एवं होम्योपेथी में इस बीमारी को ठीक करने की सम्भावनायें दिखती है। पर वे उनका प्रिसक्रिप्शन गुप्त रखते है।

मैं पिछले 14 वर्षो से टिग्रेटाल सी आर 200, गावपिन 100 मि.ग्रा. हर आठ घंटे में एवं काम्पोज 5 मि.ग्रा. ले रहा हूँ और जीवन ठीक ठाक चल रहा है। मात्र बादल बिजली, ठण्डी हवा, फूड प्रिजरवेटिव, चाकलेट, कोल्डड्रिंक्स, ए.सी. की हवा पंखे की हवा, फार्मेल्डीहाइड से पकाये फल मेरी तकलीफ बढ़ा देते है। मै. 73 वर्ष का हूँ। चश्मा लगाने में भी दर्द होता है। मुझे इतनी मात्रा में दवाइयां लेने में कुछ नुकसान नहीं दिखता है। लगता है ये दवाईयां मुझे आजीवन लेना पड़ेंगी। मैं उच्च रक्तचाप की भी गोलियां खा रहा हूं। जब मेरा रक्तचाप बढ़ता है तो मेरा दर्द धमकने लगता है।

कार्बामेजापिन से सोडियम एवं केल्सियम का स्तर कम हो जाता है अतः सुबह सुबह एक सोडाबाई कार्ब 250 मि.ग्रा. एवं एक ओस्टोकेल्सियम विद बी.12 गोली भी लेता हूँ। हाँ क्रोध आने पर भी दर्द बढ़ जाता है।

हो लड़का आंख मारे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

भारतीय फिल्म और दूरदर्शन संस्थान की वार्षिक परीक्षायें चल रही थी। एक प्रश्न पत्र फिल्मी गानों के बारे में था। क्योंकि कोई भी फिल्म बगैर गानों के पूरी नहीं होती, पूरी तो बगैर कमर मटकाये भी नहीं होती जिसमें नृत्य निर्देशक नृत्य कहते है। उसका एक अलग से प्रश्न पत्र होता है। प्रश्न आया था कि लड़का आंख मारे...................पर निबंध लिखो। सारे निबंधो का सार निम्नानुसार था:

(1) लड़के ने आंख इसलिये मारी होगी कि पहले इसी लड़की ने आंख मार कर निमंत्रण दिया होगा कि यह आंख मार परम्परा दोनो में पहले से चल रही होगी अतः लड़के ने स्वतः आंख नहीं मारी होगी बल्कि निमंत्रण का स्वीकार पूर्वक उत्तर दिया होगां

(2) यदि लड़के ने ही पहले आंख मारी थी तो लड़की ने भी आंख मार कर यह स्पष्ट संदेश दिया होगा कि भारत वर्ष की आज की लड़कियां लड़को के कंधा से कंधा मिलाकर चल रही है, वे लड़को के पीछे नहीं हैं बल्कि आगे निकल गई है।

(3) लड़की इसलिये भी चैराहे पर गा रही है कि आस पास यदि उसके भाई होंगे तो उसका गाना एक शिकायत होगी अन्यथा सहानुभूति। कवि को इसमें उच्च स्तर की काव्य रचना नहीं आती। उत्तम कवियों को जब साहित्यिक पत्रिकायें ही नकार चुकी हैं तो सभी स्थानों में केवल आंख मार कवि ही बचें है। वह समय अतीत हो गया जब फिल्मों में पी.एच.डी. उपाधिधारी कवि भी घटिया गाने लिखने की शर्त पर खपा लिये जाते थे। फिल्मों में अब उच्च शिक्षा एक अयोग्यता मानी जाती है।

(4) लड़की की शिकायत है कि लड़का आंख मारने से आगे नहीं बढ़ रहा। आंख मारना यह दर्शाता है कि उनमें अभी उतनी निकटता नहीं आई है, जिस को देखने दर्शक फिल्म देखने जाते है। यह गाना दर्शकों को एक संदेश है कि धैर्य रख कर बैठे रहो, आगे इससे भी उत्तम बहुत कुछ होना है। रेल गाड़ी अब प्लेटफार्म पर आ गई है। प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हो चुकी हैं। अब दर्शकों के पैसे वसूल होने ही वाले हैं।

(5) लड़की जूडो कराटे में प्रशिक्षित है। वह जानना चाहती है कि उसका प्रशिक्षण किस स्तर का है। अतः वह गाना गाकर लड़के को पिटने के लिये आमंत्रित करना चाह रही है। अगर वह लड़के से इतिहास या भौतिक शास्त्र का प्रश्न पूछेगी तो लड़का भाग जायेगा। अतः वह गाना गाकर उसे चुग्गा डाल रही है कि बच्चू जरा पास तो आ ! पहला मुक्का तेरी उसी आंख पर पड़ेगा, जिसे तू मार रहा है।

(6) वह कालेज भारत वर्ष में कहां है जहां लड़के एवं लड़कियां (विद्यार्थी एवं विद्यार्थिनियां) पढ़ते नहीं है, बस एक दूसरे को आंख मारते रहते है। कभी कभी कालेज की एक कक्षा दो मिनिट के लिये दिखा दी जाती है उसमें भी नायक एवं नायिका एक दूसरे को आंख मारते रहते है पीरियड खत्म होने का घंटा बज जाता है फिर सारे विद्यार्थी मैदान में एकत्रित हो जाते है। उनमें दो समूह बन जाते है एक अधेड़ विद्यार्थियों का जो हाथ में एक कापी लिये रहते है और एक विद्यार्थिनियों का वह भी कॉलेज का आभास देने के लिये। फिर यहां नृत्य निर्देशक का उत्तरदायित्व आ जाता है और दोनो समूह हो, लड़का आंख मारे, और हो लड़की आंख मारे का प्रश्नोत्तर कमर मटका कर करने लगते है।"

(6) कुछ धार्मिक सीरियल के विद्यार्थियों ने लिखा मारना एक हिंसा है और आंख मारना ऊपर की अश्लीलता। हमारा देश दोनो को सहन नहीं कर सकता। प्रेम की अभिव्यक्ति के अन्य भी तरीके पारम्परिक फिल्मों यथा हरिशचन्द्र तारामति, सम्पूर्ण रामायण इत्यादि में हैं। जो तात्पर्य केवल स्मित से निकल सकता है उसे आंख मारना जैसे सस्ते तरीके से क्यों किया जाये। लड़के ने आंख मार कर हमारी वैदिक परम्परा को तोड़ा है फिर गाना बगीचे में भी हो सकता था। भीड़ भरे इलाके में करने की क्या आवश्यकता थी ?

(7) एक अन्य उत्तर था कि प्रश्न अधूरा है। प्रश्न होना चाहिये था कि अंखियों से गोली मारे। इन बहादुर लड़के और लड़कियों को सीमा पर दुश्मन से लड़ने के लिये भेज देना चाहिये। इनकी आंख मार क्रिया से गोलियां निकलती हैं। इससे हमारा हथियारों का खर्च कम हो जायेगा और इस नई सेना पर प्रशिक्षण भी नहीं होगा। केवल एक मरणोपरांत पुष्कार निकालना पड़ेगा, आंख मार शहीदो की खेती कला में निपुणता के

लिये आंख मार श्री आंख मार भूषण आंख मार पद्मभूषण, एवं आंख मार रत्न जैसी उपाधियों का भी निर्माण करना होगा।

कैसी मुल्क परस्ती

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

लड़ाई दुश्मन से थी खुद में लड़ाई हो गई।
मुल्क के नारे लगे और हाथापाई हो गई।।
उठी लहरें समन्दर से मगर लहरों ने कहा।
समन्दर हम से है, फिर उससे बुराई हो गई।।
रब को मालूम है इबादत गाह क्यों आये हो तुम।
कौंम जो होठो पे थी दिल में पराई हो गई।।
मैं कदा ने जेब देखी और मैकश ने नशा।
मैकशों के नशे में दौलत पराई हो गई।।
आसमां में बदजुबानी गालियां बिखरी हैं, मां।

तेरी औलादों की कैसी रहनुमाई हो गई।।

बगीचे

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

खिजां की बगीचे में कोई मन मानी न रहे।
नाव पानी पे रहे नाव में पानी न रहे।।
अभी वालिद जो सुनाते है सुनले जी भर के।
क्या पता फिरउनके बाद कोई कहानी न रहे।।
शहर से गांव को पत्थर की बाढ़ आती है।
गांव डूबे तो फिर ये रात सुहानी न रहे।।
जंग तुम लड़ते रहो कि जंग न लग जाये तुम्हे।
क्यों नदी की बांध से आगे की रवानी न रहे।।
सपुर्दे खाक याद हमने तुम्हारी कर दी।
बेवफा बाद में फिर कोई निशानी न रहे।।

मौत का मौसम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

श्रावण के आने पर तो हम डर जाते हैं।
बाढ़ो में अपने कच्चे घर बह जाते हैं।।
तड़ित तड़कती बादल गर्जन करते हैं।
खड़े खुले में बेघर हम मर जाते हैं।।
घने अंधेरे में पानी से कंपते हैं।
डरते हैं कुनबे अपने बह जाते हैं।।
कौन बचेगा कौन बहेगा क्या मालूम।
कुछ बर्तन बहते है कुछ रह जाते हैं।।
रात कटेगी कैसी, सांप निकलते हैं।
बचे खुचे लोगों को वे डस जाते हैं।।
कैसे जायें अस्पताल बेवश हैं हम।
घुटने घुटने कीचड़ में धंस जाते है।।
फंसे हुये हम गंदा पानी पीते हैं।
दस्त और उल्टी से कुछ मर जाते हैं।।
कौन शहर के बीच हमें रहने देगा ।
गंदी बस्ती में नीचे बस जाते हैं।।
कब सर पे छत गिर जाये डर लगता हैं।
खटका जरा कहीं पर हो डर जाते हैं।।
सर गम जैसा सावन तुमको लगता हैं।

अपने सिर पर हर दम यम मंडराते हैं।।
डांस और कीड़े डंसते ही रहते हैं।
डेंगू और मलेरिया देकर जाते हैं।।
श्रावण में तो नदी समन्दर लगती हैं।
बहते पेड़ मौत जैसे टकराते हैं।।
पर जिजीविषा मृत्यु से टकराती हैं।
बचे हुये हम फिर जीने लग जाते हैं।।

हम मरे शह और मात में

डा. कौशल किशोर
श्रीवास्तव

सुबह शूली पर चढ़े और कब्र ओढ़ी रात में।
कटा जीवन बिसातों में मरे शह और मात में।।
तर्जुमा मेहनत का अपनी, उनके उनकी जामों में हुआ।
लुत्फ महलो को मिला हम बह गये बरसात में।।
खुद की खातिर कौम में वे नफरते भरते रहे।
वे पहाड़ो पर रहे, हम मर मिटे वे बात में।।
वे तो घोड़े पर चढ़े सज धज के ले आये दुल्हन।
थक गये हम बेवहज ही नाचते बारात में।।
फह रहे थे सामने वे झेल लेंगे तीर को।
घुस गये हम व्यूह में और मर गये आघीत में।।
कह रहे थे सामने वे झेल लेंगे तीर को।
तीर आया छिप गये हम मर गये आघात में।।

कोई तो बात सही हो जाये

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मेरी गलती से कोई तो बात सही हो जाये।
मैं मना जिसको करूं और बात वहीं हो जाये।।
किसी का मैं बुरा चाहूं तो कभी वैसा न हो।
किसी का मैं भला चाहूं खैर खुदा हो जाये
मनों में तूफान और कमरे में सब चुप बैठे रहें।
कम से कम छत तो गिरेए काश यहीं हो जाये।।
ऐसे आफिस भी मेरे इस मुल्क में हो जायें कि।
आज में दरख्वास्त दूं और काम कल ही हो जाये।।
हुनर एसे उल्टे हो ए दोस्त मेरे हाथ में।
पेड़ घर में लगें मेरे छांव कहीं हो जाये।।

ज्ञान बनाम प्रेम

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

मुझे ज्ञान ने भटकाया पर प्रेम किनारे ले आया।
जिसके हाथों बिका उसे मैं अपना सब कुछ दे आया।।
        तुम कहते हो ठगा गया मैं इस घाटे के सौदे में।
        मगर मुझे मालूम है मैं कौड़ी में सोना ले आया।।
ज्ञान एक तलवार तनी तो श्रद्धा एक समर्पण हैं।
इसी लिये श्रद्धा के दर पर मैं पोथी धरने आया।
        ज्ञानी की मंजिल के ऊपर प्रेमी के घर की फर्शी।
        शूली ऊपर सेज पिया की, मैं उससे मिलने आया।।
जहां ज्ञान की अंतिम सीमा प्रेम वहां से चलता है।
वीरानी बस्ती ज्ञानी की मूरख क्या करने आया ?
        छोड़ ज्ञान के शुष्क शहर को चलो प्रेम के गांव सखी।
        अंधकार मैं छोड़ ज्ञान की शमा प्रेम की ले आया।।

ये कैसा मौसम आया

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ये कैसा मौसम आया ?
सूखे गांव नगर सूखे।
सूखे मार्ग डगर सूखे।।
समृद्धि समृद्ध हुई।
भूखे लोग मरे भूखे।।
सूखी पेड़ो की छाया।
ये कैसा मौसम आया ?।

आसमान तक सिकुड़ रहा।
वह धरती पर बिगड़ रहा।।
हुई शिलाये तक कंकड।
कीचड लेकिन अकड़ रहा।।
नहीं भूख ने कुछ खाया।
ये कैसा मौसम आया ?।

अंगारे से रस रहे।
पुष्प ओस को तरस रहे।।
चुभतें हैं काटे तन में।
वाक्य नहीं अब सरस रहे।
हैं सिंहासन भरमाया।
ये कैसा मौसम आया ?।।

भीड़ रोंदती व्यक्ति को।
अभिमान है शक्ति को।।
शासन का मतलब विप्लव ।
ठोकर लगती भक्ति को।।
ठुमरी ने विप्लव गाया।
ये कैसा मौसम आया ?।

कहां गलत एक कदम पड़ा ।
क्यों श्रद्धा से ज्ञान लड़ा ?।
नहीं मूर्ति है मंदिर में।
पर मंदिर हो गया बड़ा।।

ब्रह्नान कहे खुद को माया।
ये कैसा मौसम आया ?।

भारत

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सुख समृद्धि शान्ति की एक इबारत है।
सत्य अहिंसा की जग में परिभाषा भारत है।
        सीमा पर सैनिक रक्षारत कृषक खेत में है।
        वैज्ञानिक मजदूरों को भी एक इबाबत है।।
नहीं आक्रमण करना तो कायरता नहीं हुई।
आक्रामक देशो से संधि एक शराफत है।।
        हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई मिल कर रहते हैं।
        सब धर्म समभावों की यह एक जमानत है।।
मेरे दिल में भारत है मेरा जीवन भारत।
मेरा जीवन इसे समर्पित एक अमनात है।।
        मानवता पर आधारित हैं भारत के रिश्ते।
        छोटे मुल्को की सहायता नहीं तिजारत है।।

सकुचि दीन्ह रघुनाथ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

सुन्दर कांड के दोहा क्रमांक 49 (ख) के अनुसार

जो संपति सिव रावनहिं दीन्हि दिये दस माथ
सोई संपदा विभीसन्हि सकुचि दीन्ह रघुनाथ।।

अब यहां प्रश्न उठता कि जब भगवान श्रीराम ने सुन्दर कांड तक लंका पर विजय ही प्राप्त नहीं की थी तब वह लंका भगवान विभीषण को कैसे दे सकते थे ?

अस कृपा सिव जगत प्रावनी।
देह सदा सिव मन भावनी।।
एवं मस्तु कह प्रभु रन धीरा।
मांगा तुरत सिंधु कर नीरा।।
जदपि सखा तब इच्छा नाहीं।
मोर दरस अमोघ जग माही।।
अस कहि राम तिलक लेहि सारा।
सुमन वृष्टि नभ भई अपारा।।
रावण क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचण्ड।
जरत विभीषणु राखेऊ दीन्हेहु राज अखण्ड।।
जो सम्पति सिव रावनहि दीन्ह दिये दस माथ।
सोई सम्पदा विभीषनहि सकुचि दीन्ह रघुनाथ।।

उपरोक्त पंक्तियों से विदित होता है कि हालांकि विभीषण व्यक्त रूप में भगवान की मात्र भक्ति मांग रहे थे पर अव्यक्त रूप में उनके मन में लंकाधिपति बनने की आकांक्षा थी। भगवान ने किस विश्वास के साथ विभीषण का राज तिलक कर दिया ? वह इसलिये कि भगवान में अदम्य आत्म विश्वास था। उसकी पहली परख महर्षि विश्वामित्र को हुई थी। इसीलिये ताड़का मारीचि एवं सुबाहु जैसे दुर्दम्य राक्षसों से लड़ने के लिये किशोर वय में ही भगवान राम एवं लक्ष्मण को महाराज दशरथ से मांग कर ले गये थे। इसी आत्म विश्वास के भरोसे राम दुर्गम वन में चैदह वर्ष तक जाने के लिये तैय्यार हो गये।

भगवान राम ने नीति निपुण भी थे। श्रीमदभागवत् गीता के दसवें अध्याय में भगवान ने कहा है कि नीति रश्मिजिगीषताम्। यानि कि विजय की इच्छा रखने वालों में मैं नीति हँू। यहाँ गुण विशेष रूप से तब उजागर होता है जब उन्होने बलि को छिप कर मारा था। उन्हें मालूम था कि जो व्यक्ति भी सामने से बालि से लड़ेगा उसका

आधा बल बालि में चला जायेगा अतः आत्म विश्वास एवं नीति निपुणता के बलबूत पर ही उन्होने सुग्रीव से वह दिया था कि वे बालि का वध कर देंगे एवं राज्य सुग्रीव को दे देंगे।

भगवान ने विभीषण का राज्य तिलक कर यह स्पष्ट कर दिया कि उन्हें लंका का राज्य नही चाहिये। वे रावण से लंका राज्य छीनने नहीं आये थे। वे मात्र सीता जी को मुक्त कराने आये थे। जिससे बगैर सीताजी के अयोध्या लौट कर उन्हें शर्मिन्दा न होना पड़े।

भगवान ने कमजोरों को ताकत देकर उनकी कमजोरी को अपनी ताकत बनाया फिर चाहे विश्वामित्र जीे हों या सुग्रीव हों या विभीषण। एक विद्‌वान ने मेरा ज्ञान वर्द्‌धन किया कि भगवान ने सुग्रीव का राजतिलक इसलिये किया कि वह उनसे विद्रोह न करे। पर ऐसा नहीं है। भगवान सुग्रीव के भरोसे रावणपर विजय प्राप्त करते नहीं आये थे। बल्कि सुग्रीव को ही डर था कि यदि भगवान ने उन्हें ठुकरा दिया तो रावण उन्हें मार डालेगा।

कहते हैं कि समुद्र में सारी नदियों का जल मिला रहता है जो पावन पवित्र माना जाता है इसलिए राजतिलक समुद्र के जल से ही किया जाता है।

घटनाओं पर आधारित रावण के चरित्र का विश्लेषण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

वर्ग विशेष रावण को अत्यंत विद्धान, अत्यन्त सहनशील, मृत्युजित एवं अनेक गुणों से विभूषित मानते है। उनके अनुसार भगवान राम ने उसका हनन अन्याय पूर्वक किया। मगर घटनायें इसके विपरीत ही कथन करती है। पहले हम उसके ऊपर आरोपित गुणों का विश्लेषण करेंगे तत्पश्चात घटनाओं के आधार पर उसके चरित्र की कमियों का विश्लेषण करेंगे।

रावण अत्यंत विद्धान था:-विद्या दो तरह की कही गई है। परा एवं अपरा। अपरा अर्थात अश्रेष्ठ। इसमें वेद, न्याय, दर्शन, मीमांसा, निरूक्त, ज्योतिष गणित एवं आयुर्वेद इत्यादि है। परा यानि श्रेष्ठ। यह वह एक ज्ञान है जिससे सब जाना जाता है। वह है यया तदधिगम्यते। वह जिससे जाना जाता है।

यदि प्राप्त शिक्षा को व्यौहार में न लाया जाये तो वह कचरा घर में मोती फेंकने जैसा है। इसके लिये जीसस क्राइस्ट ने चेतावनी दी है कि “डू नाट थो योर पल्र्स बिफोर स्वाइन्स” यानि अपने मोती सूअरों के सामने मत फेंको। मान लिया कि रावण को अपरा विद्या का ज्ञान था पर उसे परा विद्या का ज्ञान नहीं था इसी प्रकार के लोगो को कहा गया है कि मनुवरा रूपेण मृगारचन्ति। कथा है कि भगवान राम ने श्री लक्ष्मण को रावण की मृत्यु शय्या पर उससे उपदेश प्राप्त करने के लिये भेजा था। तब श्री लक्ष्मण रावण के सिराहने पहंुचे और उपदेश देने की प्रार्थना की इस पर रावण ने श्री लक्ष्मण से कहा की शिक्षा ग्रहण करने वालों को पैरो के पास बैठना चाहिये।

यहां प्रश्न उठता है कि क्या श्री लक्ष्मण विद्धान नहीं थे। फिर रावण उनके बाजू में बैठने के लिये भी कह सकता था। लक्ष्मण जी को पैरो के पास बिठलाना उसके अदम्य अहंकार का परिचायक है।

रावण सहनशील था - हालांकि भगवान राम ने सूर्पनखा के नाक और कान काट दिये थे पर रावण ने माता सीता के साथ बलात् उनकी इच्छा के विरूद्ध शरीर का स्पर्श तक नहीं किया। इस तरह रावण भगवान राम की अपेक्षा महिलाओं का अधिक आदर करता था। पर ऐसा नहीं है। रावण ने रंभा का बलात् शील भंग किया था। अतः उसे रंभा ने श्राप दिया था कि यदि वह किसी स्त्री का स्पर्श उसकी इच्छा के विरूद्ध करेगा तो उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। दूसरा बिंदु यह है कि सूर्पनखा भगवान राम के निकट कामासक्त होकर रह गई थी। वह भी धोखा देकर रूप परविर्तन करके। जबकि

सीता का रावण ने धोखा देकर चोरी से अपहरण किया था। सीता जी का उनकी इच्छा के विरूद्ध अपहरण किया था। इसके पश्चात भी वह सीताजी को डरा धमका कर एवं प्रलोभन देकर समर्पण के लिये विवश करता रहा।

रावण मृत्युजित था-जब रावण की यमराज जी से युद्ध हो रहा था जब यमराज की बराबर उसे टक्कर दे रहे थे। मृत्यु को केवल ब्रह्नण ही जीत सकते है एक दम्भी, कामी, क्रोधी नहीं जीत सकते। चंूकि उसे ब्रह्नना ने वर दिया था अतः वह मृत्यु से निवेदन करने आये थे कि मृत्यु अन्तर्धान हो जाये। उनके अन्तर्धान होने पर रावण ने मान लिया कि उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है। वह बहादुर होता तो मृत्यु को पुनः खोजता फिर उन्हें हराता।

क्या रावण ब्राह्मण था - रावण वियावा का पुत्र था। इस आधार पर उसे ब्राह्नाण माना जाता है। ब्रह्नना ने मनुष्यों में एक ही वर्ण बना था वह ब्राह्नण था। बाद में ब्राह्नणों से क्षत्रिय उत्पन्न हुये तब भी उनमें आपस में वैवाहिक संबंध होते थे। जैसे भगवान परशुराम की माता क्षत्रिय थी। बाद में वैश्य और शूद्र हुये। मूलतः सभी वर्ग ब्राह्नाण हैं। अतः सनातन धर्मियों को आपस में नफरत नहीं करना चाहिये और आपस में अन्तर्जातीय विवाह करने में हिचक होना भी नहीं चाहिये। हर्ष का विषय है कि ऐसा होने भी लगा है। यह भारत की स्वतंत्रता को अक्षुघ्ण बनाये रखने में भी सहायक होगा। अब हम रावण की कमजोरियों की तरफ ध्यान दें।

(1) वह वीर नहीं था-सहस्त्रार्जुन और बालि से तो वह हारा ही था। उसमें यदि साहस होता तो वह सीता जी का अपहरण भगवान राम से युद्ध करके करता।

(2) वह धोखेबाज था - उसने सीता जी का अपहरण मारीचि को स्वर्ण मृग के रूप में विवश करके माया की रचना की और धोखा देकर सीताजी का अपहरण किया।

वह चोर था-उसने सीता जी की चोरी करके सिद्ध किया कि उसकी मूल भावना चोरी की ही थी।

(3) वह लम्पट था - रम्भा एवं सीताजी तो ऐसे उदाहरण हैं ही कि वह लम्पट था।

(4) वह अत्यन्त क्रोधी था - उसने मारीच को मृत्यु डर बतला कर उसे कनक मृग बनने के लिये विवश किया। उसने उसके भाई को लात मार कर निष्कर्षित किया था। ऐसा ही व्यौहार उसका अन्य मंत्रियों के साथ भी रहा।

(5) वह अविवेकी था- जिस व्यक्ति ने स्वयं की वासना एवं हठ से पूरे कुल का नाश करवा दियाा उसे विवेकी कैसे कह सकते है ?

(6) रावण झपट मार था-रावण ने स्वयं कोई निर्माण कार्य नहीं किया। त्रिकूट पर्वत पर स्वर्ण लंका का निर्माण उसके भाई कुबेर ने किया था। (कुबेर को कोई ब्राह्नाण नहीं

कहता) और पुष्पक विमान भी कुबेर का था। रावण ने कुबेर पर आक्रमण किया और दोनो छीन लिये। उसने स्वयं कोई निर्माण नहीं कराया।

(7) रावण अहसान फरामोश था-रावण ने भगवान शंकर से भी वरदान प्राप्त किये थे फिर उन्हीं के निवास स्थान को उखाड़ने चला गया था।

(8) वह बड़बोला और दम्भी था- ये उदाहरण रामायण एवं रामचरित मानस में भरे पड़े है। उसके अविवेक एवं दम्भ ने राक्षस कुल का नाश करवा दिया। उसका शासन मात्र उस छोटे से द्वीप पर ही सीमित रहा। दक्षिण भारत में तो किरिकिंधा नरेश बालि का शासन ही चलता था। जिनसे रावण बहुत डरता था। हां यदाकदा राक्षस लूटपाट कर चले जाते थे।

अन्त में-जो वर्ग विशेष उसे विवेकी एवं विद्धान मान कर उसकी आराधना करते हैं उन्हें यह ध्यान रखना चाहिये कि रावण एक विदेशी था बिल्कुल बिन लादेन की तरह। वह आतताई था। वह ब्राह्नाण भी नही था। हमारी ऐसी ही विदेशी आतताइयों और आक्रमणकारियों की प्रशंसा करते रहने की आदत ने हमें गुलाम बना कर रखा। भारतवासियों को यह ज्ञात होना चाहिये कि स्वयं रावण के देश में भी उसका एक भी स्मारक या मंदिर नहीं है। भगवान राम का तो होना ही नहीं था।

वहां कुछ शिव मंदिर अवश्य हैं पर उनके आगे भी बौद्ध स्तूप इस तरह से बना दिये गये हैं कि भगवान शंकर के मंदिर पूर्ण रूप से छिप गये है। कहीं कहीं कुछ संदेहास्पद स्थानों को अवश्य भारत के यात्रियों को आकर्षित करने के लिये विदेशी मुद्रा कमाने हेतु विकसित किया जा रहा है।

निकल

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

ना और हां के बीच से निकल।
घर की तू दहलीज से निकल।।

डर ने एक ताबीज बांध दी।
खोल और ताबीज से निकल।।
कितनी भी जमीन मोटी हो।
जमीं फोड़ बीज से निकल।।
तू जमीन पर एक आसमां।
ख्याले तू नाचीज से निकल।।
दुनिया की हर शै से तू मिल जा।
मिल कर तू हर चीज से निकल।।

शब्दार्थ

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

अर्थ को भी शब्द से कुछ अलग हटना चाहिये।
मंजिलों से भी कभी थोड़ा भटकना चाहिये।।
अर्थ दिल में ठिकाना शब्द यायावर हुये
अर्थ का भी घर अलग शब्दों से बनना चाहिये।
साथ रहते है कभी, तो वे कभी लड़ने लगें।
शब्द के भी कई अलग मतलब निकलना चाहिये।
अर्थ धोखेबाज हैं निकले तो अपने न रहे।

शब्द दोधारी संभल कर उन पे चलना चाहिये।।
शब्द गाली है प्रशंसा शब्द है और व्यंग्य भी।
ब्रहना भी है उन का आदर हमें करना चाहिये।।
ग्रंथि है शब्दार्थ चित जड़ की तरह शाश्वत हैं वे।
शब्द ईश्वर अर्थ हम, शब्दार्थ मिलना चाहिये।।

दोनों तीर हैं

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

गजल मालूम ही नहीं पर मीर है।
पीर कैसे हैं कि वे बे-पीर हैं।।
कल की तो तकदीर खुद मालूम नहीं।
आज वे आवाम की तकदीर हैं।।
गढ़ा सोना जमीं में, परदे में वे।
म्यान में वे फूल और शम्शीर हैं।।
कैसे हम आजाद पंछी सा उड़े ?
घर हैं, पंजो में बंधी जंजीर है,
जिंदगी, सहिल भंवर के बीच में।
जिन्दगी के लिये दोनो तीर हैं।।